CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द. नं. १६८०४
16804

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri

९८ ६.नं. ९६८०४

॥ अथ पूजापङ्कजभास्करप्रारंभः ॥

मूल्य ३०/-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

# ॥ अथास्य ग्रन्थस्य शुद्धाशुद्धपत्रम् ॥

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठ | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| पूजायाश्चतुर्णाम् | पूजायाञ्चतुर्णाम् | ५ | १ | ४ |
| पूजाकर्य्यैत्यर्थः | पूजाकार्य्यैत्यर्थः | ६ | १ | १ |
| दिङ्छेद्धन | दिङ्छेद्धन | ६ | २ | ४ |
| त्र्यम्वकेण | त्र्यम्बकेन | ८ | १ | ४ |
| मध्यान्ह | मध्याह्न | ९ | १ | २ |
| एवमग्रेपि मध्याह्नपूर्वाह्णपराह्ण शब्देषु पञ्चमात्पूर्वोहकारोज्ञेयः | | | | |
| प्रसाधनत्वां | प्रसाधनंत्वा | ९ | १ | ३ |
| मञ्जनम् | मञ्जनम् | ९ | १ | ४ |
| मासुरींत्वेला | मासुरीत्वेँ ला. | १० | १ | १ |
| व्यन्हः | व्यह्नः | १० | २ | २ |
| मात्रंत्रिवक्षितं | मात्रत्रिँवक्षितं | १० | २ | ४ |
| कृतछन्दोगान्हिकं | कृतछन्दोगाह्निकम् | १० | २ | ६ |
| एवमन्यत्रापिहकारात्परोनकारोज्ञेयः | | | | |
| सूचितवान् | सूचितवन्तः | ११ | १ | ३ |

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| यज्ञोत्तरङ्कार्य्यम् .. | यज्ञोत्तरव्वाँकार्य्यम्. | ११ | १ | ३ |
| द्विविधस्मृतेः .. .. | द्विविधस्मृतेरितिदाक्षिणात्याः .. .. | ११ | १ | ५ |
| यज्ञानन्तरंव्वा . .. | यज्ञानन्तरव्वाँ. .. | ११ | २ | ४ |
| अन्तच्चेष्टे .. .. | अन्तेचेष्ट .. .. | १२ | १ | ६ |
| पूज्योन्तेच .. .. | पूज्योह्यन्तेच .. .. | १३ | १ | ६ |
| ब्राह्मण .. .. .. | ब्रह्माण. .. .. | १३ | २ | १ |
| वितस्तिप्रमिता. .. | वितस्तिपर्यन्तप्रमिता. | १४ | १ | ७ |
| सप्ताङ्गुलि .. .. | सप्ताङ्गुल .. .. | १४ | १ | ७ |
| पूजात्रिरुद्धा .. .. | पूजाऽत्रिरुद्धा .. .. | १५ | २ | १ |
| योगिनाव्वाँह्य. .. | योगिनाम्बाह्य .. .. | १६ | १ | ७ |
| यस्मत्तस्मात् .. .. | यस्मात्तस्मात् .. .. | १६ | २ | ४ |
| मूर्खाणांय्युक्त. .. | मूर्खाणाय्युँक्त. .. | १६ | २ | ५ |
| परीमाणान्न .. .. | परीमाणन्न .. .. | १७ | १ | २ |
| मानंय्यत् .. .. | मानय्यँत् .. .. | १७ | १ | ५ |
| लिङ्गंय्यथाक्त. .. | लिङ्गय्यँथाक्त. .. | १७ | १ | ५ |
| इछते .. .. .. | इच्छते .. .. .. | १७ | १ | ७ |
| आकाशेचा .. .. | आकाशेच्च .. .. | १७ | २ | ७ |
| ततद्देवता .. .. | तत्तद्देवता .. .. | १९ | २ | ७ |
| दारवेणातु .. .. | दारत्रेणतु .. .. | २० | १ | ४ |
| पद्मपात्राभ्याम्. .. | पद्मपत्राभ्याम्. .. | २० | १ | ६ |
| पुण्डरिका .. .. | पुण्डरीका .. .. | २१ | २ | ४ |
| यथालभम् .. .. | यथालाभम् .. .. | २१ | २ | ५ |
| पद्य .. .. .. | पाद्य .. .. .. | २३ | १ | ४ |



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रेणाप्रीत्यर्थ | मात्रेणापीत्यर्थ. | २४ | १ | ७ | व्रह्माङ्गलग्नंव्वि | व्रह्माङ्गलग्नव्विँ | २७ | २ | १ |
| सँय्युतम् | सय्युँतम् | २४ | २ | ५ | जीर्ण | जीर्णम् | २७ | २ | ५ |
| फालवाँख्र | फालव्वाँख्र | २४ | २ | ७ | मन्यद्धृतम् | मन्यधृतम् | २७ | २ | ५ |
| मनुत्तम् | मनुत्तमम् | २५ | १ | २ | उपवीतम् | आभरणम्मणिस्वर्णा | | | |
| दधिदूर्व्वाङ्कुशैः | दधिदूर्व्वाकुशैः | २५ | १ | ७ | | दिनिर्म्मितंषोडशोप | | | |
| तस्यदेयानि | तस्यैदेयानि | २६ | २ | १ | | चारान्तरे उपवीतम्. | २७ | २ | ६ |
| दातव्यंय्येन | दातव्यय्येँन | २६ | २ | २ | सर्व्वदेवानाव्विहितानि | सर्व्वदेवानाव्विँहितानि | २८ | २ | ४ |
| विंशपलल्लिङ्गे | विंशपलल्लिँङ्गे | २६ | २ | ५ | प्रोक्षाणात् | प्रोक्षणात् | २९ | १ | ४ |
| ततःपरः | ततःपरम् | २६ | २ | ६ | गृहस्थिते | गृहस्थितेषु | २९ | १ | ६ |
| जटामास्या | जटामांस्या | २७ | १ | १ | उत्तरणीयम् | उत्तारणीयम् | २९ | १ | ७ |
| नरसिंव्ह | नरसिंह | २७ | १ | ५ | जात्याप्रहरेण | जात्याःप्रहरेण | २९ | २ | १ |
| यवगोधूमजैश्चैर्णै. | यवगोधूमजैश्चूर्णै | २७ | १ | ५ | सलिलम् | मलिनम् | २९ | २ | २ |

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| गृण्हीयात् | गृह्लीयात् एवमन्यत्रापि हकाराधो णकारो ज्ञेयः | २९ | २ | ४ |
| वकुलंम्विना | वकुलव्विँना | २९ | २ | ४ |
| कल्हार | कह्लारएवमन्यत्रापि हकाराधोलकारोज्ञेयः | २९ | २ | ५ |
| उपचराँस्तथा. | उपचाराँस्तथा. | ३१ | २ | २ |
| नेत्राल्हादकरः | नेत्राह्लादकरः. | ३१ | २ | ४ |
| लिकुचादिक | लकुचादिक | ३३ | १ | ३ |
| कदलि. | कदली | ३३ | १ | ६ |
| किल्बिषी. | किल्विषी | ३३ | २ | ६ |
| निःक्षिप्रेत्. | निःक्षिपेत | ३४ | २ | ६ |
| हस्ताभ्यङ्गेषु. | हस्ताद्यङ्गेषु. | ३५ | १ | २ |
| दान | दानम् | ३५ | १ | ३ |
| पञ्चोपचाराः | पञ्चोपचारा. | ३५ | १ | ६ |
| वस्त्रात्प्रगिवेति. | वस्त्रात्पागिवेति. | ३६ | १ | ४ |
| धुपनैवेद्यादीनि | धूपदीपनैवेद्यादीनि | ३६ | १ | ५ |
| अवश्यन्देयानि | अवश्यदेयानि. | ३६ | २ | २ |
| रक्तचन्द | रक्तचन्दन | ३६ | २ | ७ |
| कत्तर्व्यम् | कर्त्तव्यम् | ३७ | १ | ७ |
| सुवाटिका | स्ववाटिका | ३७ | २ | ७ |
| मूमिस्पृटा | भूमिस्पृष्टा | ३९ | १ | २ |
| निर्व्वापनीयः. | निर्व्वापणीयः. | ४० | १ | १ |
| अपक्रमग्निपक्वत्वाँ | अपक्वत्वमग्निपक्वत्वव्वाँ | ४० | १. | ५ |



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

| अशुद्धं | शुद्ध | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| जपेहामे .. .. | जपेहोमे .. .. | ४१ | १ | ३ |
| प्रकरस्थ .. .. | प्रकरणस्थ .. .. | ४१ | १ | ५ |
| सोमक्रेतव्य .. .. | सोमःक्रेतव्य .. .. | ४२ | १ | ६ |
| इत्यधिकारण .. | इत्यधिकरण. .. | ४२ | १ | ६ |
| गाक्रेतिसामेस्यत्रौदृष्ट | गोक्रीतसोमस्यैवादृष्ट. | ४२ | १ | ७ |
| चोपचाराः दक्षिण .. | चोपचारादक्षिण .. | ४२ | २ | ७ |
| धर्म्मतदलाभे .. | धर्म्मस्तदलाभे. .. | ४३ | १ | ६ |
| सस्मृतसम्भार .. | सम्भृतसम्भारः .. | ४४ | २ | ४ |
| सायान्नशासु .. | सायन्निशासु .. .. | ४४ | २ | ७ |
| निरञ्जनं .. .. | निरञ्जनम् .. .. | ४६ | १ | ५ |
| वदति .. .. .. | वदन्ति. .. .. | ४६ | २ | १ |
| दीका .. .. .. | दीपिका .. .. | ४७ | १ | २ |

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| वन्ध्या .. .. .. | बन्ध्या .. .. | ४८ | १ | १ |
| मक्षिका .... .. | भक्षिका .. .. | ४८ | १ | १ |
| धरिण्याम् .. .. | धरण्याम् .. .. | ४९ | १ | ५ |
| कुर्वन्ति .. .. .. | कुर्वीत .. .. .. | ४९ | २ | २ |
| गवाँलक्षम् .. .. | गवाल्लँक्षम् .. .. | ४९ | २ | ५ |
| चोलकछन्न .. .. | चोलकच्छन्न .. .. | ५० | १ | ६ |
| महा ॰ असि .. .. | महा २॥ऽ असि .. | ५० | २ | ३ |
| म्मूर्र्ध्नि .. .. .. | म्मूर्द्ध्नि .. .. .. | ५० | २ | ६ |
| मंन्दिर. .. .. | मन्दिरे .. .. .. | ५० | २ | ७ |
| एवह्यर्घौ .. .. | एषह्यर्घौ. .. .. | ५१ | १ | १ |
| शिल्हक .. .. | शिह्लक एवंसर्व्वत्रह काराधःमदेशेलकारः | ५१ | १ | ५ |

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| काशा | काश | ५१ | १ | ६ |
| कुरण्टक | कुरुण्टक | ५१ | १ | ७ |
| जातीजवा | जवाजाती | ५१ | १ | ७ |
| बर्व्वर | वर्व्वर | ५१ | २ | ३ |
| पष्पाणाम् | पुष्पाणाम् | ५२ | १ | ४ |
| भ्रभरिका | भ्रमरिका | ५३ | २ | ५ |
| भल्लकं | भुल्लकं | ५३ | २ | ७ |
| इदम्मानीयं | इदंस्नानीयम् | ५४ | २ | ३ |
| रक्तचंन्दनं | रक्तचन्दनं | ५४ | २ | ३ |
| पृथग्दद्यात् | पृथक्पृथग्दद्यात् | ५५ | १ | २ |
| वामोर्ध | वामोर्द्ध | ५५ | २ | ५ |
| बिल्वपत्र | विल्वपत्रएवंसर्व्वत्रा न्तस्थवकारोज्ञेयः | ५६ | २ | ३ |
| होतारंव्विश्व. | होतारव्विँश्व | ५६ | २ | ७ |
| देवा २आसा | देवाँ२॥ऽआसा | ५७ | १ | २ |
| वक्र | वक्र | ५८ | २ | १ |
| दुरितात्यग्निः. | दुरिताच्यग्निः | ५८ | २ | ३ |
| इमँस्तोम | इमंस्तोम | ५८ | २ | ३ |
| भद्राहीन्नः | भद्राहिनः | ५८ | २ | ४ |
| वासिनींइति | वासिनीमिति | ५८ | २ | ५ |
| जातीजवा | जवाजाती | ५९ | १ | ५ |
| धुत्तूर | धत्तूरएवंसर्व्वत्रधत्तू रोज्ञेयः | ५९ | १ | ५ |
| द्रोणा | द्रोण | ५९ | १ | ५ |

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| ठवन्धुक | वन्धूक | ५९ | १ | ६ |
| नांव्विहितानि | नाँव्विहितानि | ५९ | २ | ५ |
| दिवसल्लिङ्गे | दिवसल्लिँङ्गे | ६० | २ | ६ |
| स्याटिकम् | स्फाटिकम् | ६१ | १ | ७ |
| प्रकणे | प्रकरणे | ६२ | १ | २ |
| पमंल्लिङ्गं | पमल्लिँङ्गं | ६२ | १ | ५ |
| साध्वित्यर्थः | साध्वीत्यर्थः | ६२ | २ | १ |
| दङ्नुखेन | दङ्मुखेन | ६२ | २ | ६ |
| त्रिपुण्डेन | त्रिपुण्ड्रेण | ६३ | १ | ५ |
| मृत्युन | मृत्युर्न्न | ६३ | २ | ३ |
| फलंव्वक्तुं | फलव्वँक्तुं | ६३ | २ | ४ |
| तिमिनिंदा | मितिनिन्दा | ६३ | २ | ५ |
| वाण | वारण | ६३ | २ | ७ |
| लंव | लम्ब | ६४ | १ | ३ |
| त्र्यम्वकँय्यजामहे | त्र्यम्बकय्यँजामहे | ६४ | २ | ३ |
| कस्तुरी | कस्तूरी | ६४ | २ | ६ |
| कराट | करहाट | ६५ | १ | १ |
| बकुल | वकुलएवंसर्व्वत्रान्तस्थवकारोज्ञेयः | ६५ | १ | ५ |
| विहि | विहित | ६६ | १ | २ |
| दधिन्थ | दधित्थ | ६६ | १ | ६ |
| तैलनिषिद्धम् | तैलन्निषिद्धम् | ६६ | २ | १ |
| नेवेद्यम् | नैवेद्यम् | ६६ | २ | १ |
| त्रण्डादि | त्रण्डाधि | ६७ | २ | ४ |

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| भक्षत्वे | भक्ष्यत्वे | ६७ | २ | ५ |
| नैवैद्यम्. | नैवेद्यम् | ६७ | २ | ६ |
| भक्षत्व. | भक्ष्यत्व | ६७ | २ | ७ |
| स्वार्गावन्ध्यम्. | स्वर्ग्गिवन्ध्यम्. | ६९ | १ | २ |
| स्वकँल्लोक | स्वकल्लोँक | ६९ | १ | ६ |
| कारणात् | कारणम् | ६९ | २ | १ |
| गृण्हामि | गृह्णामिएवंहकाराधो देशेणकारोज्ञेयोऽत्र पदेसर्व्वत्र | ६९ | २ | २ |
| स्थंण्डिले | स्थण्डिले | ६९ | २ | ४ |
| र्च्चनं | र्च्चने | ६९ | २ | ७ |
| मणिमंयी. | मणिमयी | ७० | २ | २ |
| वेधा | वेद्या | ७१ | १ | ३ |
| श्पत्रो | श्पत्रे | ७१ | १ | ७ |
| कुशाग्रणि | कुशाग्राणि | ७१ | २ | २ |
| अर्घ्यातिरिक्त | अर्घातिरिक्त | ७१ | २ | ४ |
| तल्क्षाणा | तत्क्षणा | ७२ | १ | १ |
| प्रल्हाद् | प्रह्लाद | ७२ | १ | २ |
| घण्टांव्वै | घण्टाव्वैँ | ७२ | १ | ५ |
| घण्टां | घण्टा | ७२ | २ | १ |
| नित्यंचन्दन | नित्यचन्दन | ७२ | २ | ६ |
| भवति | भवन्ति | ७३ | १ | ३ |
| प्रमागिकः | प्रामाणिकः | ७३ | १ | ६ |
| करुवक. | कुरुवक | ७४ | १ | ४ |

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| दीपंय्यो | दीपय्योँ | ७६ | १ | ३ |
| वदर | वदर | ७६ | २ | १ |
| कुलित्थाः | कुलत्थाः | ७६ | २ | ३ |
| सस्य | शस्य | ७६ | २ | ६ |
| कुलित्थाः | कुलत्थाः | ७६ | २ | ६ |
| परकीय्य | परकीय | ७७ | २ | ७ |
| वाय्यञ्च | व्वाँय्यञ्च | ७८ | १ | ३ |
| मूर्धनि | मूर्द्धनि | ७९ | १ | १ |
| व्यय | व्ययम् | ७९ | १ | १ |
| उद्देश्य | उद्दिश्य | ७९ | १ | ४ |
| हिरण्मवय | हिरण्मयव | ८१ | १ | १ |
| लक्षक | लक्षकम् | ८१ | १ | २ |
| ञ्चपमी | पञ्चमी | ८३ | १ | १ |
| सर्व्वंय्यच | सर्व्वय्यँच्च | ८३ | २ | ४ |
| जदन्ये | यदन्ये | ८३ | २ | ४ |
| पशुॅ | पशूँ | ८४ | १ | २ |
| लोकॉअ | लोकाँ२॥ऽअ. | ८४ | २ | ६ |
| विष्णो | भगवन्विष्णो | ८५ | १ | ४ |
| जलंव्वा | जलव्वाँ | ८५ | १ | ६ |
| हितंव्वदे | हितव्वँदे | ८५ | २ | १ |
| विदु | विन्दु | ८६ | १ | ५ |
| वचानात् | वचनात् | ८७ | १ | ६ |
| प्रदक्षिणंय्ये | प्रदक्षिणय्येँ | ८७ | २ | १ |
| नीराजमं | नीराजनं | ८७ | २ | ७ |

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| व्वँजेत् .. .. | .. व्व्रँजेत् .. .. | .. ८८ | १ | ५ |
| दवेस्य .. .. | .. देवस्य .. .. | .. ८८ | २ | १ |
| पुरुषस्यते .. | .. पुरुषस्यतु .. | .. ८८ | २ | १ |
| सँयोगो .. .. | .. सय्योँगो .. | .. ८८ | २ | ३ |
| सदुस्त्यज .. | .. सुदुस्त्यज .. | .. ८८ | २ | ६ |
| सहस्रंय्य .. | .. सहस्रय्यँ .. | .. ८९ | २ | १ |
| शालिग्राम .. | .. शालग्राम .. | .. ८९ | २ | ३ |
| मुर्भ्रा .. .. | .. मुर्द्धा .. .. | .. ८९ | २ | ७ |
| धायेत् .. .. | .. धारयेत् .. | .. ९० | १ | २ |
| सुद्धारेत् .. .. | .. सुद्धरेत् .. .. | .. ९० | २ | ३ |
| परकीयेनाशुन्चिना .. | परकीयेणाशुचिना .. | ९२ | १ | १ |
| गृण्हन्ती .. | .. गृह्लन्तीएवं हकाराधो | | | |

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| | देशेणकारोवोध्योत्र पदेसर्वत्र .. | .. ९३ | २ | १ |
| पूजाद्वार .. | .. पूजागृहद्वार .. | .. ९३ | २ | ४ |
| वासान्यतमै .. | .. वासान्यतमेन | .. ९४ | १ | ५ |
| बिम्ब .. .. | .. विम्बएवंसर्व्वत्रान्त स्थ वकारोज्ञेयः .. | .. ९४ | १ | ५ |
| वामेक्षेत्र .. | .. ॲाँवामेक्षेत्र .. | .. ९५ | २ | ३ |
| नैऋर्त्या .. .. | .. नैऋर्त्या .. .. | .. ९६ | २ | ६ |
| दुर्व्वाङ्करा .. | .. दुर्व्वाङ्कुरा .. | .. ९७ | १ | ३ |
| सम्पूज्यपठेत्. | .. सम्पूज्य .. | .. ९७ | १ | ७ |
| त्वंव्विष्णुना .. | .. त्व व्विँष्णुना .. | .. ९७ | २ | २ |
| देहलींव्विलंघ्य | .. देहलीव्विँलङ्घ्य | .. ९७ | २ | ७ |



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| कम्बलोत्तरंव्वि | कम्बलोत्तरव्विँ. | ९८ | १ | ५ |
| वेदिकायांव्विन्यस्य | वेदिकायाव्विँन्यस्य. | ९८ | १ | ५ |
| स्वदशिणे | स्वदक्षिणे | ९८ | १ | ७ |
| परात्पर | परापर | ९८ | २ | ३ |
| ऊर्ध्वोर्ध्व | ऊर्द्धोर्द्ध | ९८ | २ | ५ |
| रक्षांविधाय | रक्षा व्विँधाय | ९९ | १ | १ |
| विस | विश | ९९ | १ | ४ |
| निभांव्विद्यु | निभाव्विँद्यु | ९९ | १ | ४ |
| हताख्य | हताख्यानि | ९९ | १ | ५ |
| संयोज्य | सय्योँज्य एवंसर्व्वत्र परसवर्णसहितोज्ञेयः | ९९ | १ | ७ |
| बिन्दु | विन्दु | ९९ | २ | ४ |

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| वर्णव्वायु | वर्णव्वाँयु | ९९ | २ | ५ |
| पुरुषंव्विचिन्त्य | पुरुषव्विँचिन्त्य | १०० | १ | ७ |
| नसा | नासा | १०१ | २ | २ |
| व्विचिन्त्य | व्विँचिन्त्य | १०१ | २ | ४ |
| वह्निमयीं | वर्णमयीं | १०१ | २ | ७ |
| मूलाधरो | मूलाधारो | १०२ | २ | ५ |
| वय्वग्नि | वाय्वग्नि | १०३ | १ | ५ |
| बिन्दून् | विन्दून्एवंसन्र्वत्रान्तस्थवकारोज्ञेयः | १०५ | १ | ६ |
| वकारादि | बकारादि | १०५ | २ | १ |
| ध्यानन् | ध्यानम् | १०५ | २ | ४ |
| सुधाद्य | सुधाढ्य | १०५ | २ | ५ |

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुण्डमातंत्र .. .. | मुण्डमालातन्त्रम् .. | १०६ | २ | २ | हसोः .. .. .. | ह्सौः .. .. .. | ११३ | २ | १ |
| ठकारान् .. .. | ठकारान्तान् .. .. | १०७ | १ | २ | ध्यातंमिति .. .. | ध्यानमिति .. .. | ११४ | १ | ४ |
| मूलमन्त्रस्यस्य .. | मूलमन्त्रस्य .. .. | १०७ | २ | २ | सगणम् .. .. | सगुणम् .. .. .. | ११४ | १ | ६ |
| तत्रऋष्यादि .. .. | ततऋष्यादि .. .. | १०८ | २ | ५ | सुभनोहरम् .. .. | सुमनोहरम् .. .. | ११४ | २ | २ |
| सङ्गमंव्विभाव्य .. | सङ्गमव्विँभाव्य .. | १०९ | १ | ४ | देवतायाः .. .. | देवताया .. .. | ११५ | १ | २ |
| कर्त्तव्यंयदि .. | कर्त्तव्यय्यँदि. .. | ११० | १ | १ | प्राणान्प्रतिष्ठापयेत् .. | ००० .. .. .. | ११५ | १ | ४ |
| मेतदर्घ .. .. .. | मेतदर्घ्य .. .. | ११० | २ | २ | न्तिष्ठंतु .. .. | न्तिष्ठन्तु .. .. | ११५ | १ | ४ |
| हमिति .. .. .. | हूमिति .. .. .. | १११ | १ | ५ | शालि .. .. .. | शाल .. .. .. | ११५ | १ | ५ |
| नयन्नयन .. .. | नयन .. .. .. | १११ | १ | ५ | देवतायाः .. .. | देवतां .. .. .. | ११५ | २ | ३ |
| सङ्कलीकृत्य .. | सकलीकृत्य .. .. | १११ | २ | १ | मितीरितम् .. .. | मीरितम् .. .. | ११६ | १ | ३ |
| सस्थाप्य .. .. | संस्थाप्य .. .. | १११ | २ | ७ | आचमनीयं अमुक .. | आचमनीयममुक .. | ११७ | १ | ४ |
| ज्ञानंव्वैराग्य .. | ज्ञानव्वैँराग्य .. .. | ११२ | १ | ५ | पीतं .. .. .. | पीते .. .. .. | ११७ | २ | ३ |



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| सितं | सिते | ११७ | २ | ३ |
| घटम्संस्था | घटंसंस्था | ११८ | १ | ६ |
| मन्त्रेणमातः | मन्त्रमातः | ११८ | २ | ४ |
| ध्यममा | मध्यमा | १२० | १ | ३ |
| निर्व्वाणजपः | निर्व्वाणजपम् | १२१ | १ | ४ |
| विभावना | विभावनाम् | १२१ | १ | ५ |
| जिव्हाशोधनन् | जिह्वाशोधनम् | १२१ | १ | ६ |
| शौचभङ्गं | शौचभङ्गन्वकृत्वा | १२१ | १ | ७ |
| भ्रूमध्यंवा | भ्रूमध्यं | १२१ | १ | ७ |
| विंस | विश | १२२ | १ | २ |
| जिव्हा | जिह्वा | १२२ | १ | २ |
| न्हींखींहूं | ह्रीँ खीँ हूँ | १२२ | १ | ५ |

| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|
| क्रींखींन्हींहूंफट् | क्रीँ हूँ खीँ ह्रीँ फट् | १२२ | १ | ६ |
| ऐंक्लींन्हां | ऐँ क्लीँ ह्रीँ | १२२ | २ | १ |
| आन्यासाम् | अन्यासाम् | १२२ | २ | ५ |
| जिव्हा | जिह्वा | १२३ | १ | २ |
| न्हीं | ह्रीँ | १२३ | २ | २ |
| मालाम्स | मालांस | १२३ | २ | ४ |
| न्हीं | ह्रीँ | १२३ | २ | ४ |
| हस्तमध्यपर्व्वणि | हस्तमध्यमामध्यप र्व्वणि | १२३ | २ | ६ |
| न्हीँ | ह्रीँ | १२४ | १ | १ |
| न्हीँ सिध्यै | ह्रीँ सिद्ध्यै | १२४ | १ | २ |
| पंचपुष्पांजलिम् | पञ्चपुष्पाञ्जलीन् | १२४ | १ | ७ |

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





| अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | अशुद्धं | शुद्धं | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सर्व्वसिध्यै .. .. | सर्व्वसिद्धयै .. .. | १२४ | २ | १ | हँसः .. .. .. | हंसः .. .. .. | १३५ | २ | ३ |
| पर्य्यन्तंआरात्रिकम्. | पर्य्यन्तमारात्रिकम्. | १२४ | २ | ३ | भित्वत्वबुद्धिः .. | भिन्नत्वबुद्धिः .. | १३७ | १ | ५ |
| लिपिंविना .. .. | लिपिविँना .. .. | १२६ | १ | १ | वुत्ध्या .. .. .. | वुद्धया .. .. .. | १३७ | १ | ५ |
| पूजाविस्तरतः .. | पूजाविँस्तरतः .. | १२६ | १ | ६ | फलदर्शनम् .. .. | फलप्रदर्शनम् .. | १३७ | २ | २ |
| जपसङ्ख्या .. .. | जपसङ्ख्यां .. .. | १२९ | १ | ४ | नैःष्कर्म्म्यां .. .. | नैष्कर्म्म्यां .. .. | १३७ | २ | ३ |
| दशिणानिबिडा .. | दक्षिणानिविडा .. | १३० | २ | २ | मदृष्टंव्वा .. .. | मदृष्टव्वाँ. .. .. | १३८ | २ | ७ |
| पिनाकधृषेनमः .. | पिनाकधृजेनमः .. | १३२ | २ | २ | बुत्ध्या .. .. .. | बुद्धया .. .. .. | १३९ | २ | १ |
| शिम्बयजेत् .. .. | शिवव्यँजेत् .. .. | १३३ | १ | ६ | सुर्थे .. .. .. | सूर्य्ये .. .. .. | १४० | १ | ३ |
| पादोदक .. .. | पादोदकम् .. .. | १३३ | २ | ४ | यात्वेनं. .. .. | पात्वेनं .. .. .. | १४० | १ | ५ |
| गृण्हन्ति .. .. | गृह्णन्ति. .. .. | १३४ | २ | ६ | | | | | |

एकचत्वारिंशत्पत्रद्वितीयपृष्ठप्रथमपङ्क्तावभिधानादित्यस्याग्रेत्रुटिः ॥ पवित्रलक्षणंछन्दोगपरिशिष्टे अनन्तर्गर्भिणंसाग्रङ्कौशन्द्विद ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लमेवच प्रादेशमात्रव्विँज्ञेयम्पवित्रय्यँत्रकुत्रचित् द्विदलंद्विसङ्ख्याकं दलं पत्रम् अनन्तर्ग्गर्ब्भिणम् तथात्र गर्ब्भम् गर्ब्भि अन्तर्ग्गर्ब्भिचत्यक्त्वाचतुर्थङ्ग्राह्यम् छान्दसत्वात्पुल्लिङ्गनिर्द्देशः यत्रकुत्रचित् सन्ध्यावन्दनातिरिक्तेपिकर्म्मणि इदमेवपवित्रलक्षणम् पवित्रे सन्न्यासपद्धतिलिखितम् वाक्यम्पठन्ति सव्यापसव्यवलितम्ब्रह्मग्रन्थिसमन्वितम् लङ्घयेत्प्रथमम्पर्व्व द्विपर्व्वन्नैवलङ्घयेत् लङ्घयेत्पर्व्वमेकन्त्वितिपाठान्तरमित्याचारचिन्तामणिः ॥ ॥ एकचत्वारिंशत्पत्रद्वितीयपृष्ठस्यचतुर्थपंक्तौवदन्तीत्यस्याग्रेत्रुटिः ॥ अनन्तर्ग्गर्ब्भिणमित्यादिपवित्रलक्षणमुक्त्वा अनन्तर्ग्गर्ब्भिणमन्तर्ग्गर्ब्भशून्यम् तथाचशौनकः अनन्तस्तरुणौयौतु कुशौप्रादेशसम्मितौ अनखच्छेदिनौसाग्रौतौपवित्राभिधेयकौ एतदभावे कुशपत्रचतुष्टयन्त्रयव्वाँ चतुर्ब्भिःकुशपत्रैश्चत्रिभिर्द्वाभ्यामथापिवा पवित्रङ्कारयेन्नित्यम्प्रशस्तंसर्व्वकर्म्मसु इतिसमुद्रकरधृतवचनात् विद्याकरवाजपेयिधृतम् पवित्रन्तुद्विजः कुर्य्यात्कुशपत्रद्वयेनतु पत्रत्रयेणवाकार्य्यन्नैकपत्रेणकुत्रचिदितिचलिखन्ति दाक्षिणात्यास्तु शङ्खः अनन्तर्ग्गर्ब्भिणंसाग्रमितिवचनमुक्त्वा हारीतः पवित्रंब्राह्मणस्यैव चतुर्ब्भिर्द्दर्ब्भपिञ्जुलैः एकैकन्न्यूनमुद्दिष्टव्वँर्ण्णेवर्ण्णेयथाक्रमम् स्मृत्यर्थसारे सर्व्वेषाव्वाँभवेद्वाभ्याम्पवित्रङ्ग्रन्थितन्नवम् रत्नावल्याम् द्वयोस्तुपर्व्वणोर्म्मध्येपवित्रन्धारयेद्बुधः हेमाद्रौस्कान्दे अनामिकाधृतादर्ब्भाह्येकानामिकयापिवा द्वाभ्यामनामिकाभ्यान्तुधार्य्येदर्ब्भपवित्रके पवित्राभावेतु तत्रैवस्तुमन्तुः समूलाग्रौविगर्ब्भौतुकुशौद्वौदक्षिणेकरे सव्येचैवतथात्रीन्वैबिभृयात्सर्व्वकर्मस्वित्याहुः ॥ ॥ ॥ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



पञ्चाशत्पत्रद्वितीयपृष्ठषष्ठपंङ्क्तौकार्य्यैत्यस्याग्रे त्रुटिः ॥ इमौचमन्त्रौकौथुमशाखिमाध्यन्दिनशाखिनोरुक्तौ एवमन्यैरापस्त्वीयवेदस्व शाखीयमन्त्रैःसूर्य्यपूजाविधेया एवमन्यदेवतापूजायामपिबोध्यम् ॥



## ॥ इति पूजापङ्कजभास्करग्रन्थस्यशुद्धाशुद्धपत्रं समाप्तिमगमत् ॥



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri


| विषयः | पत्रं | पृष्ठ | पंक्तिः | विषयः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः | विषयः | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नस्थानम् .. | ९८ | १ | ७ | न्त्रेप्रशस्ता .. | ११२ | २ | ५ | आरात्रिकम् .. | १२४ | २ | ३ |
| भूतशुद्धिः .... | ९९ | १ | ३ | आवाहनप्रकारः | ११३ | १ | ४ | ततःप्रदक्षिणम् .. | १२५ | १ | १ |
| अंथप्राणस्थापनम् | १०२ | २ | ७ | प्रतिष्ठितप्रतिमा | | | | सर्व्वकर्म्मसमर्प्प | | | |
| मातृकान्यासः .. | १०३ | २ | ७ | शालग्रामादि | | | | णम् ...... | १२५ | १ | ३ |
| प्राणायामः .... | १०७ | २ | १ | ष्वावाहनादि | | | | विसर्ज्जनम् .. | १२५ | १ | ६ |
| पीठन्यासः .... | १०७ | २ | ७ | विचारः .. .. | ११५ | १ | ५ | निर्म्माल्यक्षेपणम् | १२५ | २ | १ |
| मानसपूजा .. | १०९ | १ | ३ | कुण्डलिनीतु द्विवि | | | | चरणोदकग्रहणा | | | |
| विशेषार्घस्थापनं. | १०९ | २ | ५ | धा .. .. .. | ११६ | १ | १ | दि .. .. .. | १२५ | २ | ३ |
| पीठपूजा .. .. | १११ | २ | ७ | षोडशोपचाराः | ११६ | २ | २ | सङ्क्षेपपूजा .. | १२५ | २ | ५ |
| पूर्व्वादिदिङ्निय | | | | पूजाङ्गहोमः .. | १२० | १ | ६ | मालानिर्णयः .. | १२६ | २ | ५ |
| मः .. .. .. | ११२ | २ | १ | अथ जपात्पूर्व्वंमि | | | | वस्त्रादिनिर्म्मित | | | |
| अथपूजासाचय | | | | तिकर्त्तव्यता .. | १२१ | १ | २ | गोमुखविचारः | १२८ | २ | १ |


Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

| | पत्रं | पृष्ठं | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| विशेषान्तरम् ·· | १२८ | २ | ६ |
| अक्षमालादिषुकृत जपसङ्ख्याया गणनद्रव्यविचारः ·· ·· | १२९ | १ | ३ |
| मुद्राकथनम् ·· | १२९ | १ | ६ |
| पार्थिवशिवलिंगपूजा ·· ·· ·· | १३१ | २ | ६ |
| ब्रह्मपूजा ·· ·· | १३३ | २ | ६ |
| पूजोत्तरकृत्यम्. | १३५ | २ | २ |
| काम्यपूजानामपिमोक्षसाधकत्वम् ······ | १३५ | २ | ५ |
| ग्रन्थ समाप्तिः ·· | १४० | १ | २ |


# इत्यनुक्रमणिका सम्पूर्णा.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीवेंकटेश्वरायनमः ॥

श्रीमद्विबुधकुमुदकुमुदबान्धव शीलौदार्यवीर्यचातुर्यगाम्भीर्यादिगुणचुञ्चुमिथिलादेशान्तर्गतदरभङ्गाराजधानीस्थविविधबिरुदावलिविराजमानमानोन्नतमहाराजाधिराजामेथिलाधीश श्रीरुद्रसिंहकुमारबाबुश्रीमद्गुणेश्वरसिंहचरणसरोजयुगुलसंनिधौ असकृत्साष्टाङ्गप्रणम्यविज्ञापयामि किञ्चित्, कलिमलकलुषितसकलजनोद्दिधीर्षया सभगीरथं प्रयत्नं कृत्वमांपूजापङ्कजभास्कराख्यद्युनदीं पुरातनागमनिगमब्रह्मसदनात्प्राज्ञेतरस्वान्तभूमिमवतार्यप्राथमिकमुद्रणमार्गगामिनींचकृत्वा पुनर्मुद्रणाद्यधिकारोमह्यमददुरतो महान्तं श्रीमत्कृतमुपकारभरं बिभर्मि आशासेच पुनरीदृशा अनेके ग्रन्थाः भवदीयोद्यमविलसितं भवेयुरति.

श्रीकृष्णदासात्मजो गङ्गाविष्णुः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

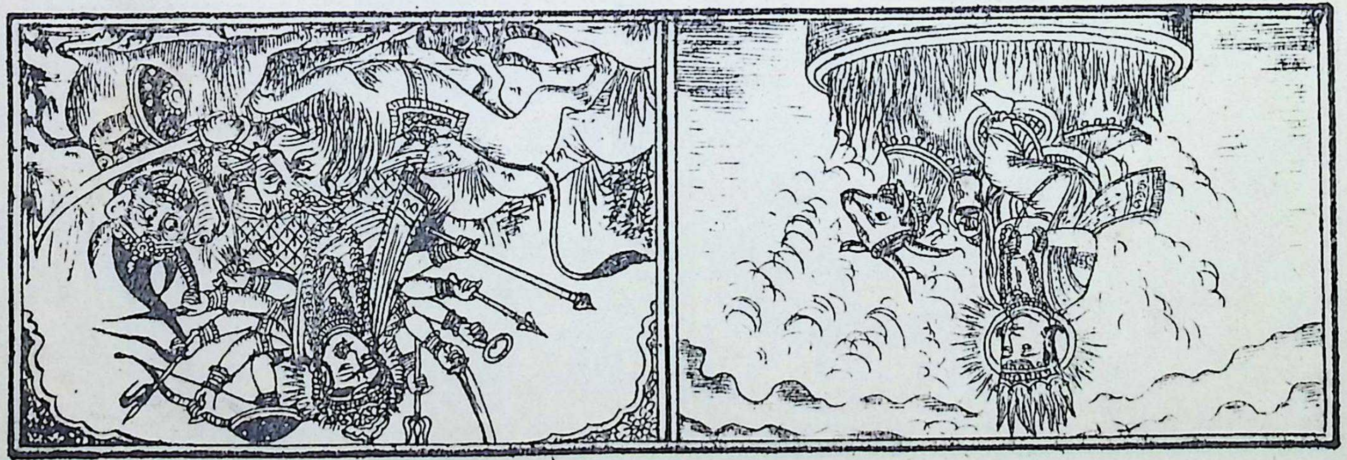

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

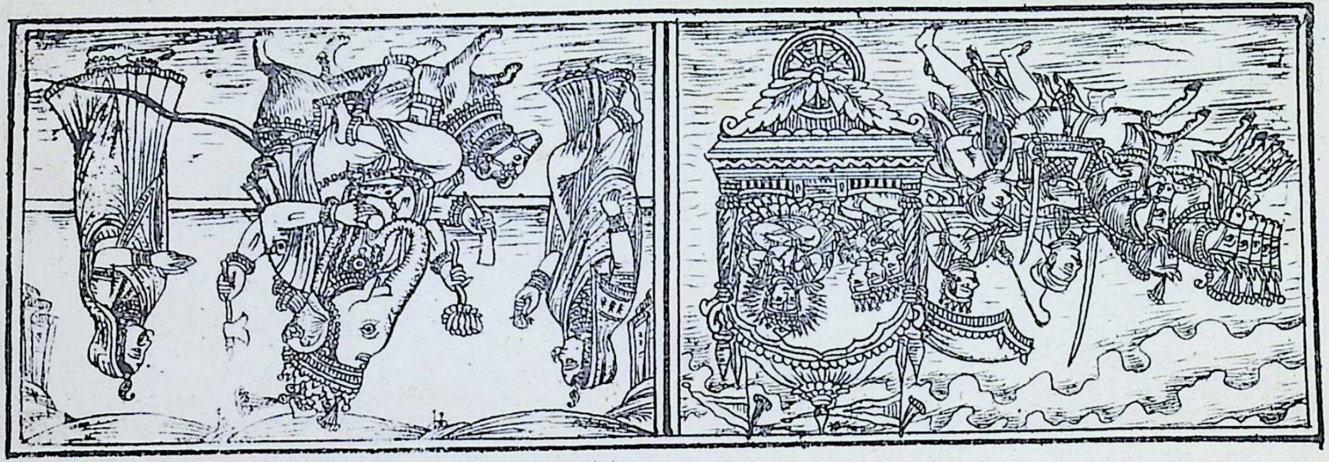

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

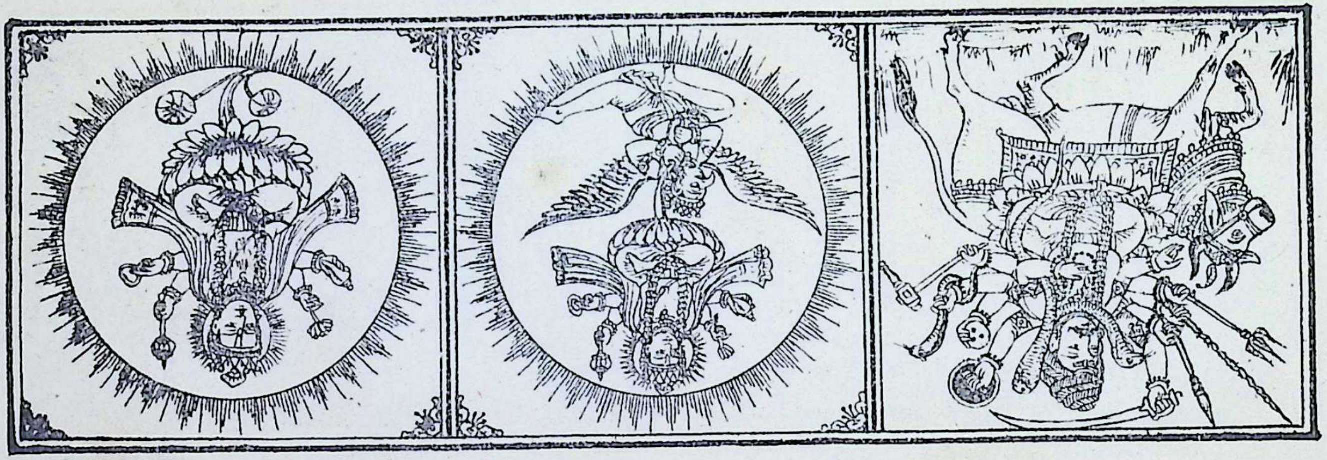

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जनकराज १९५९।

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ आसीत्खंडवलाकुलार्णवभवः श्रीमन्महेशश्शशी योविद्यासु
चतुर्दशस्वपिसुराचार्य्योपमोजायत॥यंचक्रेमिथिलाधिपंबुधवरंसत्कृत्यदिल्लीपति र्यं
त्कीर्त्त्याविशदीकृतेवनितलेकाकोपिहंसायते ॥ १ ॥ तद्वंशप्रभवोरिकक्षदहनोभूमीभु
जामग्रणीः श्रीमन्माधवसिंहभूपतिरभूद्भूदेवदेवद्रुमः॥ यस्यापत्यगणैर्व्विभातिमिथि
लामेरुर्यथानिर्जरैर्योगाभ्यासपरोमहाव्रतधरः काश्यान्तनुंयोजहौ ॥ २ ॥ तत्सूनुः
स्वसपत्नवारणगणप्रद्रावणेकेसरी भूमीपालशिरोमणिःसुखवपुः श्रीछत्रसिंहोऽभव
त्॥यत्सौन्दर्यविनिर्जितोमनासिजोमन्येऽतनुत्वंदधौ योनित्यंबहुशास्त्रवित्परिवृतोवे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



दान्तमभ्यस्तवान् ॥३॥ तस्माद्धर्म्मपरः प्रजासुखकरः सद्वृत्तवृत्तिप्रदो दानव्रातविनि
र्जितामरतरुः श्रीरुद्रसिंहोऽप्यभूत्॥ स्मार्त्ताचारविचारचारुचतुरः प्रोद्यत्प्रतापानलेऽय
द्भीत्या प्रविवेश वाडवमिषाच्छत्रुप्रतापोऽम्बुधौ ॥ ४ ॥ तस्मात्समुद्रादिव पूर्णचन्द्रो महे
श्वरादिः सबभूव सिंहः॥ सद्दानसन्तोषितभूमिदेवः स्वाचारनिष्ठः कृतदेवसेवः ॥ ५॥ य
स्माद्विश्वजनीनभूतिररिहा जातः प्रजारञ्जकः श्रीलक्ष्मीश्वरसिंह इति रहितक्ष्मामण्ड
लाखण्डलः॥ दाने कर्णसमो धिया गुरुसमो गाम्भीर्यरत्नाकरः स्वर्ल्लोकम्मघवेव शास्ति
मिथिलां प्रौढप्रतापानलः ॥६॥ तस्यानुजो वरविर्वात्तिमिथिलेशकृतादरः ॥ श्रीगुणेश्वर





Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंहोयःपितृदत्तमहीश्वरः ॥ ७ ॥ क्रियाकलापैर्ज्जमदग्नितुल्योयुधिष्ठिरेणापिसमोव
चोभिः॥ तीर्थाटनैर्य्यःशिवशर्म्मनाम्नादानेनतुल्यःशिबिभूमिपेन॥ ८ ॥ सोयंसूर्य्यग
णाधिपौहुतवहंदुर्गांशिवंश्रीहरिं स्वाभीष्टांपरदेवतांच शुभदांनत्वाप्रजानांपतिम् ॥
विद्वद्भिर्म्मिथिलेशमानिततरैर्ग्रंथान्विभाव्याग्रजान्पूजापङ्कजभास्करंवितनुतेविद्व
त्प्रमोदप्रदम्॥९॥ वाक्यसंयोजनंत्वत्रकुरुतेतदनुज्ञया॥प्यारेशर्म्मापगौलीसंविष्णु
दत्ततनूद्भवः ॥ १० ॥ ग्रंथास्तुमहामहोपाध्यायश्रीदत्तकृतछन्दोगाह्निकाचारादर्श म
हामहोपाध्यायहरिनाथकृतस्मृतिसार महामहोपाध्यायविश्वेश्वरकृतस्मृतिसमुच्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



य महामहोपाध्यायशंकरमिश्रकृतछन्दोगाह्निक महामहोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रकृ
ताचारचिन्तामणि महामहोपाध्यायपक्षधरमिश्रकृततत्वनिर्णय महामहोपाध्यायदे
वनाथठक्कुरकृतस्मृतिकौमुदी महामहोपाध्यायगणेश्वरमिश्रकृतहरिभक्तिदीपिका
महामहोपाध्यायशूलपाणिकृताचारविवेक महामहोपाध्यायाभिनववाचस्पतिमि
श्रकृतकृत्यप्रदीप महामहोपाध्यायवामदेवकृतस्मृतिदीपिकाप्रभृतिमैथिलनिबद्धाः
जीमूतवाहनान्वयापरादित्यकृतयाज्ञवल्क्यस्मृतिटीकापरार्क रघुनन्दनभट्टाचार्यकृ
तान्हिकतत्व गोपालभट्टकृतहरिभक्तिविलास प्रभृति गौडनिबद्धाः विज्ञानेश्वरकृत




Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

याज्ञवल्क्यटीकामिताक्षरा नीलकंठभट्टकृताचारमयूख कमलाकरभट्टकृतनिर्णयसिं
धु रामाचार्य्यकृतस्मृत्यालोक प्रभृति दाक्षिणात्यनिबद्धाःविस्तरभियातत्रतत्रोक्तप्र
माणवचनानिक्कचित्क्कचित्परिहृत्यप्रमेयमात्रंपूजाप्रकरणीयंसिद्धवदत्रलिख्यते अ
थदेवपूजा तत्रसर्वेषांवर्णानामधिकारः ॥ क्षमाशौचंदमःसत्यंदानमिन्द्रियनिग्रहः ॥
अहिंसागुरुशुश्रूषातीर्थानुसरणन्दया॥आर्ज्जवंलोभशून्यत्वंदेवब्राह्मणपूजनं॥ अन
भ्यसूयाचतथाधर्म्मःसामान्यउच्यते इतिविष्णुवचनात् स्वधर्मत्यागिनश्चशिवपू
जनेनाधिकारः॥ स्वधर्मंयःपरित्यज्यपरधर्मरुचिर्भवेत्॥तेनाहंपूज्यमानोपिगन्धांजि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



ग्रामिकौणपं इतिस्कन्दपुराणीयाशिववाक्यात् ब्राह्मणस्यस्वधर्मत्यागिनोपिशिवपूजनेऽधिकारः॥ वेदमन्त्रधनैर्विप्रैरहन्तुष्येर्च्चितःसदा॥नविप्राणांकररस्पर्शैरुद्विजामिवराननने॥ शूद्रकर्मरतेनापिस्पृश्यमानोद्विजन्मना ॥ हृष्यामितेनसुतरांपूज्यमानश्चसुन्दरि इतिगौरींप्रतिशिववाक्यादितिवाचस्पतिमिश्रप्रभृतयः स्मृतिदीपिकायांतु स्वधर्मत्यागिनःशूद्रस्यशिवपूजनेनाधिकारः ब्राह्मणस्यस्वधर्मत्यागिनोप्यधिकारइत्याह तन्मतेक्षत्रियवैश्ययोःस्वधर्मत्यागिनोरधिकारानधिकारयोरनध्यवसायापत्तिर्दोषइतिबोध्यम् दाक्षिणात्यास्तु ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चपृथिवीप



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ते॥स्वधर्मतत्परोविष्णुमाराधयतिनान्यथा इतिदेवीपुराणात् स्वधर्मपराणामेवचतुर्णामपिवर्णानांविष्णुपूजाधिकारमाहुः एवंस्त्रीशूद्रयोःशालग्रामशिलार्च्चनेनाधिकारः॥ब्राह्मणस्यैवपूज्योहंशुचेरप्यशुचेरपि ॥ स्त्रीशूद्रकरसंस्पर्शोवज्रादपिसुदुःसहः इतिशिष्टपरिगृहीतवचनात् प्रणवस्यजपाद्धोमाच्छालग्रामशिलार्च्चनात् ॥ ब्राह्मणीगमनाच्चैवशूद्रश्चांडालतामियादितिवचनाच्चेतिकेचित् अत्रपूजापदमर्च्चनपदंचस्पर्शपरम् उत्तरार्द्धार्थानुरोधात् भूमावप्सुतथाग्नौचशालग्रामशिलात्मकः ॥ सर्ववर्णैरहंपूज्यःशिलांशूद्रोनसंस्पृशेदितिविष्णुरहस्योक्तभगवद्वचनात्स्पर्शमात्रस्यैवनिषेधा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



ञ्चतेनस्त्रीशूद्रैःस्पर्शएवनकार्यःपूजातुकार्यैवेतिबहवः आचारोपितथैवेतिबोध्यम् गौ
डास्तु स्त्रीणामनुपनीतानांशूद्राणाञ्चजनेश्वर ॥ स्पर्शनेनाधिकारोस्तिविष्णौवाशंक
रेपिवा ॥इतिवचनादनुपनीतेनापिविष्णुशिवयोःस्पर्शोनविधेयइत्याहुः दाक्षिणात्या
स्तु विष्णुधर्मे शालग्रामशिलांवापिचक्रांकितशिलान्तथा ॥ ब्राह्मणःपूजयेन्नित्यंक्ष
त्रियादिर्नपूजयेत् ॥इतिस्पर्शसहितपूजाविषयमित्युक्त्वा स्त्रीणामनुपनीतानामित्या
दिपूर्वोक्तवचनाद्विष्णुशिवयोःस्पर्शने स्त्र्यादीनामनाधिकारमुक्त्वा शालग्रामंनस्पृशे
त्तुहीनवर्णोवसुन्धरे स्त्रीशूद्रकरसंस्पर्शोवज्रस्पर्शाधिकोमतः मोहाच्चेत्संस्पृशेच्छूद्रो



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योषिद्वापिकदाचन स्वपतेनरकेघोरेयावदाभूतसम्प्लवम् यदिभक्तिर्भवेत्तस्यस्त्रीणां वापिवसुन्धरे दूरादेवस्पृशन्पूजाङ्कारयेत्सुसमाहित इतिवराहोक्तेः शालग्रामशिला मात्रेनिर्बन्धोनप्रतिमादौ सर्ववर्णैस्तुसम्पूज्याःप्रतिमाःसर्वदेवताः लिङ्गान्यपितु पूज्यानिमणिभिःकल्पितानिचेतितत्रैवोक्तेरित्याहुःतदयम्प्रकरणार्थः देवपूजायाश्च तुर्णामपिवर्णानामधिकारः स्वधर्म्मत्यागिनोब्राह्मणेतरस्याशिवपूजनेनाधिकारः स्त्रीशूद्रयोःशालग्रामशिलास्पर्शानधिकारेपि शालग्रामशिलायांस्पर्शशून्येप्रतिमा दौस्पर्शसहितेपिपञ्चोपचारादिभिर्विष्णुपूजनेधिकारएव गौडमते स्त्रीशूद्रानुपनीता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



नांविष्णुशिवस्पर्शनेनाधिकारः दाक्षिणात्यमतेतुचतुर्ण्णामपिवर्णानांस्वधर्मपराणा
मेवविष्णुपूजनेधिकारःशालग्रामेगोमत्यादिभवचक्राङ्कितशिलायांचस्पर्शपूर्वकपूज
नेक्षत्रियादीनामनुपनीतानांस्त्रीणांचनाधिकारः प्रतिमास्तुसर्वैःपूज्याःलिङ्गानिचम
णिभिःकल्पितान्येवक्षत्रियादिभिःपूज्यानीति ॥ इतिपूजापङ्कजभास्करेप्रथमःप्रका
शः॥अथनित्यकाम्यदेवपूजाविचारःतत्र शिवम्भास्करमग्निञ्चकेशवङ्कौशिकीमपिम
नसानर्च्चयन्यातिदेवलोकादधोगतिमितिकालिकापुराणात् शिवादीनांपञ्चानाम्पू
जानित्या कौशिकीदुर्गा मनसाप्यनर्च्चयन्नित्यर्थः तेनपूजाप्रशस्तपुष्पाद्यभावेमन



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साप्येषाम्पूजाकर्य्यैत्यर्थःफलति अधोगतिंनरकगतिंतेनैषामर्चनस्यनित्यत्वम् नि
त्यगणमध्यपाठेनाविश्वजिन्न्यायानवतारात् वरम्प्राणपरित्यागःशिरसोवापिकर्त्तन
म् नत्वसम्पूज्यभुञ्जीतकेशवङ्कौशिकींशिवमितिकालिकापुराणीयनिन्दाश्रवणाच्च ए
वम्ब्रह्मपूजापिनित्यैव ब्रह्माणंशङ्करंसूर्य्यन्तथैवमधुसूदनम् अन्यांश्चाभिमतान्देवा
न्भक्त्याचाक्रोधनोत्वरः स्वैर्म्मन्त्रैरर्च्चयेन्नित्यम्पत्रैःपुष्पैस्तथाम्बुभिः योमोहादथवा
लस्यादकृत्वादेवतार्च्चनम् भुङ्क्तेसयातिनरकंशूकरेष्वभिजायते इतिकूर्म्मपुराणात्
विष्णुंप्रजापतिञ्चापिशिवंवाभास्करन्तथा तल्लिङ्गैःपूजयेन्मन्त्रैर्द्देवानेतान्समाहितः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





इत्यग्निपूराणाभिधानाच्च वरन्देहपरित्यागोवरन्नरकसम्भवः नचासम्पूज्यभुञ्जीत
देवम्पद्मसमुद्भवम् सदापूजयतेयस्तुदेवंभक्त्यापितामहम् मनुष्यचर्म्मणानद्धःसवे
धानात्रसंशयइतिपूजारत्नाकरीयभविष्यपुराणाच्च एवंचसूर्य्याग्निदुर्ग्गाशिवाविष्णु
प्रजापतीनाम्पूजानित्येतिसिद्धम् आरोग्यंभास्करादिच्छेद्धनमिच्छेद्धुताशनात् ज्ञा
नम्महेश्वरादिच्छेन्मोक्षमिच्छेज्जनार्दनादित्यादिमत्स्यपुराणात् श्रान्तसंवाहनंरो
गिपरिचर्य्यासुरार्चनम् विप्रपादोदकोच्छिष्टमार्जनङ्गोप्रदानवत् गवाह्निकन्देवपु
जावेदाभ्यासःसरित्प्लवः नाशयत्याशुपापानिमहापातकजान्यपीति याज्ञवल्क्यवच



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नात्देवमाल्यापनयनन्देवागारसमूहनम्।स्नपनंसर्व्वदेवानाङ्गोप्रदानसमंस्मृतमि
तियमवचनाच्च फलश्रवणाद्देवपूजायाःकाम्यत्वेपिकाम्यप्रसङ्गेननित्यनिर्व्वाहोबो
ध्यइतिस्मृतिदीपिकायांवामदेवोपाध्यायः माल्यम् निर्म्माल्यम् श्रीदत्तोपाध्यायवा
चस्पतिमिश्रादयस्तु तर्पणोत्तरकर्मानन्तरम् एवंसूर्यन्नमस्कृत्यात्रिःकृत्वाचप्रदक्षिण
म् द्विजङ्गाङ्काञ्चनंस्पृष्ट्वाततोविष्णुगृहंव्रजेत् आशयस्थञ्चसम्पूज्यप्रतिमास्थञ्चपू
जयेत् इतिविष्णुवचनात् सूर्य्याञ्जलिमुत्क्वाततोगृहार्च्चनङ्कुर्य्यादभीष्टसुरपूजनम्
जलाभिषेकपुष्पाणान्धूपादीनान्निवेदनैः इतिविष्णुपुराणेभिधानाच्च विष्णुपूजेष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



देवतापूजयोरेवनित्यत्वम् फलश्रवणादन्यदेवपूजानाङ्काम्यत्वमेवेत्याहुः आदिपदे
नगन्धदीपनैवेद्यग्रहणम् सतिसम्भवेपञ्चानामावश्यकत्वात् साचपूजासूर्याग्निदु
र्गाशिवविष्णुपदेनैवविधेयासूर्यादिशब्दवाच्यत्वेनैवतेषान्देवतात्वात् शिष्टाचारादि
तिशूलपाणिः गणपतिपूजातुकाम्यैव महागणपतेःकर्म्मसिद्धिम्प्राप्नोतिमानवइति
देवीपुराणात् एवम्पार्थिवशिवलिङ्गपूजापिकाम्या यःकृत्वापार्थिवल्लिङ्गम्पूजयेच्छु
भवेदिकम् इहैवधनवान्श्रीमानन्तेरुद्रोभिजायतेइतिभविष्यपुराणीयादितिबोध्य
म् दाक्षिणात्यास्तुविष्णुशिवब्रह्मसूर्यशक्तिविनायकादिष्वभिमतान्देवतामर्च्चयेत् त



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रापिकलौहरिहरयोःपूजाप्रशस्ताकलौकलिमलध्वंसंसर्वपापहरंहरिम् येर्च्चयन्तिन
रानित्यन्तेपिवन्द्यायथाहरिः नविष्णवाराधनात्पुण्यंविद्यतेकर्म्मवैदिकम् तस्मादना
दिमध्यान्तन्नित्यमाराधयेद्धरिम् अथवादेवमीशानम्भगवन्तंसनातनम् प्रणवेनाथ
मन्त्रेणरौद्रेणत्र्यम्बकेणवेत्याद्यभिधानादितिवदन्ति तदयंसमुदायार्थः सूर्य्याग्निदु
र्गाशिवविष्णूनामिष्टदेवतायाश्चपूजानित्येतिस्मृतिकौमुदीकृद्देवनाथठक्कुरः श्रीवि
ष्णवभीष्टदेवतयोःपूजानित्या सूर्य्याग्निदुर्ग्गाशिवानान्तुनित्यकाम्या तत्रकाम्यप्रस
ङ्गेननित्यानिर्व्वाहः साचपूजासूर्य्याग्निदुर्ग्गाशिवविष्णुपदमुच्चार्य्यविधेया गणपति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





पूजातुकाम्यैवेतिस्मृतिदीपिकाकृद्वामदेवोपाध्यायः श्रीविष्णोरभीष्टदेवतायाश्चपू
जानित्यान्येषाङ्काम्येतिश्रीदत्तोपाध्यायवाचस्पतिमिश्रादयःब्रह्मपूजानित्यैवेतिशूल
पाणिः पार्थिवशिवलिङ्गपूजाकाम्यैव दाक्षिणात्यास्तु सूर्य्यादिदेवतानाम्मध्येकाम
प्येकामभिमतान्देवतामर्च्चयेत् तत्रापिहरिहरयोःपूजाप्रशस्तेत्याहुरिति इतिपूजा
पङ्कजभास्करेनित्यकाम्यदेवपूजाविचारोनामद्वितीयःप्रकाशः ॥२॥ **अथनित्य**

**पूजाकालः** सच चतुर्थेसर्व्विँभागेतुस्नानार्थम्मृदमाहरेत् तिलपुष्पकुशादी



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निस्नानञ्चाकृत्रिमेजले पञ्चमेतुतथाभागेसंविँभागोयथार्हतः इत्यादिनादक्षोक्तम
ध्याह्नस्नानसन्ध्यावन्दनोत्तरोज्ञेयः मध्यान्हस्नानसंध्यावन्दनोपरि ततोगृहार्चनङ्
कुर्य्यादभीष्टसुरपूजनमित्यादिनातद्विधानात् यत्तु मैत्रम्प्रसाधनस्नानन्दन्तधावनम
ञ्जनम् पूर्वाण्हएवकुर्वीतदेवतानाञ्चपूजनमितिमनुवचनन्तत्काम्यपूजापरमितिवा
चस्पतिमिश्रादयः अत्राह्नः पूर्व्वभागेतृतीयप्रहरात्पूर्व्वमेवतत्कार्य्यमित्यर्थमाश्रि
त्यविरोधपरिहारंशूलपाणिराह यच्च सुखोषितास्तांरजनीम्प्रातःसर्व्वेकृताह्निकाः
विविशुस्तांसभान्दिव्याङ्कृतवैरनुमोदितामितिमहाभारतवचनन्तदप्रत्याख्येयका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. र्य्यानुरोधेनानन्यगत्यानित्यानामाह्निकानांसूर्य्योदयानन्तरम्मध्यान्हात्प्रागपिकर भा.
१ णमदुष्टमित्येवम्परम्‌ अत्रचपक्षेमध्याह्नस्नानसन्ध्यावन्दनेअपितदैवकार्य्ये क्र प्र. ३
मभङ्गेबीजाभावात्तदन्तापकर्षन्यायाच्च अत्रप्रातःपदेनप्रातःकालोमुहूर्त्तांस्त्रीनि
त्यादिनापरिभाषितोज्ञेयोनतुसूर्य्योदयात्पूर्व्वकालः सूर्य्योदयंविनानैवस्नानदा
नादिकाःक्रियाइत्यादिनानिषेधादितिमिश्रादयः स्मृतिकौमुद्यान्देवनाथठक्कुरस्तु
प्रातःस्नानेनापिनित्यपूजाधिकारीभवति परन्तुमध्याह्नस्नानसन्ध्येअपिनित्यतया १
विधातव्येएवेत्याह वस्तुतोदक्षाद्युक्तोमध्याह्नादिःस्नानादिकालोदृष्टार्थएवअतएव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैद्यकेपिमध्याह्नस्नानंतदुत्तरंभोजनमुक्तमिति शिष्टाअपिमध्यान्होत्तरमासुरींव्वेला
म्परित्यज्यस्नानादिकमाचरन्ति उपवासादिविशेषसत्वेतुपूर्व्वाण्हएवस्नानंपञ्चयज्ञां
श्चविधायभुञ्जते तस्मादहनिस्नात्वापञ्चयज्ञान्कृत्वातिप्रातर्मध्यान्हञ्चनिषिद्धकाल
व्विँहायभोजनमेतावन्मात्रमेववैधमिति यदिचदक्षोक्तकालस्यवैधत्वमपितदापिका
र्य्यान्तरानाशक्तौतद्बोध्यम् ग्रामगमनसभोपवेशनादिकार्य्यान्तराशक्तौएकस्मिन्नेव
कस्मिँश्चिदहर्भागेस्नानपञ्चयज्ञकरणम् तथाहिभारते सुखोषितास्तांरजनीम्प्रातः
सर्वेकृताह्निकाः विविशुस्तांसभान्दिव्याङ्कितवैरनुमोदितामितिप्रथमाहर्भागेभोजन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पू. पं. प्राक्कालीनमहःकृत्यन्दर्शयति नतुपूर्व्वाण्हमध्यान्हापराण्हानफलान्कुर्य्यात् यथाश भा.
१० क्तिधर्म्मार्थकामेभ्यः इतिगौतमोप्यन्हःपूर्व्वमध्यपरभागान् यथाक्रमन्धर्म्मादिषुवि प्र. ३
दधत् पूर्व्वोक्तमर्थमनुमेने अतएवसहवस्त्रोहरहराप्लुत्यान्यद्वस्त्रमाच्छादयेदितिसा
ङ्ख्यायनगृह्यम् अहरहःपञ्चयज्ञान्निर्व्वपेदितिशङ्खलिखितौचाहर्मात्रंव्विवक्षित
वन्तौ केचित्तु अहरेवाधिकारविशेषणम् तदन्तर्ग्गतमध्यान्हादिकालश्चाङ्गमात्रमि
तितदसम्भवेप्यनुष्ठानम् सर्वशक्तिन्यायादित्याहुरितिश्रीदत्तोपाध्यायकृतछन्दोगा १०
न्हिकम् गौडास्तु पूर्वाण्हेदेवतार्च्चनम्मुख्यम् पूर्वाण्ह एवकुर्वीतदेवतानाञ्चपूजनमि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिमनुवचने एवकारस्मरणात् मध्यान्हेपिकूर्म्मपुराणे पौरुषेणतुसूक्तेनततोविष्णुंस
मर्च्चयेत् वैश्वदेवन्ततःकुर्य्याद्बलिकर्म्मततःपरामित्युक्तेरित्याहुः तेनपूर्व्वाण्हमध्यान्ह
भिन्नकालस्यगौणत्वंसूचितवान् देवार्च्चनन्तुप्रातर्होमोत्तरञ्चतुर्थभागेब्रह्मयज्ञोत्तरङ्का
र्य्यम् विधायदेवतापूजाम्प्रातर्होमादनन्तरम् कुर्वीतदेवतापूजाम्पञ्चयज्ञादनन्तरम्
इत्यादिद्विविधस्मृतेःतदयम्प्रकरणार्थः मध्यान्हस्नानसन्ध्यावन्दनोत्तरन्नित्यपूजा
विधेया अप्रत्याख्येयकार्य्यानुरोधेनसूर्य्योदयानन्तरम्मध्याह्नात्प्रागपि काम्यपूजा
तुपूर्वाण्हेइतिश्रीदत्तादयः प्रातःस्नात्वापिसूर्य्योदयोत्तरन्नित्यपूजादयोविधेयाः म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



ध्याह्नस्नानसन्ध्यावन्दने अपि नित्यतया विधेये एवेति स्मृतिकौमुदी श्रीदत्तोपाध्याय स्तु कस्मिंश्चिदेकस्मिन्नहर्भागे राक्षसीं वेलाम्मुक्त्वा स्नानादि भोजनान्तङ्कर्म्म विधेयम् मध्याह्नादिकालनियमस्तु दृष्टार्थ एवेत्याह पूर्वाण्हो मध्याह्नश्चाहर्भागो मुख्यः पूजाका लोन्यो गौण इति गौडाः दाक्षिणात्यास्तु प्रातर्होमोत्तरञ्चतुर्थभागे ब्रह्मयज्ञानन्तरं व्वा देवपूजा विधेयेत्याहुरिति इति पूजापङ्कजभास्करे नित्यपूजाकालविचारो नाम तृ तीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

## अथ देवपूजानाम्पूर्व्वापरीभावविचारः

त



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रसर्व्वादौसूर्य्यपूजा यावन्नदीयतेभानोरित्यादिवचनात् यथादेवमयत्नाच्चतरणि ल्लोकपूजितः तथाधूपोपहारैश्चपूजयेत्प्रथमंरविम् अपूज्यप्रथमंसूर्य्यमपरान्यः प्र पूजयेत् नतद्भूतकृतम्पाद्यंसम्प्रतीक्षन्तिदेवताइतिस्कन्दपुराणाच्च ततःकाम्यत्वेपि सकलविघ्नहरणद्वाराकर्म्मसिद्धिदायकत्वेन आदित्यङ्गणनाथञ्चदेवींरुद्रंयथाक्रमम् नारायणंविंशुद्धाख्यमंतेचकुलदेवतामितिपद्मपुराणवचनाच्च गणपतिपूजाकार्य्या विशुद्धाख्यंव्वह्निङ्कुलदेवतामिष्टदवताम् अन्तेचेष्टदेवतापूजाआगन्तूनामन्तोभिनि वेशादुक्तवचनाच्चेतिसकलपूजानिबन्धकारः मध्येदुर्ग्गाशिवविष्णूनाङ्क्रमेणपूजाका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

र्य्या उक्तवचनात् पद्मपुराणे रविर्विनायकश्चण्डीईशोविष्णुस्तुपञ्चमः क्रमेणानेनपू
ज्यन्तेऽव्युत्क्रमेणमहद्भयमित्याभिधानाच्च अग्निपूजातुतदनन्तरङ्गार्य्या रविर्विनायक
इतिक्रमविरोधभयादितिमहामहोपाध्यायवामदेवकृतस्मृतिदीपिकासङ्क्षेपछन्दो
गाह्निककृद्वामदेवोपाध्यायस्तुसूर्य्यगणपत्यग्निदुर्ग्गाशिवाविष्णवभीष्टदेवतेतिक्रमेण
पूजामाह एवमेवमिथिलाधिपवासुदेवसिंहकारितगोण्टिशर्म्मकृताह्निकोद्धाराभिन
ववर्द्धमानकृताह्निकविवेकप्राचीनशौरिशर्म्मकृताचाराचिन्तामणिप्रभृतिषूपलभ्यते 
मिथिलायामाचारोप्प्येवमेवततःकाम्यापार्थिवशिवालिङ्गपूजा आचारात् ततोब्रह्मपू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जा साचयद्यपिनित्यातथापिसकलदेवपूजान्तेपूजोपकरणशेषद्रव्यैः ओँब्रह्मणेनम
इत्युच्चार्य्यकार्य्याशिष्टाचारादितिशूलपाणिः गौडनिबन्धे तत्रप्रथमतःसूर्य्यपूजा अ
पूज्यप्रथमंसूर्य्यमित्यादिब्रह्मपुराणात्प्रागुक्तपद्मपुराणवचनाच्च यत्तुभविष्यपुराणे
देवतादौयदामोहाद्गणेशोनचपूज्यते तदापूजाफलंहन्तिविघ्नराजोगणाधिपइत्यनेन
गणेशपूजनमादावुक्तम् तत्सूर्य्यपूजातिरिक्तेज्ञेयम् आदित्यङ्गणनाथञ्चेतिपद्मपुरा
णैकवाक्यत्वात् आदौविनायकःपूज्योन्तेचकुलदेवताः इतिबव्हृचगृह्यपरिशिष्टो
क्तम्गौर्य्यादिपूजनपरमितिकल्पतरुप्रभृतिभिरपिसूर्य्यपूजनस्यादित्वमुक्तम् एव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

ञ्चसूर्य्यङ्गणेशंदुर्ग्गांशिवव्विँष्णुञ्चसम्पूज्यब्राह्मणमन्यांश्चपूजयेत् गृहीतागमम
न्त्रस्यतुतत्तत्पूजनादेवपौराणिकपूजनासिद्धिः तदनन्तःपातिनास्त्विष्टदेवस्यपृथक्पू
जनमित्युक्तम् स्मृत्यालोकेदाक्षिणात्यरामस्तुसर्व्वादौसूर्य्यपूजासर्व्वान्तेविष्णुपू
जामध्येगणपत्यादिपूजातत्रक्रमनियमोनेत्याह तदयंसमुदायार्थः सूर्य्यगणपतिदु
र्ग्गाशिवविष्णवग्नीष्टदेवताःसम्पूज्य काम्यपार्थिवशिवलिङ्गपूजांव्विँधायसकलदेव
पूजोपकरणशेषद्रव्यैः ओंब्रह्मणेनमइत्युच्चार्य्यब्रह्मपूजाकार्य्या इतिशूलपाणिः सू १३
र्य्यगणपत्यग्निदुर्ग्गाशिवविष्णुस्वेष्टदेवताकाम्यपार्थिवशिवलिङ्गपूजांव्विँधाय ब्रह्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूजाविधेयेतिशौरिशर्म्मसंक्षेपछन्दोगाह्निककृद्वामदेवोपाध्यायादयः गौडास्तु एव
मेवोक्ता गृहीतागममन्त्रस्य आगमोक्तरीत्यातत्तद्देवपूजनादेवपौराणिकपूजासिद्धिः
तदनन्तःपातिनस्त्विष्टदेवस्यपृथक्पूजनङ्कार्य्यमित्याहुः दाक्षिणात्यरामस्तुसर्वादौ
सूर्य्यस्यसर्वान्तेविष्णोःपूजाकार्य्या मध्येगणेशादिपूजनेक्रमनियमोनास्तीत्याह इ
तिपूजापङ्कजभास्करेपूजाक्रमविचारोनामचतुर्थःप्रकाशः ४ अथदेवपूजाधारविचारः
तत्रप्रतिमायांसर्वदेवतापूजाप्रशस्ता ध्यानाद्यनभिज्ञस्त्रीबालादीनान्तुतत्रैवसाप्रश
स्ता प्रतिमातुगृहेअङ्गुष्ठपर्वादारभ्यवितस्तिप्रमितासप्ताङ्गुलिप्रभृतिवितस्तिप्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. मितावाधार्य्या अङ्गुष्ठपर्व्वादारभ्यवितस्तियावदेवतु गृहेषुप्रतिमाधार्य्यानाधि भा.
१४ काशस्यतेबुधैरितिमत्स्यपुराणात् सप्ताङ्गुलांसमारभ्ययावच्चद्वादशाङ्गुला गृहे प्र. .४
ष्वर्च्चासमाख्याताप्रासादेचाधिकाशुभा इतिदेवीपुराणाच्च साचसुवर्णादिभिर्व्विधा
तव्या सौवर्णीराजतीवापिताम्रीरत्नमयीतथा शैलदारुमयीवापिलौहसङ्घमयीत
था रीतिकाधातुयुक्तावाकांस्यताम्रमयीतथा शुभदारुमयीवापिदेवतार्च्चाप्रशस्यते
इतिमत्स्यपुराणात् शैलदारुमयी शैलमयीदारुर्द्देवदारुस्तन्मयीचेत्यर्थः लौहसङ् १४
घमयी लौहंसुवर्णादितत्समूहमयी रीतिकाधातुयुक्ता रीतिकाधातुःपित्तलस्तद्युक्ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कांस्यताम्रमयी कांस्यताम्रोभयमयी शुभदारुमयी यज्ञियदारुमयी चतुर्भुजादे
वीप्रतिमागृहेउपविष्टानधार्य्या देवीपुराणे ऊर्द्ध्वस्थितागृहेकार्य्यासदादेवीचतुर्भुजा
अन्यथातुनकर्त्तव्याकृताभयकरीमता इत्यभिधानात् अष्टभुजातूपविष्टैवधार्य्या त
थाचाष्टभुजाकार्य्याप्रासादेवागृहेथवा ऊर्द्ध्वस्थितासदाघोरारौद्रीचापिनरेश्वर इति
तत्रोक्तेः तथाशैलजानगृहेपूज्याअभावात्काष्ठजाशुभा तथानगृहेसजटाशुभा एवमू
र्द्ध्वदृष्टिरधोदृष्टिस्तिर्य्यग्दृष्टिर्म्मानोन्मानहीनाचप्रतिमानिषिद्धा नाधोदृष्टिर्नोर्द्ध्वदृ
ष्टिर्न्तिर्य्यग्दृष्टिन्नकारयेदितिनरसिंहपुराणात् अप्रतिष्ठितातुनक्कापिनिषिद्धेतितत्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



वाहनादिविसर्ज्जनान्तापूजाविरुद्धा प्रतिष्ठितायास्तुकदाचित्पूजालोपेप्रत्यवायइ तिश्रीदत्तादयः नास्तिकस्थापितातुप्रतिमानपूजनीयास्तिकेन नार्म्मदलिङ्गशाल ग्रामादीनाम्पूजाधारत्वंविशेषपूजाप्रकरणेवक्ष्यते एवञ्जलादीनामपिपूजाधारत्व माहशातातपः भूमावप्सुतथाग्नौचदिविसूर्य्येचदेवताः नित्यमन्नेहिरण्येचगोषुचब्रा ह्मणेषुच अप्सुदेवामनुष्याणान्दिविदेवामनीषिणां काष्ठलोष्टेषुमूर्खाणाय्युँक्तस्या त्मनिदेवताः दिविआकाशेदेवताःसन्तीतिशेषः एषुस्थानेषुदेवताः पूज्याइत्यर्थः अ न्यथाव्यर्थतास्यात् अतएवपूजाप्रकरणेएवेदव्वँचनंलिखितम् तत्रभूमौजलेआका



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेच भावेनदेवतामारोप्यगन्धादिनापूजाकार्य्या अग्नौहोमरूपापि सूर्य्यमण्डले
ध्यानेनेतिबोध्यम् अन्नादीनान्तुनदेवतान्तराधारत्वम् आचारविरोधात् किन्तुतेषा
म्पूज्यत्वार्थमेवदेवतान्तराधारत्वमभिहितम् तथाचमनुः पूजयेदशनन्नित्यमिति ना
रदोप्याह लोकेस्मिन्मङ्गलान्यष्टौब्राह्मणोगौर्हुताशनः हिरण्यंसर्प्पिरादित्यआपो
राजातथाष्टमः एतानिसततम्पश्येन्नमस्येदर्च्चयेच्चयः प्रदक्षिणानिकुर्व्वीततथास्या
युर्न्नहीयते इतितस्माद्भूम्यादीनान्देवतांतराधारत्वमन्नादीनाम्पूज्यत्वमेवेतिस्थित
म् युक्तस्यात्मनीति योगिनाब्बाँह्योपचाराभावादन्तर्य्यजनकर्त्तव्यतापरम् अयञ्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पू. पं. सामान्येनाधारविधिः शिवपूजायामप्यविरूद्धः अतएवआकाशंलिङ्गमित्याहुःपृ 
१६ थिवीतस्यपीठिका आलयःसर्वभूतानां लयनाल्लिङ्गमुच्यते इतिलिङ्गत्वेनाकाशस्तु
तिरपि गृहस्थस्यजलेशिवपूजानिषिद्धेतितदागमविदः गौडास्तुविष्णुःआपआयत
नंयस्मत्तस्मात्तासुसदाहरिः अतएवबौधायनःप्रतिमास्थानेष्वप्स्वग्नावावाहनवर्ज्ज
मितिशातातपोपि अप्सुदेवामनुष्याणान्दिविदेवामनीषिणाम् काष्ठलोष्टेषुमूर्खाणां
युक्तस्यात्मनिदेवताःइति आत्मनीति योगिनोबाह्योपचारनिरासेनकर्तव्यतापरमि 
त्याहुः दाक्षिणात्यास्तुभागवते शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्याच सैकती मनो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधास्मृता तत्रैवकालकौमुद्यांस्कान्दे अक्षादल्पपरी
माणान्नलिङ्गङ्कुत्रचिन्नरः कुर्वीताङ्गुष्ठतोऽह्स्वन्नकदाचित्समाचरेत् अक्षोशीति
गुञ्जाः गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकाः तेषोडशाक्षःकर्षोस्त्रीत्यमरकोशात् प्रयोगपारिजाते
नवाष्टसप्ताङ्गुलिकंलिङ्गंश्रेष्ठमिहोच्यते षट्पञ्चकचतुर्म्मानंमध्यमंत्रिविधंस्मृतं त्रि
द्व्येकाङ्गुलिमानंय्यत्त्रिविधन्तत्कनीयसं एवन्नवविधम्प्रोक्तञ्चरलिङ्गंय्यथाक्रम
मिति विष्णुधर्मोत्तरे नार्च्यागृहेश्मजामूर्तिश्चतुरङ्गुलतोधिका नवितस्त्यधिकाधा
तुसंभवाश्रेयइच्छतेतिचाहुः तथाचायम्प्रकरणार्थः प्रतिमायांसर्वदेवतापूजाप्रशस्ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





ध्यानाद्यविदुषान्तत्रैवसाप्रशस्ता साचप्रतिमाङ्गुष्ठपर्व्वादारभ्यवितस्तिपर्यन्तप्र
माणा सप्ताङ्गुलांसमारभ्यद्वादशाङ्गुलिपर्यन्तप्रमाणावागृहेधार्या प्रासादेचाधि
कापि सापिपुनः सुवर्णमयी रजतमयी ताम्रमयी रत्नमयी शैलमयी देवदारुमयी सु
वर्णरजतताम्रसमूहमयी पित्तलमयी कांस्यताम्रोभयमयी यज्ञियदारुमयी वाका
र्य्या चतुर्भुजादेवीप्रतिमागृहेऊर्ध्वस्थितैव अष्टभुजातूपविष्टैवगृहेकार्य्याऊर्ध्वदृष्टि
रधोदृष्टिस्तिर्यग्दृष्टिर्व्यङ्गामानोन्मानहीनाचप्रतिमासर्व्वथानिषिद्धा शैलजासज
टाचगृहेनिषिद्धा एवम्भूमौजलेआकाशेचाभावेनदेवतामारोप्यगन्धादिनापूजाका



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्य्या अग्नौहोमरूपापि सूर्य्यमण्डलेध्यानेनेत्यवगंतव्यं गृहस्थस्यतुजलेशिवपूजा निषिद्धा अत्रगौडैस्तु प्रतिष्ठितप्रतिमाभूमिजलाग्निष्वावाहनर्विनैवपूजाकार्य्येत्यु क्तम् दाक्षिणात्यैस्तु शैली दारुमयी लौही लेख्यालेप्याचसैकती मनोमयीमाणिम यीत्यष्टधाप्रतिमामुक्ता लिङ्गन्त्वक्षपरिमाणतोन्यूनपरिमाणकन्नकार्यम् अक्षोशीति गुंञाः आरोहेनवाष्टसप्ताङ्गुलिपरिमितंश्रेष्ठम् षट्पञ्चचतुरङ्गुलिपरिमितम्मध्य मम् त्रिद्व्येकाङ्गुलिपरिमितमधमंज्ञेयम् प्रतिमातुगृहेचतुरङ्गुलितोधिकानकार्या धातुमयीवितस्त्यधिकानकार्य्येत्युक्तमिति इतिपूजापङ्कजभास्करेपूजाधारविचारो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



नामपञ्चमःप्रकाशः ५ अथदेवपूजायाङ्करणमन्त्रविचारः ब्रह्माणंशङ्करंसूर्य्यन्तथैव
मधुसूदनम् अन्यांश्चाभिमतान्देवान्भक्त्याचाक्रोधनोत्वरः स्वैर्म्मन्त्रैरर्च्चयेन्नित्य
म्पत्रैःपुष्पैस्तथाम्बुभिः इतिकूर्म्मपुराणवचनात् तल्लिङ्गैःपूजयेन्मन्त्रैः सर्वदेवान्स
माहितःइत्यग्निपुराणवचनाच्च ब्राह्मणादिवर्णत्रयेणतत्तद्देवताकवेदमन्त्रेण तत्तद्देव
तापूजाविधेयाविष्णुपूजातुविष्णुसंहितास्थविष्णुकल्पेनपुरुषसूक्तेनचविधेया वेद
मन्त्रानभिज्ञैस्त्रैवर्णिकैस्तु पञ्चरात्रोदितकल्पैःपूजाविधेया अभावे वेदमन्त्राणाम्प
ञ्चरात्रोदितोविधिः स्त्रीशूद्रयोर्नतच्छ्रोत्रपदवीमपियास्यतीतिविष्णुपुराणात् तत्रचय



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्ययस्मिन्कल्पेदीक्षातेनसकल्पआदरणीयः दीक्षामन्त्रविहीनैस्त्रैवर्णिकैस्तत्तन्म न्त्रव्विँनाप्रणवादिचतुर्थ्यन्तनमोन्ततत्तद्देवतानाम्नापिकृतापूजामहाफला नत्वदी क्षितस्यपूजायामनधिकारः प्रमाणाभावात् दीक्षामन्त्रविहीनेनापीत्याद्यभिधाना च्च सर्व्वानुपचारानुक्त्वाभविष्यपुराणे अयव्विँनैवमन्त्रेणपुण्यराशिःप्रकीर्त्तितः स्यादयम्मन्त्रयुक्तश्चेत्पुण्यंशतगुणोत्तरमित्युक्तेश्च स्त्रीशूद्रैस्तुप्रणवस्थानेनमःशब्द एवपठनीयः स्मृतिकौमुद्यान्देवनाथठक्कुरास्तु स्त्रीशूद्रैरपिपञ्चरात्रोदितविधिरुपा देयः स्त्रीशूद्रयोर्नतच्छ्रोत्रपदवीमपियास्यतीतिवचनस्थतच्छब्देनवेदमन्त्रस्यैवपराम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू.पं. शादित्याहुः एवञ्चपञ्चरात्राप्रामाण्याभिधानमनवबोधात् महाभारतादौप्रशंसित भा.
१९ त्वात् नचपञ्चरात्राप्रामाण्यबोधकभट्टवार्त्तिकवेदान्तिनयादिविरोधःस्यादितिवाच्यं प्र.६
तस्यवसिष्ठाद्युक्तपञ्चरात्राभिन्नवेदविरोधिमोक्षोपायप्रदर्शकशाण्डिल्याद्युक्तपञ्चरा
त्रपरत्वादितिबोध्यम् तदयम्प्रकरणार्थः वेदमन्त्राभिज्ञैस्त्रैवर्णिकैः तत्तद्देवताकवेद
मन्त्रैस्तत्तद्देवतापूजाविधेया विष्णुपूजातु वेदमन्त्रानभिज्ञैस्त्रैवर्णिकैःपञ्चरात्रोदिते
नविधिनाविधेया तत्रापियस्ययस्मिन्कल्पेदीक्षातेनसकल्पआदरणीयः दीक्षामन्त्र १९
विहीनैस्त्रैवर्णिकैस्तुप्रणवादिनमोन्तचतुर्थ्यन्तत्ततद्देवतानाम्नापूजाविधेया स्त्रीशूद्रै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तुप्रणवस्थानेनमःशब्दएवोच्चारणीयइति इतिपूजापङ्कजभास्करेपूजामन्त्रविचा
रोनामषष्ठःप्रकाशः ६ अथोपचारपात्राणि तानिचदारुमृत्तिकापद्मपत्रपलाशपत्र
ताम्ररूप्यसुवर्णमयानि अर्घस्नाननैवेद्यबलिधूपादिकार्य्ये उत्तरोत्तरम्प्रशस्तानि
इतिछन्दोगाह्निकेश्रीदत्तोपाध्यायाः यद्यपिदारवेणातुपात्रेणदानादर्घस्ययत्फलम्
तस्माच्छतगुणम्प्रोक्तम्मृत्पात्रेणनराधिप ताम्रजेनार्घपात्रेणपुण्यन्दशगुणंस्मृतम्
पलाशपद्मपात्राभ्यान्ताम्रपात्रसमम्भवेत् रौप्येणचार्घपात्रेणलक्षांशैरधिकम्भवेत्
सुवर्णपात्रविन्यस्तमर्घ्यङ्कोटिगुणम्भवेत् इत्यर्घप्रकरणस्थेस्मृतिसारधृतवचनेऽ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. र्घपदमस्ति तथापिस्नाननैवेद्यादेरपिउपलक्षकन्तत् अन्यथास्नाननैवेद्यादिदाने भा.
२० पात्रानध्यवसायापत्तिःस्यादितितदाशयः विष्णोःस्नानीयदानेतुशङ्खःप्रशस्तः श प्र.७
ङ्खस्थितेनतोयेनयःस्नापयतिकेशवम् कपिलानांसहस्रस्यदत्तस्यफलमाप्नुयात्
इतिशङ्खमाहात्म्येविष्णुधर्म्मोत्तरेभिधानात् शिवेतुशङ्खोनिषिद्धः नशिवंशङ्ख
वारिणेतिवचनात् दक्षिणामूर्त्तिशिवपूजायान्तुशङ्खमनुजानन्तिवृद्धाः संहिताया
व्विँधानादितिशूलपाणिः गौडास्तु नद्द्याद्भास्करायार्घंशङ्खतोयैर्व्विचक्षणइति २०
कालिकापुराणात्सूर्य्येपिशङ्खन्निषेधयन्ति स्नानेतुसौवर्णराजतकुम्भाभावेताम्रकु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्भः प्रशस्तस्तदभावे मृत्कुम्भः देवतान्तराणामपि स्नाने कुम्भरूपाणि पात्राणि प्रश
स्तानि मृत्कुम्भात्ताम्रजैः कुम्भैः स्नानं शतगुणोत्तरम् रौप्यैर्लक्षोत्तरम्प्रोक्तं हैमैः
कोटिगुणोत्तरमितिभविष्यपुराणात् विष्णोर्नैवेद्यदानेतुसुवर्णपात्रादपिताम्रपात्र
मधिकफलकमितिछन्दोगाह्निकम् भग्नन्तुपात्रंसर्वत्रानिषिद्धम् ताम्रसुवर्णरूप्या
श्ममुक्तास्फटिकशङ्खशुक्तिपात्राणिभग्नान्यपिप्रशस्तानितानिचपुण्डरीकाकृतीनि
नीलोत्पलाभानिरत्नादिरवचितानि काञ्चीघनयुतानि नानाविचित्ररूपाणि यथाशो
भय्यँथालाभङ्कल्पनीयानितेषुचारोहपरिणाहाभ्यांषट्त्रिंशदङ्गुलिपरिमितान्युत्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पू. पं. मानि चतुर्व्विंशत्यङ्गुलिपरिमितानिमध्यमानि द्वादशाङ्गुलिपरिमितान्यधमा भा.
२१ नि वस्वङ्गुलिपरिमितन्यूनानितुनैवकार्य्याणि षट्त्रिंशदङ्गुलम्पात्रमुत्तमम्पारि प्र.७
कीर्तित्तम् मध्यमन्तुत्रिभागोनङ्कनिष्ठन्द्वादशाङ्गुलम् वस्वङ्गुलिविहीनन्तुनपा
त्रङ्कारयेत्क्वचित् नानाविचित्ररूपाणिपुण्डरिकाकृतीनिच शङ्खनीलोत्पलाभानि
पात्राणिपरिकल्पयेत् रत्नादिखचितान्येवकाञ्चीघनयुतानिच यथाशोभय्यँथाल
भम्पात्राणिपरिकल्पयेत् इतिदेवीपुराणात् त्रिभागोनम् तृतीयभागहीनम् चतु २१
र्व्विंशत्यङ्गुलमित्यर्थः शंखेतुपरिमाणनियमोनास्तीतिशूलपाणिः तदयंसमुदाया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्थः अर्घस्नाननैवेद्यबलिधूपादिकार्य्ये दारुमृत्तिकापद्मपत्रपलाशपत्रताम्ररूप्य
सुवर्णमयानिपात्राणिउत्तरोत्तरम्प्रशस्तानि विष्णोःस्नानीयदानेशङ्खः प्रशस्तः
नैवेद्येतुसुवर्णपात्रादपिताम्रपात्रमाधिकफलम् स्नपनेतु मृत्तिकाताम्ररजतसुवर्ण
कुम्भाउत्तरोत्तरम्प्रशस्ताः शिवस्यार्घादौशङ्खोनिषिद्धः गौडमतेसूर्यार्घेपिश
ङ्खोनिषिद्धः ताम्रसुवर्णरूप्याश्ममुक्तास्फटिकशङ्खशुक्तिपात्रातिरिक्तानिभग्नपा
त्राणिनिषिद्धानि तानिचपुण्डरीकाकृतीनिनीलोत्पलाभानिरत्नादिखचितानिकाञ्ची
घनयुतानिनानाविचित्ररूपाणियथाशोभय्यँथालाभङ्कल्पनीयानि तानिचारोहपरि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



णाहाभ्यांषट्त्रिंशदङ्गुलिपरिमितान्युत्तमानिचतुर्विंशत्यङ्गुलिपरिमितानिमध्य
मानि द्वादशाङ्गुलिमितान्यधमानि अष्टाङ्गुलन्यूनानितुनकार्य्याणि शङ्खेतु
परिमाणनियमाभावएवेति इतिपूजापङ्कजभास्करेउपचारपात्रविचारोनामसप्त
मःप्रकाशः ७ अथोपचारविचारः तत्रहारीतः सपर्य्याविविधाप्रोक्तातासामेकांस
माश्रयेत् गन्धादिकानिवेद्यान्तापूजापञ्चोपचारिकेति कालिकापुराणम् गन्धपुष्पे
तथाधूपोदीपोनैवेद्यमेवच पितामहोप्याह गन्धादिकान्निवेद्यान्ताम्परिचर्य्याम्प्रक
ल्पयेदिति इयमेकाअपरादशोपचारा अर्घपाद्याचमनीयमधुपर्क्काचमनानिच गन्धा



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिपञ्चकञ्चेतिउपचारादशोदिताइति अत्रपाद्यम्प्रथममित्यन्ये अत्रमधुपर्कदानात्पू
र्व्वंस्नानीयन्देयमितिगौडाः तृतीयाषोडशोपचारा आसनंस्वागतञ्चार्घ्यंपाद्यमाचम
नीयकम् मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानिच गन्धपुष्पेधूपदीपौनैवेद्यव्वँन्दनन्त
था चतुर्थीअष्टादशोपचारा आसनावाहनेचार्घ्यम्पद्यमाचमनन्तथा स्नानव्वँस्त्रोप
वीतञ्चभूषणानिचसर्व्वतः गन्धम्पुष्पन्तथाधूपंदीपमन्नेनतर्प्पणं माल्यानुलेपनेचै
वनमस्कारविसर्ज्जने पञ्चमीषट्त्रिंशोपचारा आसनाभ्यञ्जनेतद्वदुद्वर्त्तननिरुक्षणे
सम्मार्ज्जनंसर्प्पिरादिस्नपनावाहनेततः पाद्यार्घाचमनीयानिस्नानीयमधुपर्ककौ पु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. नराचमनीयञ्चवस्त्रयज्ञोपवीतके अलङ्कारोगन्धपुष्पेधूपदीपौतथैवच ताम्बूलानि भा.
२३ चनैवेद्यम्पुष्पमालातथैवच अनुलेपनञ्चशय्याचचामरव्यजनन्तथा आदर्शदर्शनञ्चै प्र.८
वनमस्कारोथनर्त्तनम् गीतवाद्येचदानानिस्तुतिहोमप्रदक्षिणम् दन्तकाष्ठप्रदान
ञ्चततोदेवविसर्ज्जनम् उपचाराइमेज्ञेयाःषट्त्रिंशत्सुरपूजने एतेषुपञ्चसूपचारकल्पे
षुउत्तरोत्तराधिकफलेषुआद्ययोर्न्नैवेद्यंशेषेदेयम् निवेद्यान्ताइत्यभिधानात् ताम्बूल
यज्ञोपवीतालङ्कारादियत्किञ्चिद्दानमत्रकल्पयोर्न्नैवेद्यात्प्रागेव वस्त्रोत्तरङ्गन्धपूर्व्व २३
मितिकथनाच्छ्राद्धेवस्त्रात्प्रागिवेतिस्मृतिदीपिका छन्दोगाह्निकेतुस्नापनोत्तरंवँस्त्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लङ्कारयज्ञोपवीतादीनिदत्वा गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यानिदद्यादित्याहुः श्रीदत्तोपा
ध्यायाः एतेचोपचारकल्पाःकाम्यपूजायांयथाविभवमादेयाः तत्रापिप्रथमःकल्पो
नियतः सोपिपाद्यादिस्नानीयान्तन्दत्वैवविधेयइतिसामान्यपूजाप्रयोगेश्रीदत्तोपा
ध्यायाः नित्यायान्तुपूजायांसोपिननियतः किन्तुपञ्चोपचारेष्वपियावदेवलभ्यन्ता
वतैवसानिर्व्वाह्यानित्यत्वात् गौडास्तुस्मृतिः गन्धम्पुष्पन्तथाधूपन्दीपन्नैवेद्यपञ्चमं
प्रतिमादिषुपूजायामवश्यङ्कल्पयेद्बुधः जलेतुपुष्पमात्रेणजलैर्व्वाप्रतिपूजयेत् तुर
प्यर्थेभिन्नक्रमः पुष्पमात्रेणप्रीत्यर्थइत्यधिकमाहुः अत्रचषोडशोपचारपंचोपचारपू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. जयोःप्रसिद्धत्वात्तदीयद्रव्याणिविविच्यन्ते तत्रासनम् कुशसूत्रादिनिर्मितपुष्पौघर भा.
२४ चितम् यज्ञियदारुमयञ्चन्दनोद्भवम् वाल्कलम् कोशजम् फालम् फलनिर्मितम् रो प्र.८
मजंकंबलम् रङ्कुचर्ममयम् कुशमयम् आयसकांस्यसीसकभिन्नतैजसद्रव्यमयम्
शिलामयम् रत्नमयम् मणिमयञ्चाययालाभङ्ग्राह्यम् कालिकापुराणेसप्तष
ष्टितमेध्याये पौष्पम्पुष्पौघरचितङ्कुशसूत्रादिसय्युतम् अतिप्रीतिकरन्देव्याममा
प्यन्यस्यभैरव यज्ञदारुसमुद्भूतमासनम्मसृणंशुभम् नोच्छ्रायन्नातिविस्तीर्णमास २४
नविँनियोजयेत् वाल्कलङ्कौशजम्फालवाँस्त्रमेतत्त्रयंस्मृतम् रोमजङ्कम्बलञ्चैवत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दनेनचतुष्टयम् वास्त्रेषुकंबलंश्रेष्ठमासनंदेवतुष्टये राङ्कवञ्चार्म्मणंश्रेष्ठंदारवञ्चन्दनो
द्भवम् यच्चासनंकुशमयन्तदासनमनुत्तम् सर्व्वेषांतैजसानाञ्चआसनञ्ज्येष्ठमुच्यते
आयसर्व्वँर्ज्जयित्वातुकांस्यंसींसकमेवच शिलामयम्मणिमयन्तथारत्नमयम्मतम्
आसनन्देवताभ्यस्तु भुक्त्यैमुक्त्यैसमुत्सृजेदित्यादिनोक्तत्वात् स्वागतन्तुस्वागत
न्तेइति स्वागतमस्तुइतिवाशब्दोच्चारणरूपम् पाद्यम् पादप्रक्षालनार्थजलम् अ
र्घ्यम् रक्तचन्दनकुङ्कुमान्यतरत् बिल्वपत्राक्षतपुष्पदधिदूर्वातिलकुशयुतञ्जलम्
रक्ताबिल्वाक्षतैःपुष्पैर्दधिदूर्व्वाङ्कुशैस्तिलैः सामान्यःसर्व्वदेवानामर्घोयम्परिकीर्त्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

तः अभावेदधिदूर्वादेर्म्मानसव्वाँप्रकल्पयेत् इत्यर्घप्रकरणेदेवीपुराणात् रक्तं कुङ्कु
मं रक्तचन्दनव्वाँ इदन्तुसतिसम्भवे असतितुजलन्नियतमेवेतिचिन्तामणिः अत्रपु
ष्पतिलयोर्बहुत्वव्विँवक्षितम् अत्रगौडनिबन्धे इदमर्घ्यमितिछन्दोगानाम् एषोर्घइ
त्यन्येषामित्याह आचमनीयंशुद्धजलंआगमेतुगंधपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपदू
र्व्वाअर्घद्रव्याणि दूर्व्वाब्जविष्णुक्रांताःपाद्यद्रव्याणि जातीलवङ्गकङ्कोलान्याचमनी
यद्रव्याणि शुद्धाभिरद्भिःपुनराचमनीयमित्युक्तमित्याचारचिन्तामणिः मधुपर्कःदधि
घृतजलमधुसितासमूहःकांस्यपात्रस्थःकांस्यपात्रेणपिहितः दधिसर्प्पिर्ज्जलक्षौद्रं



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सितैताभिश्चपञ्चभिः प्रोच्यतेमधुपर्कस्तुसर्वदेवौघतुष्टये जलंतुसर्व्वतःस्वल्पंसिता
दधिघृतंसमं सर्व्वेषामधिकञ्क्षौद्रम्मधुपर्कंप्रयोजयेत् इतिकालिकापुराणात् गौड
निबन्धेपाद्यादिदानस्थानमाह श्रीमूर्तौतुशिरस्यर्घन्दद्यात्पाद्यञ्चपादयोः मुखेचाचम
नीयन्त्रिर्म्मधुपर्कञ्चतत्रहीति स्नानन्तञ्चस्नानीयद्रव्यैर्युगपत्सकलाङ्गसम्यग्गइति
स्मृतिकौमुदी तानिचघृततैलदधिक्षीरेक्षुरसजलमधुप्रभृतीनि भविष्यपुराणे घृतते
लदधिक्षीरैरिक्षोश्चैवरसेनतु नीरेणमधुनास्नानन्तस्यस्नानमिहोदितं इत्युक्तत्वात् त
त्स्नानेघृतादि अष्टोत्तरशतपलपरिमितं महास्नानेसहस्रद्वयपलपरिमितन्देयम् दे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

वानाम्प्रतिमायत्रघृताभ्यङ्गक्षमाभवेत् पलानितस्यदेयानिश्रद्धयापञ्चविंशतिः अ
ष्टोत्तरपलशतंस्नानेदेयञ्चसर्वदा द्वेसहस्रेपलानाञ्चमहास्नानेचसङ्ख्यया दातव्यँये
नसर्व्वासुदिक्षुनिर्य्यातितद्घृतमितिब्रह्मपुराणेभिधानात् अत्रघृतप्रतिमेउपलक्ष
णे दुग्धादावपिलिङ्गेपिचास्याएवव्यवस्थायाःसत्वात् स्नानंशतपलैर्नैवेति लिङ्गपु
राणन्तुलिङ्गस्नपनविषयम्बोद्धव्यम् पञ्चविंशपलल्लिङ्गेअभ्यङ्गङ्कारयेदथ शिवस्य
सर्पिषास्नानम्प्रोक्तम्पलशतेनतु तावतामधुनाचैवदध्नाचैवततःपरः तावतैवहिक्षीरे
णपञ्चगव्येनवापुनः इतिकालिकापुराणेभिधानात् तत्रघृताभ्यङ्गघृतस्नानानन्त



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रम् यवगोधूमचूर्णैर्जटामास्यादिगन्धद्रव्यचूर्णयुक्तवटपिप्पलवल्कलचूर्णादिभि
र्वाउद्वर्त्तनङ्कृत्वासुखोष्णजलेनक्षालनङ्कर्त्तव्यम् दुग्धादिस्नानानन्तरमपिजलक्षा
लनंकर्तव्यम् घृताभ्यङ्गेघृतस्नानेलिङ्गँय्यत्नाद्विरुक्षयेत् यवगोधूमजैश्चूर्णैः कषायै
र्गन्धयोजितैः सुखोष्णेनाम्बुनावापिस्नापयेत्तदनंत्तरम् इतिभविष्यपुराणीयात्
लिङ्गमित्युपलक्षणम् प्रतिमादेरपि नरसिंव्हपुराणे यवगोधूमजैश्चैर्णैरुद्वर्त्योष्णेनवा
रिणा प्रक्षाल्यदेवदेवेशव्वाँरुणँल्लोकमाप्नुयादित्यभिधानात् ततोब्रह्मणोविष्णोश्च
स्नानघृतादिब्राह्मणेभ्योदातव्यम् शिवस्याग्नौ अन्यदेवानान्दीनेभ्योदातव्यम् ब्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



ह्माङ्गलग्नव्विप्रेभ्योवैष्णवञ्चप्रदीयते रुद्राङ्गलग्नमग्नौचदहेत्सर्व्वञ्चतत्क्षणात् शिष्टे
भ्यस्त्वथदेवेभ्योयत्तद्दीनेषुनिःक्षिपेत् इतिब्रह्मपुराणात् देवेभ्यइत्यत्रदेव्यश्चदेवाश्चे
तिपुमान्स्त्रियेत्येकशेषाद्देवीभ्यइत्यपिज्ञेयम् वसनम् मृदुर्विकेशन्नवन्दृढंसूक्ष्मम्पारि
धानशयनासनादिभिर्म्मनुष्यासम्पृक्तम् नीलरक्तभिन्नव्विँष्णवे गौडनिबन्धे नीली
रक्तंतथाजीर्णवस्त्रमन्यधृतन्तथा देवदेवाययोदद्यात्सतुपापैःप्रलिप्यते अत्रापवादः
आविकेपट्टवस्त्रेचनीलीरागोनदुष्यतीति उपवीतम् पट्टसूत्रादिनिर्म्मितंशुक्लम्पीत
व्वाँदातव्यमितिछन्दोगाह्निकं गन्धश्चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमान्यतमपङ्कम् तिलक



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूपन्तच्चगन्धपदेनोल्लिख्यैवदेयामित्यग्रेस्फुटीभविष्यति सर्वत्रानुलेपनानन्तरन्ता
लवृन्तवीजनम्पुण्यप्रदमितिछन्दोगान्हिकम् अथपुष्पाणि अरण्यसम्भवानि गिरि
सम्भवानि स्ववाटिकासम्भवानि स्वामिनावाटिकारक्षकेणवास्वेच्छयादत्तपरवाटि
कासम्भवानिच नित्यपूजायाञ्चौर्य्येणाप्यानीतानिच निषिद्धवर्ज्जं सुरभीणिनिश्छि
द्राणि प्रोक्षितानि सामान्यतोविहितानि यत्तु परारोपितवृक्षेभ्यःपुष्पाण्याहृत्ययोर्च्च
येत् अविज्ञाप्यचतस्यैवतस्यतान्निष्फलंभवेत् तद्द्विजेतरपरं द्विजस्तृणैधः पुष्पाणि
सर्वतःस्ववदाहरेत् इतियाज्ञवल्क्यात् देवतार्थन्तुकुसुममस्तेयम्मनुरब्रवीदितिवच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. नाच्चगोऽप्यर्थन्तृणमेधांसियज्ञार्थेवीरुद्वनस्पतीनाम्पुष्पाणिस्ववदाददीतफलानिच भा.
२८ परिबृंहितानाम् इतिगौतमवचनाच्चविशेषोज्ञेयइत्याहुः विशेषतस्तु जाती शमीकुब्ज प्र.८
क कुश करवीर नागपुन्नाग मल्लिका अशोक चम्पक रक्तोत्पल नीलोत्पल बकुलप
द्म पुष्पाणि सर्व्वदेवानाव्विहितानि स्वयमुत्पादितपुष्पम् मुक्तपुष्पाद्ग्रथितपुष्पञ्चा
धिकफलम् ग्रथितम्मालारूपेण गुच्छरूपेणवा उग्रगंन्धीनिविशेषविहिताभिन्नानि
र्ग्गन्धीनि सकेश सकीट कीटविद्ध स्वयम्पतित स्वयमविकासितो पहत शीर्ण शु २८
ष्काधोवस्त्रधृत मस्तकोपरिधृत वामहस्तधृत शूद्रानीताऽविकसितानि कृताहःस्ना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेन पूजाकर्त्रा स्वयन्त्रोटितानि याचितानिसच्छिद्राणिचनिषिद्धानि अशुच्युत्पादि
तानिच निषिद्धानीतिचिन्तामणिः कलिकापिसर्वेषान्निषिद्धा मुकुलैर्न्नार्च्चयेद्देवमपक्क
न्ननिवेदयेदितिभविष्यपुराणात् अभिवादनकालेभिवाद्याभिवादककरस्थितानिनि
षिद्धानीतिकेचित् अग्रभागत्यागात्प्रोक्षणाच्चतानिशुद्धानीत्यपरे क्रयक्रीतन्तुनिष्फ
लमिति तु प्रवादः महाजनैरनादृतत्वादिति तुलस्याम् बिल्वपत्रेजलपुष्पेषुचपर्य्युषि
तत्वदोषोनेतितुप्रवादइतिचश्रीदत्तादयः पर्य्युषितेष्वपिमालाकारगृहास्थिते नदोष
इतिशैवागमः यावच्चपुष्पन्निर्म्माल्यतान्नयातितावदेवदेवताङ्गेभ्यउत्तरणीयं निर्म्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 ल्यताच जात्याप्रहरेणकरवीरस्याहोरात्रेण इतरपुष्पाणाङ्गन्धापगमेभवति प्रहरं 
तिष्ठतेजातीकरवीरमहर्न्निशामित्यादिश्रवणात् शारदायाम् सलिलम्भूमिसंस्पृष्टङ्
कृमिकेशादिदूषितम् अङ्गस्पृष्टंसमाघ्रातन्त्यजेत्पर्य्युषितम्बुधः पद्मपुराणेभूमिस्पृष्ट
न्नगृण्हीयाच्छेफालीबकुलंम्विना गौडास्तु योगिनीतन्त्रे बिल्वपत्रञ्चमाघ्यञ्चतमा
लामलकीदलम् कल्हारन्तुलसीचैवपद्मञ्चमुनिपुष्पकम् एतत्पर्य्युषितन्नस्याद्यच्चा
न्यत्कलिकात्मकम् भविष्ये पद्मानिसितरक्तानिकुसुमान्युत्पलानिच एषाम्पर्य्युषि 
ताशङ्काकार्य्यापञ्चदिनोर्ध्वंतः इतिलिखन्ति निषिद्धान्यपिमालयादेयानि देवार्प्पित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाटिकासम्भवानि वृक्षमुत्पाट्य वृक्षशाखाम्भङ्क्काचावचितानिचनिषिद्धानीतिज्ञे
यम् पत्राणिचारण्यसम्भवानि कीटादूषितानि निश्छिद्राणि निष्केशानि अपर्य्युषि
तानि अनुपहतानि सर्वेषान्देवानाव्विँहितानि बिल्वपत्राणिच सर्व्वेषाव्विँहितानि
पुष्पेषुयेयेनिषेधाउक्तास्तेपत्रेष्वप्यनुसन्धेयाः विहितपुष्पपत्राभावेविहितनिषिद्धा
नि तदभावेनिषिद्धवर्ज्जमन्यान्यपिगन्धवर्णयुतानि तदभावेविहितपुष्पवृक्षपत्राणिदे
यानि हरिभक्तिदीपिकायान्तु पुष्पाद्यभावे जलेनापि नित्यपूजानिर्व्वाह्येतिविशेषउ
क्तः अत्रश्रीदत्तोपाध्यायाः पुष्पैररण्यसम्भूतैःपत्रैर्व्वागिरिसम्भवैरितिवाक्येपूजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. स्वरूपसिद्धौविकल्पश्रवणेपितत्तद्वचनकथितत्तत्फलार्थितयासमुच्चयोपि पुष्पाभा भा.
३० वेपत्रविधेर्न्नेतिकेचित्तन्न तत्रतत्रपत्रपदस्यपुष्पतुल्यतयाविहितपत्रेतरपत्रपरत्वात् ए प्र.८
वञ्चमुहुर्म्मुहुः पुष्पदानन्नानापुष्पजातिसमुच्चयोनानापत्रजातिसमुच्चयश्चसमर्थितः
फलविशेषार्थत्वात् बहुवचनञ्चनकपिञ्जलन्यायात् त्रित्वपरम्प्रतिमाच्छादनादेर्व्वि
हितत्वात् त्रित्वपरत्वेप्यधिकफलार्थितयाधिकदानमपि तस्मात्पूजास्वरूपसिद्धिरेक
पुष्पजात्यापिएकपत्रजात्यापिअनावृत्यापिभवतीतिफलार्थितयासमुच्चयोपिपुष्पैरे ३०
तैर्य्यथालाभम् एतेषाञ्चयथालाभैःपत्रैश्चेत्याद्युक्तेर्व्वासमुच्चयः इत्युक्तवन्तः पुष्पाद्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्प्पणे गौडाः ज्ञानमालायाम् पुष्पव्वाँयदिवापत्रम्फलन्नेष्टमधोमुखम् पुष्पाञ्जलि विधिंहित्वायथोत्पन्नन्तथार्प्पणमितिपठन्ति धूपः सघृतगुग्गुलुः सचपुष्पमदत्वानदे यःअदत्वागन्धमाल्यानियोमेधूपम्प्रयच्छति मृतोसौजायतेभूमौयातुधानोनसंशयः इतिवराहपुराणात् माल्यपदमग्रथितपुष्पाणामप्युपलक्षणम् धूपदीपनैवेद्यदानेगौ डनिबन्धेकालिकापुराणं नैवेद्यन्दक्षिणेवामेपुरतोनचपृष्ठतः दीपन्दक्षिणतोदद्यात्पु रतोनचवामतः वामतस्तुतथाधूपमग्रेवानतुदक्षिणे निवेदयेत्पुरोभागेगन्धम्पुष्पञ्च भूषणं प्रतिमादिषुयद्योग्यञ्ज्ञात्रेदातुञ्चतत्तनौ दद्यादयोग्यम्पुरतोनैवेद्यम्भोजनादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पू.पं. कामिति तथागन्धपुष्पधूपाश्चघ्रात्वादेवेभ्योनदेयाः कालिकापुराणे गन्धम्पुष्पञ्च भा.
३१ धूपञ्चउपचराँस्तथापरान् जिघ्रन्निवेद्यदेवेभ्योनरोनरकमाप्नुयात् तथाभूम्यादौसं प्र.८
स्थाप्यधूपन्नदद्यात् नभूमौवितरेद्धूपन्नासनेनघटेतथा यथातथाधारगतंकृत्वाताविँ
निवेदयेत् इतिकालिकापुराणात् इतिचोक्तं दीपः सच नेत्राल्हादकरःस्वर्च्चिःक्रूरता
पविवर्ज्जितः सुशिखःशब्दरहितोनिर्द्धूमोनातिह्रस्वकः लभ्यतेयस्यतापस्तुदीपस्य
चतुरङ्गुलात् नसदीपइतिख्यातोव्योमवह्निस्तुसस्मृतइतिकालिकापुराणोक्तलक्ष ३१
णलक्षितःकार्य्यःसर्वदेवानान्दीपेघृतं शिवभिन्नदेवानान्तैलञ्चविहितं घृतन्तैलञ्च

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिश्रीकृत्यदीपेनदेयं नमिश्रीकृत्यदद्यात्तुदीपेस्नेहघृतादिकान् दत्वामिश्रीकृतंस्नेह न्तामिस्त्रन्नरकँव्रजेदितिकालिकापुराणात् वर्तिकातुतत्रशुद्धपट्टकौशेयकार्प्पासमूत्र नववस्त्रतद्दशाभवाकार्य्येतिशूलपाणिः नतुजीर्णमलिनोपयुक्तवस्त्रादिभवा शाणंवाँ दरकंवाँस्त्रञ्जीर्णम्मालिनमेववा उपयुक्तन्तुनोदद्याद्वर्त्तिकार्थङ्कदाचन इतिकालिका पुराणादितिबोध्यम् सूर्य्यदीपाधिकारेभविष्यपुराणे ताँश्चदत्वानाहिंसेतनचतैलविव र्जितान् कुर्व्वीतदीपहर्त्ताचमूषिकोन्धश्चजायते इतिवचनात् नैवनिर्व्वापयेद्दीपन्दे वार्थमुपकल्पितम् दीपहर्त्ताभवेदन्धःकाणोनिर्व्वापकोभवेदितिकालिकापुराणाच्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



देवायकल्पितोदीपोननिर्व्वापणीयः भूमौदीपोनधार्य्यः वृक्षेदीपःप्रदातव्योनतुभू
मौकदाचन सर्व्वंसहावसुमतीसहतेनत्विदंद्वयम् अकार्य्यपादघातञ्चदीपतापन्त
थैवचेतिकालिकापुराणात् नैवेद्यानितुभक्ष्यभोज्यकन्दमूलफलान्नपानकादीनिसर्व्व
त्रविहितानि फलन्तु अपक्कम् क्कथितम् यत्नपक्कम् विद्धम् कालापक्कञ्चननिवेदनी
यम् मुकुलैर्नार्च्चयेद्देवमपक्कन्ननिवेदयेत् फलङ्क्कथितविद्धञ्चकालापक्कमपित्यजेदि
तिदेवीपुराणात् अन्यत्रयत्नपक्कमपित्यजेदितिदर्शनाच्च क्कथितम् जलमध्येग्निपक्कं
तत्रजलमध्येइत्यंशः क्कथितपदार्थेविवक्षितः यत्नपक्कमपित्यजेदित्यन्यत्रदर्शनात् त



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रयत्नोग्निधूपरूपः सङ्ख्यापरिमाणनिर्णयनिबन्धे यत्नपक्कमपिग्राह्यङ्कदलीफलमु
त्तमं अत्रयत्नोधूमोपरिस्थापनगर्त्तादिनिःक्षेपवासकपत्राद्याच्छादनरूपः उत्तमप
देनरसोत्कर्षाभिधानात् हेतुगर्भश्चतद्विशेषणमिति पनसलिकुचादिकमपितादृशङ्ग्रा
ह्यमित्यायाति कालापक्कम् समुचितपाकसमयपक्कव्यतिरिक्तम् विद्धम् कण्टकक्ष
म्यादिना व्यञ्जनस्याग्निपक्कतानियमात्तद्भिन्नतयाग्निपक्कस्यकालापक्कस्यवानिषे
धोज्ञेयस्तेनकदलिपनसपटोलादेर्व्यञ्जनरूपस्यननिषेधः आम्रचूर्णातिन्तिड्यादेर
पिव्यञ्जनोपकरणत्वादपक्कस्याग्निपक्कस्यचननिषेधः मातृपूजायामकालपक्कमपि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पू. पं. देयमितिछन्दोगाह्निकम् सिद्धान्नन्तुवैश्वदेवानन्तरपूजापक्षे एवदेयमित्येके अकृतेपि भा.
३३ वैश्वदेवेवैश्वदेवार्थमग्रभागमुद्धृत्यशेषेणान्नेननैवेद्यदानमविरुद्धम् अकृतेवैश्वदेवेतुभि प्र.८
क्षौचगृहमागते वैश्वदेवार्थमुद्धृत्य भिक्षान्दत्वाविसर्जयेदितिनरसिंहपुराणीयोद्धर
णवादित्यपरे नचवैश्वदेवंविँनापक्वान्नस्यासंस्कृतत्वान्ननैवेद्यार्हत्वमितिवाच्यम् अह
रहःस्वाहाकुर्य्यादाकाष्ठादितिश्रुतेः सायम्प्रातर्व्वैश्वदेवःकर्त्तव्योबलिकर्म्मच अन
श्नतापिसततमन्यथाकिल्बिषीभवेदितिकात्यायनस्मृतेश्च वैश्वदेवस्य पुरुषार्थत्वेन 
पाकसंस्कारकत्वाभावात् नचपाकाग्रमुद्धृत्यजुहुयादितिप्रयोगदर्शकविष्णुसूत्रादुद्ध

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रणोत्तरंहोमस्यैवविधानात्तदातेननैवेद्यदानमयुक्तमितिवाच्यं विष्णुसूत्रस्यकठशा
खीयत्वादन्यशाखीयानामुद्धरणस्यार्थलभ्यत्वात् वस्तुतः क्त्वाश्रवणेनहोमस्योद्धर
णोत्तरकालिकत्वेपिअव्यवहिततदुत्तरकालिकत्वेमानाभावात्कठशाखीयैरपिउद्धृत्य
सिद्धान्नन्निवेदनीयमेवाभिक्षुभिक्षादानवदित्याहस्मृतिदीपिकाकारः पाकासत्वेतु
आमान्नफलादिभिरेवनैवेद्यदानङ्कार्य्यम् किञ्चवैश्वदेवानिषेधोयज्ञार्थान्निवर्त्ततइ
तिगोभिलदर्शनाद्विष्ण्वर्थकपाकान्तरेणसर्व्वेषान्नैवेद्यदानमविरुद्धमितिबोध्यम् य
ज्ञो विष्णुःशूद्रस्यचनैवेद्यम् वैश्वदेवश्चामान्नेनैवआमंशूद्रस्यपक्वान्नम्पक्वमुच्छिष्टमु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



च्यतइतिनिषेधात् मांसंशिवेतरेषुदातव्यम् तच्चपक्कम् दाक्षिणात्यनिबन्धे नैवेद्यादौ पार्थक्याभावेयथांशतइतिवदेत् सुवर्णमययज्ञोपवीतेप्येवमाचारइतिविशेषउक्तः स र्वत्रनैवेद्यदानानन्तरमादर्शदर्शनम्पुण्यप्रदामितिश्रीदत्तः एतच्चनैवेद्यंसूर्य्यायदत्तंम गेभ्यः शिवायदत्तम्भस्माङ्गेभ्यः दुर्ग्गायैदत्तंस्त्रीभ्यो विष्णवेदत्तंसात्वतेभ्यो ब्राह्मणे भ्योवाददद्यात् विप्रेभ्यस्त्वथतद्देयम्ब्रह्मणेयन्निवेदितम् स्त्रीभ्योथदेयम्मातृभ्योयत्कि ञ्चिद्विनिवेदितम् भूतप्रेतपिशाचेभ्योयत्तद्दीनेषुनिःक्षिपेत् एतद्वचनस्यस्नानीयदान प्रकरणोक्तत्वेपिविनिवेदितमित्युपसंहारात् नैवेद्यप्रतिपादनस्याप्यभिधायकत्वात्



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वन्दनम् स्तुतिःप्रणामश्च स्मृतिदीपिकाकारास्तु चन्दनमितिपठित्वा चन्दनंहस्ता भ्यङ्गेषुलेपनम् तदेवचाष्टादशोपचारेनुपलेपनपदार्थः गन्धःसुरभिद्रव्येणतिलकरू पः सचगन्धपदेनोल्लिख्यैवदेयः अनुलेपनपदेनदानविशेषादर्शनमूलकम् अतएवै षगन्धः शिवायनमः इत्येवप्रयोगल्लिँखन्तिशिष्टाः गन्धानन्तरमक्षतदानेमानन्तु पारणाद्यर्थपूजायाङ्गन्धाक्षतकरणकत्वदर्शनमितिवामदेवोपाध्याया आहुः तदयम्प्र करणार्थः पूजाविविधातत्रगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्येतिपञ्चोपचाराःएका पाद्यार्घाचम नीयमधुपर्काचमनीयगन्धादिपञ्चकेतिदशोपचाराद्वितीया अत्रमधुपर्कदानात्पूर्व्वं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



स्नानीयन्देयमितिगौडाः आसन स्वागत पाद्यार्घाचमनीय मधुपर्काचमनस्नानव
सनाभरण गन्धादिपञ्चक वन्दनेतिषोडशोपचारातृतीया स्मृतिदिपिकायान्तुचन्द
नमितिपठित्वाचन्दनंहस्ताद्यङ्गुषुलेपनम् गन्धस्तुललाटेतिलकरूपइत्याह आसना
वाहनार्घपाद्याचमनस्नानवस्त्रोपवीत भूषण गन्धादिपञ्चक माल्यानुलेपननमस्का
रविसर्ज्जनेतिअष्टादशोपचाराचेतिचतुर्थी आसनाभ्यञ्जनोद्वर्त्तननिरुक्षणसम्मार्ज्ज
नसर्पिरादिस्नानावाहन पाद्यार्घाचमनीयस्नानीय मधुपर्क पुनराचमनीय वस्त्रयज्ञो
पवीता लङ्कारगन्धादिचतुष्टय ताम्बूलनैवेद्य पुष्पमालानुलेपन शय्या चामर व्यज




Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नादर्शदर्शन नमस्कारनर्त्तन गीत वाद्यदान स्तुतिहोम प्रदक्षिणादन्तकाष्ठदानदेव
विसर्ज्जनेति षट्त्रिंशदुपचारापञ्चमी एतेचोपचाराउत्तरोत्तराधिकफलाः तत्राद्ययो
र्नैवेद्यंशेषेदेयम् अनयोः कल्पयोः फलदर्शनात्ताम्बूलयज्ञोपवीतालङ्कारादिदानन्नैवे
द्यात्प्रागेव श्राद्धेवस्त्रात्प्रागिवेतिस्मृतिदीपिका छन्दोगाह्निकेतुस्नपयित्वायथालाभ
व्वँस्त्रालङ्कारादीनियज्ञोपवीतादीनिचदत्वागन्धपुष्पधूपनैवेद्यादीनिदद्यादितिले
खात् गंधात्पूर्व्वँस्नानोत्तरमेतेषांदानमायाति एतेकल्पाःकाम्यपूजायांय्यँथाविभव
मादेयाः तत्रापिप्रथमः कल्पोनियतः नित्यायान्तुपूजायांसोपिननियतः किन्तुप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

ञ्चसूपचोरष्वपियावदेवलभ्यन्तावत्तैवसानिर्व्वाह्यानित्यत्वात् प्रतिमादिषुपूजायाङ्ग
न्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यान्यवश्यन्देयानि जलेतुपुष्पमात्रेणजलैर्व्वापिपूजासिद्ध्यती
तिगौडाः अथषोडशोपचारद्रव्याणि तत्रासनम् कुशसूत्रादिनिर्म्मितम्पुष्पौघरचि
तम् यज्ञदारुमयम् चन्दनोद्भवम् वाल्कलम् कोशजम् फलभवम् रोमजङ्कम्बलम्
रङ्कुचर्म्ममयम् कुशमयम् आयसकांस्यसीसकभिन्नतैजसद्रव्यमयम् शिलामयम्
रत्नमयम् मणिमयञ्चदेयम् स्वागतन्तु स्वागतमस्तु स्वागतन्तेइत्यादिनाकार्य्यम् ३६
पाद्यंपादप्रक्षालनार्थमुदकम् अर्घ्यम् रक्तचन्दकुङ्कुमान्यतरत् बिल्वपत्राक्षतबहुपु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ष्पदधिदूर्व्वा बहुतिलकुशयुतजलम् एषांमध्येयदभावस्तस्यजलेमनसाकल्पनाका
र्य्या आचमनीयम् शुद्धजलम् मधुपर्कः दधिघृतजलमधुसितासमूहःकांस्यपात्रस्थः
तत्रजलंसर्व्वतःस्वल्पं सितादधिघृतंसमंदेयं स्नानङ्घृततैलदधिक्षीरेक्षुरसजलमधु
प्रभृत्यन्यतमद्रव्यैरष्टोत्तरशतपलपरिमितैर्युगपत्सकलाङ्गसम्बन्धः महास्नानन्तु
सहस्रद्वयपलपरिमितैरुक्तद्रव्यैर्भवति अत्रघृतस्नानानन्तरं यवगोधूमचूर्णैर्ज्जटा
मांस्यादिगन्धद्रव्यचूर्णयुक्तवटपिप्पलवल्कलचूर्णादिभिर्व्वाउद्वर्त्तनङ्कृत्वासुखोष्ण
जलेनक्षालनङ्कर्त्तव्यं दुग्धादिस्नानानन्तरमपिजलक्षालनङ्कर्त्तव्यम् ततोब्रह्मणोवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. ष्णोश्चस्नानघृतादिब्राह्मणेभ्योदातव्यं शिवस्याग्नौ अन्यदेवानान्देवीनाञ्चदीनेभ्यो भा.
३७ देयं वसनम् मृदुविकेशम् नवन्दृढम् सूक्ष्मम् परिधानशयनासनादिभिर्म्मनुष्यास प्र.८
म्पृक्तं नीलरक्तभिन्नं गौडमते पट्टवस्त्रन्नीलं रक्तञ्चदेयं उपवीतं पट्टसूत्रादिनिर्म्मितं
शुक्लम्पीतव्वाँदातव्यमितिछन्दोगाह्निकं गन्धः चन्दनागुरुकर्प्पूरकुङ्कुमान्यतमप
ङ्कन्तिलकरूपं तच्च एषगन्धइत्युच्चार्य्यदेयं तदपिदेवतापुरोभागेएवनपृष्ठतःगन्धदा
नानन्तरन्तालवृन्तैश्चामरैश्चवीजनमतिप्रशस्तं पुष्पाणि अरण्यसम्भवानि गिरि ३७
सम्भवानि सुवाटिकासम्भवानि स्वामिनावाटिकारक्षकेणवास्वेच्छयादत्तपरवाटि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कासम्भवान्यपि गौडमतेपरवाटिकासम्भवान्यपि स्ववद्द्विजैरादेयानीति नित्यपू
जायाञ्चौर्य्येणानीतान्यपिनिषिद्धवर्ज्जम् सुरभीणिनिश्छिद्राणि प्रोक्षितानि सामा
न्यतोविहितानि विशेषतस्तु जाती शमी कुब्जक कुश करवीर नागपुन्नाग मल्लिका
ऽशोक चम्पक रक्तोत्पल नीलोत्पल बकुल पद्मपुष्पाणि सर्वदेवानांविहितानि स्व
यमुत्पादितपुष्पं मुक्तपुष्पाद्ग्रथितपुष्पञ्चाधिकफलं उग्रगन्धीनि विशेषविहितभि
न्ननिर्गन्धीनि सकेशसकीट कीटाविद्ध स्वयम्पतित स्वयमविकसितोपहतशीर्ण शु
ष्काधोवस्त्रधृत नीली कपित्थाद्यपवित्राणि अन्तर्ज्जलक्षालित पर्य्युषिताकालभव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



देवोपरिधृत मस्तकोपरिधृत वामहस्तधृत शूद्रानीतानि कृताहःस्नानेनपूजाकर्त्रा
स्वयंत्रोटितानियाचितानिसच्छिद्राणिच निषिद्धानि अशुच्युत्पादितानिच निषिद्धा
नीतिशूलपाणिः कलिकातुसर्वेषान्निषिद्धा अभिवादनकालेभिवाद्याभिवादककर
स्थितानिनिषिद्धानीतिकेचित् अग्रभागत्यागात्प्रोक्षणाच्चतानिशुद्धानीत्यपरे क्रय
क्रीतन्तुनिष्फलमितितुप्रवादएव शिष्टैरनादृतत्वादिति तुलस्यांबिल्वपत्रेजलपुष्पेषु
चपर्य्युषितत्वदोषोनेत्यपिप्रवादएवेतिचश्रीदत्तोपाध्यायाः पर्य्युषितेष्वपिमालाकार ३८
गृहास्थितेषुनदोषइतिशैवागमः यावच्चपुष्पंनिर्माल्यतान्नयाति तावदेवदेवताङ्गेभ्यउ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्तारणीयं निर्माल्यतातुजात्याः प्रहरेण करवीरस्याहोरात्रेण इतरपुष्पाणाङ्गंधापग मेभवति शेफालीबकुलातिरिक्तानिमूमिस्पृष्टान्यपिनिषिद्धानि गौडनिनंधेबिल्वपत्र तमालामलकीदलकंल्हारतुलसीपद्मपत्रागस्त्यानाङ्कलिकात्मकानांचपुष्पाणांपर्य्यु षितत्वदोषाभावः सितरक्तपद्मानामुत्पलानाञ्चपञ्चमदिनादूर्द्ध्वंपर्य्युषितत्वशङ्काकार्ये त्युक्तम् निषिद्धान्यपिमालयादेयानि देवार्पितवाटिकासम्भवानि वृक्षमुत्पाट्य वृक्ष शाखाम्भङ्क्त्वावावचितानिच निषिद्धानि पत्राणिचारण्यसम्भवानि कीटादूषितानि निश्छिद्राणि निष्केशानि अपर्य्युषितानि अनुपहतानि सामान्यतोविहितानिविशे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

षतोबिल्वपत्राणि सर्व्वेषांविहितानि पुष्पेषुयेयेनिषेधाउक्तास्तेपत्रेष्वप्यनुसंधेयाः
विहितपत्राभावेविहितनिषिद्धानि तदभावेनिषिद्धवर्ज्जमन्यान्यपि तदभावेविहित
पुष्पवृक्षपत्राणिदेयानि हरिभक्तिदीपिकायान्तुपुष्पाद्यभावेजलेनापिनित्यपूजानि
र्व्वाह्येतिविशेषउक्तः धूपः सघृतगुग्गुलुः तञ्चभूम्यतिरिक्ताधारेदेवतावामभागेऽग्रे
वादद्यान्नतुदक्षिणे नचगन्धपुष्पमदत्वादद्यात् सर्वदेवानान्दीपेघृतम् शिवभिन्न
देवानान्तैलञ्चविहितम् वर्तिकातुतत्रशुद्धपट्टकौशेयकार्प्पाससूत्रनववस्त्रतद्दशाभवा
कार्य्येतिशूलपाणिः दीपन्तुदेवतादक्षिणेपुरतोवादद्यान्नवामतोनचभूमौ देवेभ्योदत्त



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीपोननिर्व्वापनीयः नैवेद्यानितु भक्षभोज्यकन्दमूलफलान्नपानकादीनिसर्व्वत्र विहितानि फलन्तुअपक्कम् जलमध्येग्निपक्कम् कथितपदवाच्यम् धूमपक्कम् समुचितपाकसमयव्यतिरिक्तसमयपक्कम् कालापक्कपदाभिधेयम् कंटककृम्यादिनाविद्धञ्च नदेयं व्यञ्जनसूपपनसकदलपटोलादीनि अग्निपक्कानि कालापक्कानिचदद्यात् एवमाम्रचूर्णतिन्तिड्यादेरपि व्यञ्जनोपकरणत्वादपक्कमग्निपक्कंवाँ।तत्रनदोषायेति बोध्यम् सिद्धान्नन्तुवैश्वदेवानंतरपूजापक्षेदेयम् अकृतेवैश्वदेवेपूजेतिपक्षेतुवैश्वदेवार्थमग्रभागमुद्धृत्यशेषमन्नन्देवेभ्योनिवेदनीयमित्यपरे असतिपाकेफलादिष्वप्यस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



त्सुआममन्नमपिनिवेदनीयम् शूद्रेणतुपक्वमन्नन्नैवदेयम् मांसन्तुशिवेतरदेवेभ्योदात
व्यम् तदपिपक्वमेव एतच्चनैवेद्यंसूर्य्यायदत्तम्मगेभ्यःशिवायदत्तम्भस्माङ्गेभ्यःदुर्गा
यैदत्तंस्त्रीभ्योविष्णवेदत्तंसात्वतेभ्योब्राह्मणेभ्योवादद्यात् इतरदेवताभ्योनिवेदितंदी
नेभ्योदद्यात् दाक्षिणात्यनिबन्धेनैवेद्यादौ पार्थक्याभावेयथांशतइतिवदेत् स्वर्णम
ययज्ञोपवीतेप्येवमाचारःइतिविशेषः सर्व्वत्रनैवेद्यदानानन्तरमादर्शदर्शनम्पुण्यप्र
दम् वन्दनम् स्तुतिः प्रणामश्च स्मृतिदीपिकाकारमतेतुचन्दनमितिपाठः तच्चह
स्ताद्यङ्गेषुलेपनम् गन्धस्तुसुरभिद्रव्येणतिलकरूपः सचगन्धपदमुल्लिख्यैवदेयः



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गन्धानन्तरमक्षततिलादिदानमाचारादिति इतिपूजापङ्कज०उपचारविचारोनामा
ष्टमःप्रकाशः ८ अथप्रकीर्णकम् पूजाकालेसुवर्णरजतकुशत्रयाणिदक्षिणहस्ते
धारयेत् जपेहामेतथादानेस्वाध्यायेपितृतर्प्पणे अशून्यन्तुकरंकुर्य्यात्सुवर्णरजतैःकु
शैरिति हारीतवचनात् तत्राप्यनामिकायाम् अनामिकायान्तद्धार्य्यन्दक्षिणस्यकर
स्यचेतिहेमधारणप्रकरस्थदेवीपुराणेहेमधारणस्यतत्र विहितत्वेनतत्सम भिव्याहृता
नांरजतकुशानांधारणस्यापितत्रैवौचित्यात् तर्ज्जन्यांरजतंधार्य्यमितिनिर्म्मूलमिति
कल्पतरुप्रभृतयः एवम्पवित्रधारणमपितत्रैव सव्यःसोपग्रहःकार्य्योदक्षिणःसपवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





त्रकइतिकात्यायनेनाभिधानात् गौडास्तु अनामिकाधृतंहेमतर्ज्जन्यांरौप्यमेवच क
निष्ठायांधृतंखड्गन्तेनपूतोभवेन्नरइतियाज्ञवल्क्यवचनात् तर्ज्जनीरूप्यसंयुक्ताहेम
युक्तात्वनामिका सैवयुक्तातुदर्भेणकार्य्याविप्रेणसर्व्वदाइतिविद्याकरधृतवचनाच्च
तर्ज्जन्यामेवरजतंधार्य्यमितिवदान्ति यत्रजलप्रतिमादौस्थिरएवदेवसान्निधिस्तत्रा
वाहनंविसर्ज्जनञ्चविनैवपूजाकार्य्या प्रतिमास्थानेष्वप्स्वग्नावावाहनविसर्ज्जनव
र्ज्जमितिबौधायनवचनात् हरिभक्तिदीपिकायाङ्गणेश्वरमिश्रास्तु शालग्रामशिला
यामपिविष्णोरावाहनंविधेयम् नचावाहनंसान्निध्यार्थं सान्निध्यञ्चस्वतःसिद्धमेव



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालग्रामशिलायत्रतत्रसन्निहितोहरिरितिवचनात् अथदैशिकसान्निध्यस्यतत्रसि
द्धत्वेपिबौद्धसान्निध्यार्थन्तदाचरणमितितुनवाच्यम् बौद्धसान्निध्यस्यापिवचनबला
देवसिद्धत्वादितिवाच्यम् अदृष्टार्थत्वात् मन्त्रकरणकसान्निध्यबुद्धेरेवतत्रादृष्टजनक
त्वनियमात् तादृग्बुद्धेस्तत्करणतायाआवाहनंविँनासम्भवात् अतएवपद्मपुराणो
यस्नानेविष्णोःपादप्रसूतासीतिगङ्गायामपिगङ्गावाहनमाचरन्तिशिष्टाः अतएवच
यस्यापिगृहेसोमस्तेनापिसोमक्रेतव्यइत्यधिकारणसिद्धान्तः आरुण्यादिगुणविशि
ष्टगाक्रेतिसामेस्यवौदृष्टजनकत्वनियमात्देवतासम्मुखीकरणार्थमावाहनमित्याग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पृ. पं. मिकाइत्याहुः गौडैस्तु उद्वासावाहनेनस्त:स्थिरायामुद्ववार्च्चने अस्थिरायाव्विँक भा.
४२ ल्पः स्यात्स्थण्डिलेतुभवेद्द्वयमितिविशेषउक्तः द्वयम् उद्वासावाहने दाक्षिणात्यानि प्र.१
बन्धेपुरुषसूक्तषोडशोपचारपूजाप्रकरणे ध्यायेदभिमताव्विँष्णुमूर्त्तिंसम्पूजयेत्ततः
प्रथमयापुरुषसूक्तऋचाआवाहनम् शालग्रामशिलादावावाहनाभावाद्दगन्तेपुष्पं
देयमितिलिखितम् आवाहनन्तु आगच्छेतिपदानन्तरं सम्बोधनान्तदेवतानाम्नेति
छन्दोगाह्निकम् सम्बोधनान्तदेवतानामानन्तरमागच्छेतिपदेनदेवतामावाह्येतिवा ४२
चस्पतिमिश्रशूलपाण्यादयः एतेचोपचाराःदक्षिणहस्तेनैवदेयाः कर्म्मोपदिश्यते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

यत्रकर्त्तुरङ्गन्नचोच्यते दक्षिणस्तत्रविज्ञेयः कर्म्मणाम्पारगः करः इतिछन्दोगपरिशि
ष्टात् घण्टावादनन्तुवामहस्तेन दक्षिणकरस्यार्घादिनावरुद्धत्वादिति सव्येआचम
नीयङ्कुर्व्वन्वामहस्तेनकमण्डलुङ्गृह्णातीतिवाक्ये आचमनकालेवामहस्तेनक
मण्डलुधारणवदितिहरिभक्तिदीपिका तत्रापिदेवतीर्थेनैव सम्मार्ज्जनबलिकर्म्मभो
जनप्रदानानिदैवेनेतिहारीतोक्तेः यद्यप्यञ्जलिपूजायांशिष्टाचारोस्ति तथापिनस
प्रमाणम् श्रुतिस्मृतिविहितोधर्म्मतदलाभेशिष्टाचारःप्रमाणमितिवसिष्ठवचनेनत
योरविरोधेशिष्टाचारस्यप्रमाणत्वबोधनादित्यवधेयम् एवञ्चसतियदागमोक्तपूजा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 याम् जपान्तेदेवतान्ध्यात्वादद्यात्पुष्पाञ्जलित्रयम् इत्यादिवचनेनाञ्जलिपूजनम् 
तत्रापिवामहस्तयोगमात्रम्पुरस्कृत्यपुष्पत्यागोदक्षिणहस्तेनैव तौयुतावञ्जलिःपु
मानित्याद्यमरकोशाभिधानस्वरसेनवामकरयोगमात्रेणापिदक्षिणकरस्याञ्जलि
पदशक्तेर्व्युत्पत्तिसिद्धायास्तादवस्थ्यादितिहरिभक्तिदीपिका सर्व्वेचोपचाराःप्रोक्ष्यै
वदेयाः नाप्रोक्षितंस्पृशेत्किञ्चिद्दैवेपित्र्येचकर्म्मणीतिवायुपुराणात् यद्दीयतेचदेवेभ्यो
गन्धपुष्पादिकन्तथा अर्घपात्रस्थितैस्तोयैरभिषिच्यसमुत्सृजेत् इतिकालिकापुरा 
णाच्च प्रोक्षणमुत्तानेनहस्तेन उत्तानेनतुहस्तेनप्रोक्षणंसमुदाहृतम् तिरश्चाभ्युक्षण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्प्रोक्तन्त्यज्ञतावोक्षणंस्मृतम् इतिस्मृतेः यत्प्रक्षालनयोग्यन्तत्त्रिः प्रक्षालनीयम् त्रि
र्देवेभ्यःक्षालयेत् द्विर्म्मनुष्येभ्यः सकृत्पितृभ्यः इतिगोभिलीयात् शिवेतरदेवपूजा
म्प्रातःप्राङ्मुखःसायम्पश्चिमाभिमुखःरात्रावुदङ्मुखःकुर्वीत प्राक्पश्चिमोदगास्य
श्चप्रातःसायन्निशासुचेतिभविष्यपुराणादितिछन्दोगान्हिकम् स्मृतिदीपिकायान्तु
पश्चिमपदेनतिस्रस्तत्रदिशोग्राह्या ऐन्द्रीसौम्यापराजिताइतिवचने पश्चादभिहितै
शानींसायम्पूजायाङ्गृहीतवान् दिवातुप्रागुदगैशान्यन्यतमाभिमुखोदेवान्पूजयेत्
यत्रदिङ्नियमोनोक्तोहोमपूजादिकर्म्मसु तिस्रस्तत्रदिशोग्राह्याऐन्द्रीसौम्यापरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



जिताइतिदक्षवचनात् अपराजिताऐशानी शिवपूजातुसदोदङ्मुखेनैवरात्रावुदङ्मु
खः कुर्य्याद्देवकार्य्यंसदैवहि शिवार्च्चनंसदाप्येवंशुचिःकुर्य्यादुदङ्मुखः इतिगोभि
लवचनात् शङ्कराराधनन्तद्वत्सदाकुर्य्यादुदङ्मुखः इतिगौतमवचनाच्चेतिहरिभक्ति
दीपिका स्थिरप्रतिमापूजान्तुप्रतिमाभिमुखस्तिष्ठन्नेवकुर्य्यात् शुचिःसस्मृतसम्भा
रःप्राग्दर्भैकल्पितासनः आसीनःप्रागुदग्वार्च्चेदर्च्चायामथसम्मुखः इतिवचनात्
तथैवशिष्टाचाराच्च एवञ्चपूर्व्वोत्तरमुखस्थितायाः प्रतिमायाः पूजनम्पश्चिमदक्षिणा
भिमुखेनैवकार्य्यमितिसिद्धम् गौडनिबन्धेतु प्राक्पश्चिमोदगास्यश्चप्रातःसायान्न



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शासुच इत्यनेनसायम्पाश्चिमाभिमुखःपूजनन्नान्यदेवपूजायामन्वेतिकिन्तुसप्ताक्षर सूर्य्यमन्त्रविषयएवशिष्टाचारोपितथाइति दाक्षिणात्यास्तु प्रतिमाः प्राङ्मुखीरुद ङ्मुखोयजेत् अन्यत्रप्राङ्मुखः एतच्चस्थिरप्रतिमाविषयमित्याहुः अन्यत्र उत्तरा भिमुखप्रातिमायाम् उर्द्ध्वपुण्ड्रंविधाय येषान्देवानाय्यँानिवाहनानितत्रस्थितानूता न्ध्यात्वापूजयेत् आत्मानम्पूजयित्वाचसुगन्धिसितवाससासुमुहूर्तेयजेद्देवान्स्वकी यासनसंस्थितान् इतिदेवीपुराणात् आसनम् वाहनम्र नातिलकीकर्म्मकुर्य्यात् दा नय्यँज्ञस्तपोहोमःस्वाध्यायःपितृतर्प्पणम् भस्मीभवतिराजेन्द्र उर्द्ध्वपुण्ड्रंविनाकृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



मितिस्मृतेरितिहरिभक्तिदीपिका स्नानीयादिदानकाले घण्टावादनीया स्नानार्च्च नक्रियाकालेघण्टानादङ्करोतियः पुरतोवासुदेवस्येत्यादिवचनात् पूजाकालेगीतवा द्यनृत्यान्यपिसतिसम्भवेदेवतासन्निधौकुर्य्यात् कारयेद्वा विष्णुधर्म्मे फलानिदत्वादे वेभ्यःसफलाविँन्दतेश्रियम् गीतवाद्यप्रदानेनसौख्यम्प्राप्नोत्यनुत्तमम् प्रेक्षणीय प्रदानेनरूपवानभिजायते प्रेक्षणीयम् नृत्यम् गीतादेर्द्दानन्देवसमीपेकरणमात्रमि तिशूलपाण्यादयः अत्रेदम्बोध्यम् यद्यपि एकपाकेनवसतांपितृदेवद्विजार्च्चनम् ए कम्भवेद्विभक्तानान्तदेवस्याद्गृहेगृहे इतिवचनादविभक्तानाङ्गनीयसान्देवपूजानि





Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षेधोस्ति तथापिपृथगप्येकपाकानाम्ब्रह्मयज्ञोद्विजन्मनाम् अग्निहोत्रंसुरार्च्चातु
नित्यंसन्ध्याभवेत्पृथक् इत्याश्वलायनवचनादाह्निकीपूजाकृष्णाष्टमीपूजा शिवरा
त्र्यादिपूजाचकनीयसामपिकर्त्तव्या निषेधस्तुसावकाशनागपूजाकोजागरासुखरा
त्र्यादिकाम्यपूजाविषयकइतिबोध्यम् अपरार्ककृतयाज्ञवल्क्यटीकायाम् योगियाज्ञ
वल्क्यः एवंसम्पूज्यदेवेशङ्क्षणन्ध्यात्वानिरञ्जनं ततोवलोकयेदर्कंहंसः शुचिषदित्य
पीतिविशेषः तदयम्प्रकरणार्थः पूजाकालेसुवर्णरजतकुशत्रयाणिदक्षिणहस्तानामि
कायाम्पवित्रञ्चधारयेत् गौडास्तुदक्षिणहस्तानामिकायांसुवर्णंतर्ज्जन्यांरजतंकनि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. ष्ठिकायांखड्गञ्चधारयेदितिवदति यत्रजलप्रतिमादौस्थिरएवदेवसान्निधिस्तत्रावाहन भा.
४६ ञ्विँसर्ज्जनञ्चविनैवपूजाविधेयेतिशूलपाणिप्रभृतयः हरिभक्तिदीपिकायाङ्गणेश्वरमि प्र.९
श्रास्तु शालग्रामशिलायामपिविष्णोरावाहनञ्विँधेयमदृष्टार्थत्वादित्याहुः हरिभक्ति
विलासेस्थिरायामर्च्चायाम्पूजनेउद्वासावाहनयोरभावः चलायाञ्विँकल्पः स्थण्डि
लेउभयङ्कार्य्यमित्युक्तम् आवाहनवाक्यन्तु आगच्छेतिपदानन्तरंसम्बोधनान्तदे
वतानामेतिछन्दोगाह्निकम् सम्बोधनान्तदेवतानामानन्तरमागच्छेतिपदमितिवाच ४६
स्पतिमिश्रादयः एतेचोपचारादक्षिणहस्तस्थदेवतीर्थेनैवदेयाः घण्टावादनन्तुवाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्तेन दक्षिणकरस्यार्घादिनावरुद्धत्वात् पुष्पाञ्जलिदानेवामहस्तयोगमात्रपुरस्कारः पुष्पत्यागोदक्षिणहस्तेनैवेतिहारिभाक्तिदीका सर्व्वैचोपचाराअर्घपात्रस्थजलैः प्रोक्ष्यैवसमर्प्पणीयाः प्रोक्षणमुत्तानदक्षिणहस्तेन यत्तुप्रक्षालनयोग्यन्तत्त्रिःप्रक्षालनीयम् शिवेतरदेवतापूजाम्प्रातःप्राङ्मुखःसायम्पश्चिमाभिमुखःरात्रावुदङ्मुखःकुर्व्वीतेतिश्रीदत्तोपाध्यायादयः वामदेवोपाध्यायास्तुसायमैशान्याभिमुखइत्युक्तवन्तः वस्तुतःदिवाप्रागुदगैशान्यन्यतमाभिमुखोदेवान्पूजयेत् रात्रावुदङ्मुखएव शिवपूजातुसदोदङ्मुखएवकुर्य्यात् गौडास्तुसायम्पश्चिमाभिमुखत्वंसूर्य्यपूजामा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



त्रेइत्याहुः स्थिरप्रतिमापूजनन्तुप्रतिमाभिमुखःसन्नेवकुर्य्यात् दाक्षिणात्यास्तु प्रति
मास्थिराःप्राङ्मुखीरुदङ्मुख उदङ्मुखीःप्राङ्मुखोयजेदित्युक्तवन्तः ऊर्द्ध्वपुण्ड्रंविँ
धायस्वस्ववाहनसहिताःदेवताःध्यात्वापूजनीयाःपाद्यार्घ्याचमनस्नाननैवेद्यचामरवी
जनकालेघण्टावादनीया पूजाकालेगीतवाद्यनृत्यान्यपिसतिसम्भवेकुर्य्यात्कारये
द्वाइति एकपाकेनवसद्भिरपिसोदरभ्रातृभिःपृथक्पृथङ्नित्यदेवपूजाविधेया कृष्णा
ष्टमीशिवरात्रिपूजावत् सकलपूजोत्तरन्देवेशङ्क्षणन्ध्यात्वासूर्य्यमवलोकयेत् हंसः
शुचिषदितिमन्त्रञ्चपठेदितिगौडाइति इतिपूजापङ्कजभास्करेप्रकीर्णकन्नामनवमः



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशः ९ अथदेवपूजाप्रयोगः तत्रवन्ध्यारोगार्त्तजीर्णदेहनवप्रसूताऽमेध्यमक्षिका तिरिक्तगोऽव्यक्तिसम्बन्धिशुचिदेशगृहीताकाशगृहीतान्यतरगोमयोपलिप्तेनिष्ठग न्धशब्दवर्ज्जितशुचौदेशे देवासनान्नीचासने दिवाप्राङ्मुखउदङ्मुखऐशान्याभिमु खोवारात्रावुदङ्मुख एवसुखोपाविष्टः शुचिःशुचिवस्त्रद्वयधरोमौनीध्यानपरः कामरा गभयद्वन्द्वमात्सर्य्यत्वराक्रोधरहितः तन्मनाःसुमनादक्षिणपार्श्वेपुष्पकरण्डकव्वाँमे ऽपर्य्युषितजलपूर्णपात्रमितरञ्चपूजोपकरणय्यँथासन्निवेशमासाद्यजलपूर्णमर्घपात्र मग्रतोधृत्वातज्जलेनपूजास्थानन्तद्रव्याणिचप्रोक्ष्यगन्धादिनात्मानमभ्यर्च्यआग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



छेतिपदानन्तरंसम्बोधनान्तेनदेवतानाम्नासम्बोधनान्तदेवतानामोत्तरमागच्छेति
पदेनवादेवतामावाह्यस्थापयित्वाप्रतिष्ठितप्रतिमाशालग्रामनार्म्मदलिङ्गादावावाह
नविँनैवदक्षिणकरस्थदेवतीर्थेनआसनपाद्यार्घाचमनीयानिदत्वास्नपयित्वा यथा
लाभँव्वस्त्रालङ्कारयज्ञोपवीतादीनिदत्वा गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यानिचदत्वादीक्षितो
जप्त्वाऽदीक्षितस्तुजपमकृत्वैवप्रदक्षिणीकृत्यप्रणम्यस्तुत्वा ध्यात्वा भगवन् भगव
तिवाक्षमस्वस्वस्थानङ्गच्छेतिविसर्ज्जयेत् प्रदक्षिणन्तुएकञ्चण्ड्यांरवौसप्तत्रीणिद
द्याद्विनायके चत्वारिकेशवेकुर्य्याच्छिवेचार्द्धप्रदक्षिणमित्युक्तसङ्ख्याकङ्कार्य्यम्



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुक्तदेवानान्तुत्रिःकार्य्यमितिज्ञेयम् अत्रध्यानन्तुमत्स्यपुराणीयमेवसूर्य्यादीनां बोध्यं प्रतिमामानोन्मानादेर्म्मत्स्यपुराणीयस्यैव शिष्टैराद्दतत्वेनध्यानस्यापितदीय स्यैवग्रहीतुमुचितत्वात् अतएवदुर्ग्गाभक्तितरङ्गिण्याम्मत्स्यपुराणीयमेवध्यानमभि हितम् गौडनिबन्धेपूजाकर्त्रासनदोषगुणौनारदपञ्चरात्रे वंशासनेदरिद्रत्वम्पाषाणे व्याधिसम्भवम् धरिण्यान्दुःखसम्भूतिन्दौर्भाग्यन्दारुजासने तृणासनेयशोहा निम्पल्लवेचित्तविभ्रमम् दर्भासनेव्याधिनाशङ्कम्बलन्दुःखमोचनमिति अन्यत्रच कृष्णाजिनंव्याघ्रचर्म्मकौशेयंवेत्रनिर्म्मितम् वस्त्राजिनङ्कम्बलव्वाँकल्पयेदासनम्मृ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. दु इत्यभिहितम् विष्णोस्तुनरसिंहपुराणीयन्ध्यानङ्ग्राह्यम् निबन्धकृद्भिरुक्तत्वात् भा.
४९ गौडैस्तुसलिलेयदिकुर्व्वन्तिदेवतानाञ्चपूजनं तत्राप्यासनआसीनोनोत्थितस्तुस प्र. ११
दाचरेदितिकालिकापुराणवचनाज्जलेपिआसनेउपविष्टएवपूजाङ्कुर्य्यात् नतुस
न्ध्यावन्दनतर्प्पणवत् ऊर्द्ध्वस्थितोनिरासनोवेतिविशेषउक्तः इतिपूजापङ्कजभास्करे
पूजासामान्यप्रयोगोनामदशमः प्रकाशः १० अथसूर्य्यपूजा यःप्रदद्याद्गवाँलक्ष
न्दोग्ध्रीणांवेदपारगे एकाहमर्च्चयेद्भानुन्तस्यपुण्यन्ततोधिकम् तथा यःसूर्य्यम्पूजये ४९
न्नित्यम्प्रणमेद्वापिभक्तितः तस्यभोगश्चमोक्षश्चब्रध्नस्तुष्टःप्रयच्छति तथा यजेदेकंस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्त्रांशुम्मोक्षकामोनसंशयः तथा मेरुमन्दरतुल्योपिराशिःपापस्यकर्म्मणः आसा
द्यभास्करम्मर्त्यस्तन्नाशयति तत्क्षणात् इत्यादिभविष्यपुरा
णीयवचनात्सूर्य्यपूजामहाफ ला अस्यध्यानम् मत्स्यपुराणे
भुजङ्गरश्मिबद्धरश्मिवत्सप्ता श्वैकचक्ररथस्थम् नानाभरण
भूषितम् भुजद्वयधृतस्कन्धद्व यस्थपुष्करद्वयं वस्त्रयुग्मसमो
पेतं क्वचिच्चोलकछन्नवपुषंते जः सर्व्वावृतचरणद्वयम् विचित्र
मुकुटयुतंपद्मगर्भसमप्रभम् सुलोचनंपार्श्वद्वयस्थितखड्गहस्तदण्डपिङ्गलप्रती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 हारम् पार्श्वस्थितकृतलेखनीहस्तधातारं नानादेवगणावृतं पद्मपत्रसन्निभारुण 
सारथिम् सूर्य्यन्ध्यायेत् पद्मस्थम् सप्तसञ्ज्ञकाश्वस्थव्वाँध्यायेदिति एतत्पूजा
सामवेदिना ओंबण्महाँ२असिसूर्य्यबडादित्यमहाँ२असि महस्तेसतोमहिमापनि
ष्टममह्नादेवमहाँ२असि अनेनमन्त्रेण यजुर्व्वेदिना ओंआकृष्णेनरजसावर्त्तमानो
निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् इतिम
न्त्रेणकार्य्या अस्यार्घेभविष्यपुराणम् योष्टाङ्गमर्घमापूर्य्यभानोर्म्मूर्द्ध्निनिवेदयेत् द 
शवर्षसहस्राणिवसेदर्कस्यमंन्दिरे आपःक्षीरङ्कुशाग्राणिघृतन्दधितथामधुरक्तानि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करवीराणितथारक्तश्चचन्दनम् अष्टाङ्गएवह्यर्घोवैब्रह्मणापरिकीर्तितइति अथप
ञ्चोपचाराः तत्रादौगन्धाः तत्रभविष्यपुराणम् चन्दनागुरुकर्प्पूरकुङ्कुमोशीरपद्म
कैः अनुलिप्तोनरैर्ब्भक्त्यादद्दातिमनसेप्सितम् पद्मकम् पद्मकाष्ठम् तथाकालेयक
न्तुरुष्कश्चरक्तचन्दनमेवच यान्यात्मनःसदेष्टानितानिशस्तान्युपाकुरु तुरुष्कम् शि
ल्हकम् अथविहितपुष्पाणि अगस्त्याऽटरुषकाऽतिमुक्ताऽर्क्काऽशोकाऽम्रातको
त्पल कदंब करवीर कर्णिकार काञ्चनाल कालतुलसी काशाकिंशुककिङ्किरात कु
ङ्कुम कुन्द कुब्जक कुरण्टक कुश कुशेशय केशर कैरव चम्पक जया जाती जवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



तगर तिरीटक त्रिसन्ध्या तिलक द्रोण नवमल्लिका नागकेशर नीलोत्पल पद्म पाटला यावन्तिक पीताम्लान पुन्नाग बाण वृहती मन्दार मल्लिका मालती मुकुर यूथी रोकन रक्तोत्पल लोध वक बकुल बर्ब्बरमल्लिका वासन्ती विचकिल वोडक शमी शतपत्रिका शतपत्र शाल्मली श्वेतमन्दार श्वेतपद्म सिंहास्यानि विहितानिषिद्धन्तु पिण्डीतगरम् गौडनिबन्धे दमनक द्रोण मन्दार शिंशपा पुष्पाणि निषिद्धान्युक्तानि निषिद्धानितु अपराजिता आम्रातक उन्मत्त काञ्ची कृष्णला कुसुम्भ वनतगरी पुष्पाणि पत्रेषु कालतुलसी केतकी तमाल तुलसी दूर्व्वा भृङ्गराज विल्व शमी शत



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पत्रिकापत्राणिविहितानि गौडास्तु सूर्य्यलंबोदराभ्यांबिल्वपत्रंनदातव्यम् बिल्वप त्रमुपक्रम्य पूज्याएतेनवैदेवाःसूर्य्यलम्बोदरौविनेति बृहद्धर्म्मपुराणवचनादिति वदन्ति विहितपुष्पपत्राभावेविहितानिषिद्धानि तदभावेनिषिद्धवर्ज्जमन्यदप्युपा देयम् तदभावेत्वाह अलाभेनतुपष्पाणाम्पत्राण्यपिनिवेदयेत् पत्राणामप्यला भेतुफलान्यपिनिवेदयेत् फलानामप्यलाभेतुतृणगुल्मौषधीरपि ओषधीनामला भेतुभक्त्याभवतिपूजितःइतिभविष्यपुराणम् पत्राण्यपीति विहितपुष्पवृक्षपत्राण्य पीत्यर्थः ओषधीरपीत्यपिना तण्डुलजलानीतिशूलपाणिः तथाप्रत्त्येकमुक्तपुष्पेभ्यो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. ५२ दशसौवर्ण्णिकम्फलम् स्रजोभिर्म्मुनिशार्दूलतदेवद्विगुणम्भवेत् मुकुराणिकदम्बा भा. प्र.११

निरात्रौदेयानिभानवे दिवाशेषाणिपुष्पाणिदिवारात्रौचमल्लिका गन्धवन्त्यपवित्रा

णि कुसुमानिविवर्ज्जयेत् गन्धहीनमपिग्राह्यंपवित्रंयत्कुशादिकमित्यादि धूपास्तु

सघृतगुग्गुलु कुन्दुरु कृष्णागुरु सघृतमाहिषाख्यगुग्गुलु श्रीवास सघृतविल्व देव

दारु सौगन्धिक तुरुष्क अगुरु नमेरु कस्तूरी कर्प्पूरयुक्तागुरुरूपाविहिताः कन्दुरुः

सल्लकीरसः श्रीवासः सरलोद्भवः सौगन्धिकः सौधेन इतिप्रसिद्धः तुरुष्कःसिल्ह ५२

कः अस्यदीपेघृतम् तदभावेतैलं तच्चदत्वाननिर्व्वापयेदित्यादिसामान्यप्रकरणोक्तम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रानुसन्धेयम् नैवेद्यानितु सर्व्वांविकसरापूप पायस गुडसर्व्युक्तमोदक रसाला शा
लितण्डुलप्रस्थषष्टिकौदन यव गोधूम तिल मुद्ग माष मांस पक्कफलपानकादीनि
विहितानि रसालातूक्तासूपकारतन्त्रे अर्द्धाढकं सुचिरपर्य्युषितस्यदध्नः खण्डस्य षो
डशपलानि शशिप्रभस्य सर्प्पिःपलं मधुपलं मरिचद्विकर्षं शुंठ्याः पलार्द्धमपि
चार्द्धपलंचतुर्णा श्लक्ष्णेपटेललनयामृदुपाणिघृष्टा कर्प्पूरधूलिसुरभीकृतभाण्डसं
स्था एषावृकोदरकृतासरसारसालायास्वादिताभगवतामधुसूदनेनेति अस्यरक्तव
स्त्रम्प्रियमन्योपिरक्तोपहारइतिछन्दोगाह्निकम् अस्यनैवेद्यम्मगेभ्योदेयम् सूर्य्यम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. ५३ धिकृत्यभविष्यपुराणे प्रणम्यदण्डवद्भूमौनमस्कारेणयोर्च्चयेत् सयाङ्गतिमवाप्नोति भा. प्र. ११
नताङ्क्रतुशतैरपीत्युक्तेः सूर्य्यप्रणामोमहाफलः प्रदक्षिणन्तुसप्तवारङ्कार्य्यं एकञ्च
ण्ड्यांरवौसप्तत्रीणिकुर्य्याद्विनायके चत्वारिकेशवेकुर्य्याच्छिवेचार्द्धप्रदक्षिणमितिप्रा
गुक्तेः दक्षिणावर्त्तेनदेवमुद्दिश्यसर्व्वदिक्षुभ्रमणम्प्रदक्षिणं गौडाः विष्णोरग्रेतुसूर्य्य
स्यभ्रमरिकारूपाम्प्रदक्षिणान्नकुर्य्यात् विष्णुस्मृतौ कृष्णस्यपुरतोनैवसूर्य्यस्यैवम्प्र
दक्षिणाम् कुर्य्याद्भ्रमरिकारूपांवैमुख्यापादनीम्प्रभोरित्यभिधानात् सूर्य्यसन्नि ५३
धौशङ्खोनवादनीयः शिवागारेभल्लकञ्चसूर्य्यागारेचशङ्खकम् दुर्ग्गागारेवंशवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्यम्मधुरीञ्चनवादयेत् इतिगौडदाक्षिणात्यधृतवचनात् एतत्स्नानीयजलंलङ्घनयो ग्यस्थलादन्यत्रप्रक्षेपणीयम् यथानलङ्घयेत्कश्चित्स्नपनंभास्करस्यच तथाका र्य्यम्प्रयत्नेनलङ्घितंह्यशुभावहम् तामिस्त्रन्नरकङ्कर्त्तालङ्घयेद्यःसरौरवम् इतिभ विष्यपुराणात् तामिस्त्रंरौरवमित्युभयत्रापियातीतिशेषःकर्त्तालङ्घनानुकूलवर्त्म्म क्षेपादेरितिछन्दोगाह्निकम् लङ्घनस्यस्नपनस्यवेतिशूलपाणिः गौडनिबन्धे उदके तरुमूलेवानिर्म्माल्यन्तस्यसन्त्यजेत्इतिभागवतीयात्तरुमूलोदकान्यतरत्रनिर्म्मा ल्यप्रक्षेपणमुक्तं अथायमत्रप्रयोगः अक्षतान्गृहीत्वा यथोक्तन्ध्यायन् ओंभूर्भुवः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



स्वर्भगवन्सुर्य्य इहागच्छेत्यावाह्य इहतिष्ठेतिजलादौपूजाधारेस्थापयित्वा पाद्य
मादाय इदम्पाद्यम् ओंसूर्य्यायनमइतिदद्यात् ततएषोर्घइत्यर्घन्दत्वाइदमाचमनी
यम् इदम्स्नानीयम् इदम्पुनराचमनीयं एषगन्धः इदमनुलेपनव्वा इदंरक्तचंन्दनं
इदमक्षतम् मन्त्रमुच्चार्य्यताद्विनावा इदम्माल्यम् एतानिपुष्पाणिइदम्पुष्पमितिवा
त्रिःपुष्पाणि एतान्यमुकपत्राणि एषधूपः एषदीपः इदंनैवेद्यामितिक्रमेणपाद्यार्घाच
मनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यानिचपृथक्पृथक्दद्यात्
अथवा आवाह्य इहतिष्ठे त्युक्ताधारेस्थापयित्वा एतानिपाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपु



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नराचमनीयानि ओंसूर्यायनमइतिसमस्तवाक्येनैकदैवपाद्यादीनिदत्वा गन्धा
दिपञ्चकंपृथग्दद्यात् अथवापाद्यादिपुनराचमनीयान्तानिसमस्तवाक्येनदत्वाग
न्धमक्षतम्पुष्पाणिचदत्वाएतानिधूपदीपनैवेद्यानीतिसमस्तवाक्येनधूपादीनिदद्या
त् ततोदीक्षितश्चेज्जप्त्वाऽदीक्षितोजपमकृत्वैवसप्तप्रदक्षिणानिकृत्वाप्रणम्यस्तुत्वाध्या
त्वाओंभगवन् सूर्य्यपूजितोसिप्रसीदक्षमस्वेतिप्रार्थ्यस्वस्थानङ्गच्छेतिविसर्ज्जयेदि
तिछन्दोगाह्निकम् क्षमस्वेतिविसर्जयेदितिवाचस्पतिमिश्रादयःततःओंचण्डभास्क
रायनमइतिनिर्म्माल्यंक्षिपेदितिदाक्षिणात्याः एतन्नैवेद्यम्मगातिरिक्तब्राह्मणादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



भिर्न्नभक्षणीयम् निर्म्माल्यन्नोपभोक्तव्यंरुद्रस्यतपनस्यच उपभुज्यचतन्मोहान्न
रकेपच्यतेध्रुवामिति गौडधृतभविष्यपुराणात् इतिपूजापङ्कजभास्करेसूर्य्यपूजाकथ
नन्नामैकादशःप्रकाशः ११ अथगणपतिपूजा सायथातत्रप्रथमम् गजवक्त्रम्
त्रिलोचनम् लम्बोदरम् चतुर्ब्बाहुम् व्यालयज्ञोपवीतिनम् स्तब्धकर्णम् बृहच्छुण्ड
म् एकदन्तम् पृथूदरम् दक्षिणोर्द्ध्वकरेणस्वदन्तम् दक्षिणाधःकरेणोत्पलम् वामोर्ध्व
करेणलड्डुकम् वामाधःकरेणपरशुञ्चदधानम् बृहत्सङ्क्षिप्तवदनम् पीनस्कन्धा
ङ्घ्रिपाणिकम् ऋद्धिबुद्धिभ्यायुँक्तम् मूषकवाहनम् गणपतिंध्यात्वाऽक्षतमादाय



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओंभूर्भुवःस्वर्भगवन् गणपते इहागच्छे
हतिष्ठेत्यावाह्य स्थापयित्वा ओंआतूनइन्द्र
क्षुमन्तञ्चित्रंग्राभंसङ्गृभाय महाहस्तीद
क्षिणेन इतिमन्त्रेण सामवेदी ओंगणाना
न्त्वागणपतिँहवामहे प्रियाणान्त्वाप्प्रिय
पतिँहवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिँह
वामहेव्वसोमम आहमया निगर्ब्भधमात्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



मयासिगर्ब्भधम् इतिमन्त्रेणयजुर्व्वेदी ओंगणपतयेनमः इतिसामान्यप्रकरणोक्त पाद्यादिभिर्व्विसर्ज्जनान्तैःपूजयेत् प्रदक्षिणञ्चास्यत्रिःकुर्य्यात् एतत्पूजने अशोक तगर वासन्ती बिल्वपत्र तुलसीपत्राणि निषिद्धानि रक्तोपहारश्चास्यातिप्रियइति पू जाप०स्करेगणपतिपूजाकथनंन्नामद्वादशः प्रकाशः १२ अथाग्निपूजा सायथा दी प्तंसुवर्णवपुषं चन्द्रार्द्धाकारासनास्थितं बालार्क्कसदृशवदनं यज्ञोपवीतिनं वामहस्त धृतकमण्डलुम् दक्षिणहस्तधृताक्षसूत्रम् मूर्द्धसप्तशिखम् कुण्डस्थमजवाहनमुज्ज्व लमग्निन्ध्यात्वा ओंअग्निन्दूतव्वृँणीमहेहोतारंव्विश्ववेदसम् अस्ययज्ञस्यसुक्रतुं



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतिमन्त्रेणसामवेदी ओं अग्निन्दूतम्पुरोद
धेहव्यवाहमुपब्रुवे दे वा ँ आसादयादिह
इतिमन्त्रेणयजुर्व्वेदी ओंअग्नयेनम इतिसा
मान्योपचारप्रकरणो क्तपाद्यादिभिः विस
र्ज्जनान्तैः पूजयेत् अ स्यापि त्रिः प्रदक्षिण
ङ्कार्य्यम् इतिपूजा पङ्कजभास्करेऽग्निपूजा
कथनन्नाम त्रयोदशः प्रकाशः १३ ॥छ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





अथदुर्ग्गापूजा तत्रभविष्ये यःसदापूजयेद्दुर्ग्गाम्प्रणमेद्वापिभारत सयोगीसमुनि
र्द्धीमांस्तस्यमुक्तिःकरेस्थिता तथा अग्निहोत्राणिकर्म्माणिवेदयज्ञाःसदक्षिणाः च
ण्डिकार्च्चार्च्चनस्यैतेलक्षांशेनापिनोसमाः इत्युक्तेर्द्दुर्ग्गापूजामहाफला साचसामान्या
धारप्रकरणोक्ताधारेकार्य्या शूलेचातिप्रशस्ता अस्याध्यानम् मत्स्यपुराणे दशभुजा
जटाजूटयुक्ता अर्द्धेन्दुकृतशेखरा त्रिलोचना पूर्णेन्दुसदृशानना अतसीपुष्पवर्णा
सुलोचना नवयौवन सय्युँक्ता सर्व्वाभरणभूषिता चारुदशना पीनोन्नतपयोधरा त्रि ५७
भङ्गस्थानसंस्थाना ऊर्द्ध्वाधःक्रमेण दक्षिणैर्ब्बाहुभिः त्रिशूल खङ्ग चक्र तीक्ष्णबाण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शक्तिधरा ऊर्द्ध्वाधः क्र
टकपूर्णचापपाशाङ्कु
धरा अधस्ताद्द्विशिर
द्धवखड्गपाणिरक्तर
रितनेत्र नागपाशवे
ननदेवीशूलनिर्भिन्न
तवामपादाङ्गुष्ठा स

मेण वामैर्बाहुभिः खे
श घण्टापरश्वन्यतर
स्कमहिषशिरश्छेदो
त्कीकृताङ्गः रक्तविस्फा
ष्टित भ्रुकुटी भीषणा
हृदय माहिषोपरिधृ
पाश वामहस्त धृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



दानवकेशावमद्रुधिर वक्त्रासिंहोपरिधृतदक्षिणपादाइति अस्याः पूजामन्त्रस्तु ओं
जातवेदसेसुनवा मसोममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदतिदुर्ग्गाणिविश्वानावे
वसिन्धुन्दुरितात्यग्निः इति ओंइमँस्तोममर्हतेजातवेदसेरथमिवसम्महे मामनीष
याभद्राहीनःप्रमतिरस्यसंसद्यग्नेसख्येमारिषामावयन्तव इतिवासामवेदिनां ओंअ
म्बे आम्बिके म्बालिकेनमानयतिकश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीं
इतियजुर्वेदिनां अस्याअर्घः आपःक्षीरङ्कुशाग्राणि अक्षतादधितण्डुलाः सहासि
द्धार्थका दूर्व्वाकुङ्कुमोरोचनामधु अर्घोयङ्कुरुशार्द्दूलद्वादशाङ्गउदाहृतइति अक्ष



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तायवाइतिनिबन्धकारः सहा सहदेवानामओषधी गन्धास्तु छन्दोगाह्निके चन्द
नागुरु कर्प्पूर कुङ्कुम कृष्णागुरु रक्तचन्दनानि पुष्पाणितु अगस्ति अतिमुक्त अ
पराजिता सर्व्ववर्णा अर्क्क अर्ज्जुन अशोक उत्पल कदम्ब करवीर किङ्किरात कर्णि
कार किंशुक कुङ्कुम कुब्जक कुन्द कुमुद कुरुण्टक कुशमञ्जरी कूष्माण्ड केतकी
चम्पक जाती जवा तगर तिरीटक दमनक द्रोणा धान्यपुष्प धुत्तूर नवमल्लिका नाग
नीलोत्पल पङ्कज पद्म पुन्नाग ब्बन्धूक ब्रहती भद्रा मन्दार मरुबक मल्लिका माधवी
यूथी रक्तपङ्कज रक्तोत्पल लोध्र बक बकुल बर्वरी विचकिल शमी शतपत्रिका शिंश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. पा श्वेतपङ्कज सिंदुवार सर्वौषधी सुरभी रूपाणि विहितानि अत्रनिषिद्धानिनसान्ति भा.
५९ पुष्पाणि मन्दारार्क्कयोरत्रविधानाद्देवीनामर्क्कमन्दाराविति शातातपवचनन्दुर्ग्गेतर प्र.१४
देवीपरम् सामान्यविशेषन्यायादितिशूलपाणिः लक्ष्म्यास्तुद्रोणपुष्पमप्यागमेनि
षिद्धम् पत्राणितु उदुम्बर दमनक धान्यनिम्ब मरुबक बिल्व ब्रह्मवृक्षलता
सर्वौषधीनांविहितानि दूर्वातु अङ्कुररूपा कोमला दूर्व्वाङ्कुरैश्चकोमलैरित्यु
क्तेः दुर्ग्गान्नैवतुदूर्व्वयेति निषेधस्तु दूर्वाङ्कुरातिरिक्तविषयः सामान्याविशेषन्या ५९
यात् ब्रह्मवृक्षलता ब्रह्मवृक्षः पलाशस्तस्यलतामाधव्यादिः विहितपुष्पपत्राभा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वे ओषधीभिस्तदभावेजलेन तदलाभे मानसीपूजाकार्य्या धूपे गुग्गुलु सघृतगुग्गु
लु सघृतमहिषाख्यगुग्गुलु कृष्णागुरु अगुरु शिल्हक सघृतबिल्वकर्पूरयुक्तागुरु
कर्प्पूर चन्दनानि विहितानि दीपे घृतन्तैलञ्चसामान्यप्रकरणोक्तमेवविहितम्
विशेषतः स्वशरीरवसाविहिता नैवद्यंसामान्यप्रकरणोक्तमेव प्रदक्षिणञ्चैकवारम्
एकञ्चण्ड्यामित्युक्तेः अस्याःप्रणामेफलम् सर्व्वयज्ञोपवासेषुसर्व्वतीर्थेषुयत्फलम्
तत्फलल्लँभतेवीरप्रणम्यशिरसासतीम् सम्प्रसारितहस्तोयोदण्डवत्प्रणतोभुवि च
ण्डिकापुरतोवीरसया।तिपरमाङ्गतिम् सतीम् दुर्ग्गाम् छित्वाभित्वाचभूता।निहत्वास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



र्व्वमिदञ्जगत् प्रणम्याशिरसादेवींसर्व्वपापैःप्रमुच्यते पूजाप्रयोगस्तु अक्षतान्गृ
हीत्वायथोक्तरूपान्दुर्ग्गान्ध्यायन् ओंभूर्भुवःस्वर्भगवति दुर्ग्गेइहागच्छेत्यावाह्ये
हतिष्ठेति स्थापयित्वा ओंदुर्ग्गायैनमइति पाद्यादीनिदत्वा ओंभगवतिदुर्ग्गेपूजि
तासिप्रसीद क्षमस्वेतिप्रसाद्यस्वस्थानङ्गच्छेतिविसर्ज्जयेदिति इतिपूजापङ्कजभा
स्करेदुर्ग्गापूजनकथनन्नामचतुर्दशः प्रकाशः १४ अथशिवपूजा साचप्रतिमाद्यपे
क्षयालिङ्गेतिप्रशस्ता अर्च्चायामर्च्चयेद्योमाम्पूर्णवर्षशतन्नरः एकञ्चदिवसल्लिङ्गेसम
मेतन्नसंशयः नतुष्यामर्य्यार्च्चितोभक्त्यातथादेविनगात्मजे लिङ्गेर्च्चितोयथानित्यम्परि



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुष्यामिपार्व्वति इतिस्कन्दपुराणेगौरीम्प्रतिशिववाक्यात् लिङ्गञ्चमृद्भस्मगोमय पिण्डताम्रकांस्ययज्ञियवृक्षस्फटिकरत्नाश्मादिभिर्विधेयम् भविष्यपुराणे यःकृत्वा पार्थिवंलिङ्गमर्चयेच्छुभवेदिकं इहैवधनवान्श्रीमानन्तेरुद्रोभिजायते शुभवेदिकंशोभनवेदिकायुक्तंवेदिकापिण्डिका तथा आर्द्रामलकमात्रन्तुकृत्वालिङ्गंहिरण्मयम् सम्पूज्यरत्नखचितंशिवलोकेमहीयते मृद्भस्मगोशकृत्पिण्डताम्रकांस्यमयन्तथा कृत्वा लिङ्गंसकृत्पूज्यवसेत्कल्पायुतन्दिवि इत्याभिधानात् पार्थिवंसर्व्वसिद्धिदमित्यागमेदर्शनाच्च देवीपुराणे वार्क्षंवित्तप्रदंलिङ्गंस्फाटिकंसर्व्वकामदं नर्म्मदागिरिजंश्रेष्ठम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पु. पं. न्यद्वापिहिलिङ्गवत् कृत्वापूजयविप्रेन्द्रलप्स्यसेचेप्सितम्फलं वार्क्षम् यज्ञियवृक्षभ भा.
६१ वं कृत्यप्रदीपे सौवर्णरत्नघटितव्वाँशिवलिङ्गंसकृतत्पूजयतः शिवलोकमहितत्वम्फ प्र. १५
लमित्युक्तं पिण्डिकालक्षणमुक्तालिङ्गपुराणेच एवंरत्नमयङ्कुर्य्यात्स्फाटिकम्पार्थि
वन्तथा शुभदारुमयव्वाँपियद्वामनसिरोचते इत्याभिधानाच्च अन्यत् शैलान्तरजम्
लिङ्गवत् लिङ्गाकारं अत्रच लिङ्गङ्कृशमतिक्षुद्रमतिस्थूलम् चिपिटाकारम् पिण्डि
काहीनं पिण्डिकाविषमवर्णव्व्यङ्गपिण्डिकम्मानोन्मानहीनम् मानोन्मानहीनपि ६१
ण्डिकञ्चनिषिद्धम् रत्नजलिङ्गेबाणलिङ्गेचलिङ्गपिण्डिकयोर्व्विभिन्नद्रव्यजत्वमपि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नदोषाय मणिलिङ्गेदीप्तिमात्रमपेक्षितन्नतुमानोन्मानादिकम् तदुक्तम् शूलपाणौ म
णिलिङ्गादौमानादिहानिरपिनदोषाय तदुक्तं मयग्रन्थे प्रथमपटलेशिवपूजाप्रकणे
समस्तमणिजातीनान्दीप्तिःसन्निधिकारणम् मानोन्मानप्रमाणादितेषुग्राह्यन्नवैबु
धैः स्फटिकमुपक्रम्यपञ्चरात्रे अत्यन्तगुणभूयिष्ठङ्किञ्चिद्दोषसमन्वितम् अग्निहोत्रो
पमंल्लिङ्गन्नतद्भयकरम्भवेत् मयग्रन्थे रत्नजम्बाणलिङ्गव्वाँसर्व्वसाध्वन्यलक्षितम्
इतिएतट्टीकायाम् अर्चायाश्चिद्रूपत्वात् पिण्डिकायाःप्रकृत्यात्मकत्वात् तयोर्य्यो
गः प्रतिष्ठेतिसाचप्रकृत्यात्मनोरैक्यादेकद्रव्यजेत्युक्तं रत्नजलिङ्गबाणलिङ्गयोस्तुवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू.पं. शेषमाह साध्वन्यलक्षितामिति अन्यथालक्षितमपिसाधु अन्यद्रव्यजापिसाध्वित्य भा.
६२ र्थः तदुक्तम् द्वादशसाहस्रेपिङ्गलातन्त्रे रत्नजेबाणलिङ्गेवातदन्यद्रव्यजापिसा सापिं प्र.१५
डिकेत्यर्थइत्युक्तं बाणलिङ्गमापिकापिलंनिषिद्धं पक्वजम्बूफलाकारन्त्वतिप्रशस्तमिति
छन्दोगाह्निकादौ श्रीदत्तादयः पार्थिवलिङ्गे सकृदेवपूजाकार्य्येतिकृत्यप्रदीपेभिहितं
स्मृतिदीपिकायाम् आवाहनविसर्ज्जनप्रतिष्ठाबाणलिङ्गेनसन्ति तन्नैवेद्यञ्चग्राह्य
मित्युक्तम् शिवपूजासदोदङ्नुखेनैवविधेया यजमान.शम्भोर्जगत्संहारकर्तुः प्राची ६२
न्न समाश्रयेत् संहारकर्त्तुःसाम्मुख्यनिषेधात् पञ्चवक्रपक्षेप्रधानवँक्त्रम्प्राग्व्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्थितम् एकवक्रपक्षेतुसुतरामित्येतदर्थकात् नप्राचीमथतःशम्भोर्नोदीचींशक्तिसं
स्थिताम् नप्रतीचीय्यँतःपृष्ठमतोदक्षंसमाश्रयेदिति गौडधृतरुद्रयामलीयात् ज
लेतुशिवपूजानिषिद्धा स्वधर्म्मत्यागिनाब्राह्मणेतरेण शिवपूजानकार्य्येतिपुरस्तादु
क्तम् काम्यशिवपूजाकालेभस्मत्रिपुण्ड्रकरणम् रुद्राक्षधारणञ्चावश्यकम् विनाभ
स्मत्रिपुण्ड्रेणविनारुद्राक्षमालया पूजितोपिमहादेवोनस्यात्तस्यफलप्रदइतिवचना
त् रुद्राक्षधारणफलम्स्कांदेरुद्रवाक्यम् हस्तेबाहौतथाकण्ठेमूर्द्ध्निरुद्राक्षधारणा
त् अधृष्यःसर्व्वभूतानांरुद्रवद्विचरेद्भुवि सुरासुराणांसर्व्वेषांवन्दनीयोयथाशिवः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. ध्यानधारणाहीनोपिरुद्राक्षन्धारयेत्तुयः सर्व्वपापविनिर्म्मुक्तःसयातिपरमाङ्गतिं ल भा.
६३ क्षन्तुजपतः पुण्यङ्कोटिर्भ्भवतिसङ्ख्यया दशकोटिसमम्पुण्यन्धारणाल्लभतेनरः प्र.१५
यावद्देवशरीरस्थन्तावन्मृत्युर्न्नबाधते अमन्त्रधारणादेषाङ्गुणाएतेप्रकीर्त्तिताःसम
न्त्रंधारयेद्यस्तुफलंव्वक्तुंनशक्यतेइति एवञ्च विनामन्त्रेणयोधत्तेसयातिनरकन्ध्रुव
तिमिनिंदामंत्रप्ररोचनामात्रपरेतिशूलपाणिः अथध्यानम्मत्स्यपुराणीयं आपीनो
रुभुजस्कन्ध स्तप्तकाञ्चनसन्निभः अर्क्कवच्छुक्लरश्मिसमूहयुक्तः चन्द्राङ्कितजटः वि ६३
भुर्जटामुकुटधारी षोडशवत्सराकृतिः बाणहस्ताभबाहुःवृत्तजङ्घोरुमण्डलः ऊर्द्ध्वके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शः दीर्घायतलोचनः व्याघ्रचर्म्मपरीधानः कटिसूत्रत्रयान्वितः हारकेयूरसम्पन्नःभु
जङ्गाभरणः नानाभरणभूषि तबाहुःपीनोरुगण्डफलकः कु
ण्डलद्वयालङ्कृतः आजानुलं बबाहुः सौम्यमूर्त्तिःसुशोभनः
दक्षिणैर्ब्बाहुभिर्द्धृतखड्गश क्तिदण्डशूलवरः वामैर्ब्बाहु
भिर्द्धृतखेटककपालनागरवट्वा ङ्गाक्षमालइति शङ्खस्थज
लंशिवेनिषिद्धंनशिवंशङ्खवा रिणेति पात्रविचारप्रकरणलि
खितवचनात् पूजामन्त्रस्तु ओं आवोराजानमध्वरस्यरु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. द्रंहोतारंसत्ययजंरोदस्योः अग्निम्पुरातनायित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसेकृणुध्वामि भा.
६४ तिसामगानाम् ओंत्र्यम्बकँयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् उर्व्वारुकमिवबन्धना प्र.१५
न्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् इति ओंनमःशम्भवायचमयोभवायचनमःशङ्करायचमय
स्करायचनमः शिवायचशिवतरायच इतिवायजुर्वेदिनाम् ओंनमःशिवायेतिद्विजा
तीनाम् नमःशिवायेतिस्त्रीशूद्रयोर्ज्ञेयः अथपञ्चोपचाराः गन्धद्रव्याणि चन्दन अगु
रु कर्प्पूर कुङ्कुम पद्मकाष्ठ उशीर कस्तुरी कालेयक कृष्णागुरु शिल्हाक आत्मेष्ट ६४
इत्येतानि पुष्पाणिअपराजिता अपामार्ग अर्क्क अर्ज्जुन अशोक उदुम्बर उशीर क

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राट कारिका कदम्ब करवीर कर्णिकार कल्हार काञ्चनाल काश किङ्किरात कुङ्कुम
कुटज कुब्जक कुमुद कुरवक कुश कूष्माण्ड कुसुम्भ केशर कैरव गिरिमल्लिका च
म्पक चित्रक चूत जया जाती तगर तिल दमनक द्रोण धवल धुत्तूर नागकेशर नी
लोत्पल नेपाली पद्म पलाश पाटला पुंनाग बाण बृहती भृङ्गराज मन्दार मल्लिका
मोकन रक्तोत्पल वक वकहुल बकुल विचकिल विजय बिल्व शण शमी शाल्मली
शिखिनी शिंशपा श्वेतपद्म श्वेतमन्दार सेवन्ती स्थलकमल इत्येतानिविहितानि
भविष्ये कनकानिकदम्बानिरात्रौदेयानिशङ्करे दिवाशेषाणिपुष्पाणिदिवारात्रौचम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. ल्लिकाइतिविशेषः अत्रदमनकम् चैत्रशुक्लचतुर्द्दश्याव्विँहितम् वैशाखादिद्वादशसु भा.
६५ मासेषु यथाक्रमम्म पाटलया १ पद्मैः २ बिल्वकल्हारैः३ नवमल्लिकया ४ कदम्बच प्र.१५
म्पकैः५ पङ्कजजातीभ्याम्म ६ शतपत्रिकया ७ नीलोत्पलैः८ कुब्जकैः ९ कुन्दैः १०म
रुव केन११ शतपत्रैः १२ पूजासर्व्वयज्ञसर्व्वदानफला अङ्कोल करञ्ज कुन्द केतकी
धातकी निम्ब बन्धूक भण्टिका मञ्जिष्ठ मदन्तिका माधवी विभीतक यूथिका शिरी
ष श्वेतपाटला श्वेतापराजिता सर्ज्ज सिन्दुवाराणांपुष्पाणि पत्राणिच निषिद्धानि व ६५
र्षव्यापिशिवपूजायाम् कुन्दपुष्पम्माघे विहितमन्यथातुनिषिद्धम्माघेपि शूलपाणौ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तु दमनकपुष्पञ्च शिवशयनादारभ्य फाल्गुनान्तय्यँावदेव निषिद्धमित्युक्तम् पत्रा
णितु अपामार्ग्ग उदुम्बरबिभीतक बिल्व शमीनाम् विहितानि विहिपुष्प पत्राला
भेन्येनापिनिषिद्धवर्जितेनपूजाकार्य्या तदलाभे विहितपुष्पवृक्षीयपत्रैःतेषामप्यला
भे फलेन तदलाभे तृणगुल्मौषधि तण्डुल जलैः तदलाभे मानसीपूजाकार्य्या धूपा
स्तु गुग्गुलु सघृतमहिषाख्यगुग्गुलु कृष्णागुरु श्रीवास सघृतबिल्व अगुरु कुन्दुरु
देवदारु सौगन्धिक विल्वकर्पुरागुरु सर्ज्जमहिषाख्यगुग्गुलु साज्यदधिन्थजाविहि
ताः सक्षीर गुग्गुलुश्चामावास्यायाविँहितः चिन्तामणौतु सघृतगुग्गुलुरपिधूपेवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पू. पं. ६६ हितः दीपेघृतंविहितन्तैलानिषिद्धम् नैवेद्यं मांसेतरं सामान्यप्रकरणे उक्तमेव विशेष भा.
तस्तु कृत्यप्रदीपे गुडखण्डस्य घृतानाम्भक्ष्याणाङ्घृतपाचितानाव्वाँनिवेदनेशत प्र. १५
गुणफलं सुपक्वमातुलुङ्गादिदानेप्येतदेवफलम् शिवस्तुतौजपेचतदेवफलमुक्तम् अ
थारात्रिकाविद्यापतिठक्कुरकृतशिवसर्व्वस्वे करोत्यारात्रिकय्यँस्तुबहुभावपुरःसरः
प्राप्यज्ञानम्प्रयाणान्तेगमिष्यत्यक्षयम्पदम् आरात्रिकाआरतिरितिप्रसिद्धा एव
ञ्चअद्यप्रयाणकालोत्तरतत्वज्ञानप्राप्तिपूर्व्वकाक्षयपदगमनकामनयाभगवतःशिव ६६
स्यारात्रिकमहङ्करिष्ये इतिसंकल्पःकार्य्यइति अथनमस्कारः प्रणम्यदण्डवद्भूमौन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्कारेणयोर्च्चयेत् सयाङ्गतिमवाप्नोतिनतत्क्रतुशतैरपि भविष्ये जानुभ्याञ्चैवपा
णिभ्यांशिरसाचविचक्षणः कृत्वाप्रणामंसर्व्वेशेसर्व्वान्कामानवाप्नुयात् तीर्थकोटिस
हस्राणितीर्थकोटिशतानिच महादेवप्रणामस्यकलान्नार्हन्तिषोडशीं गौडनिबन्धे शि
वपूजने मुखवाद्यमतिप्रशस्तं गन्धपुष्पनमस्कारैर्म्मुखवाद्यैश्चसर्व्वतः योमामर्च्चयते
तत्रतस्यतुष्याम्यहंसदा इतिशिवपुराणादिति प्रयोगस्तु अक्षतान्गृहीत्वा जलातिरि
क्ते पूर्व्वोक्ताधारे ओंभूर्भुवःस्वर्भगवञ्छिवइहागछेहतिष्ठेत्यावह्य यथाधिकारम्म
न्त्रमुच्चार्य्य तद्विनावा ओंशिवायनम इतिपाद्यादिभिःपूजयित्वा अर्द्धप्रदक्षिणीकृत्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

प्रणम्यस्तुत्वाध्यात्वा ओंभगवञ्छिवपूजितोसिप्रसीदेतिप्रसाद्यस्वस्थानङ्गच्छेतिवि
सर्ज्जयेत् ओंचण्डेश्वरायनमइतिनिर्म्माल्यन्त्यजेत् दाक्षिणात्यनिबन्धे सिद्धान्तशेख
रे धराहिरण्यगोरत्नताम्ररत्नांशुकादिकान् विहायशेषनिर्माल्यञ्चण्डेशायनिवेदये
त् इत्याद्युक्त्वा लिङ्गेस्वयम्भवेबाणेरत्नजेरसनिर्मिते सिद्धप्रतिष्ठितेचैवनचण्डादिकृ
तिर्भवेदित्यभिहितं ततोनैवेद्यम्भस्माङ्गेभ्यःप्रतिपादयेदिति एतन्नैवेद्यस्याभक्षत्वे
पद्मपुराणीयशिववाक्यं अनर्हम्ममनैवेद्यम्पत्रम्पुष्पम्फलञ्जलं शालग्रामशिलाल ६७
ग्नंसर्व्वंय्याँतिपवित्रतामितीतिशूलपाणिः स्मृतिदीपिकायांबाणलिङ्गनैवेद्यस्यभक्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्वमुक्तम् बाणलिङ्गम्प्रकृत्य शिवनारदसंवादे ग्राह्याग्राह्यविचारोत्रशिवलिङ्गेनावि
द्यते तन्नैवेद्यादिकङ्ग्राह्यमित्यर्थइतिशब्देन दाक्षिणात्यास्तु शैवसौरनिर्म्माल्यनैवे
द्यभक्षणेचान्द्रायणमित्युक्त्वा शालग्रामोद्भवेलिङ्गेबाणलिङ्गेस्वयम्भुवि रसलिङ्गेत
थार्षेचसुप्रसिद्धप्रतिष्ठिते हृदयेचन्द्रकान्तेचस्वर्णरौप्यादिनिर्म्मिते शिवदीक्षावता
भक्तेनेदम्भक्ष्यमितीर्य्यते तथा बाणलिङ्गेस्वयम्भूतेचन्द्रकान्तेहृदिस्थिते चान्द्राय
णसमञ्ज्ञेयंशंभोर्न्नैवेद्यभक्षणमित्युक्त्वा यत्रचण्डाधिकारोस्तितद्भोक्तव्यन्नमानवैःच
ण्डाधिकारोनोयत्रभोक्तव्यंतच्चभक्तितइत्युक्तवन्तः लिङ्गद्वयमेककालेएकेनपुरुषेण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



नार्च्चनीयम् गृहेलिङ्गद्वयन्नार्च्यं शालग्रामद्वयन्तथा द्वेचक्रेद्वारकायास्तुनार्च्यंसूर्य्य
द्वयन्तथा शक्तित्रयन्तथानार्च्यङ्गणेशत्रयमेवच द्वौशङ्खौनार्च्चयेच्चैवभग्नाञ्चप्रतिमा
न्तथा नार्च्चयेच्चतथामत्स्यकूर्मादिदशकन्तथा इतिविष्णुधर्मोक्तेरित्युक्तवन्तश्च गौड
निबन्धेबृहन्नारदीये नमेद्यःशूद्रसंस्पृष्टल्लिँङ्गव्वाँहरिमेववा ससर्व्वयातनाभोगीया
वदाभूतसंप्लवमिति इतिपूजापङ्कजभास्करेशिवपूजाकथनन्नामपंचदशःप्रकाशः १५
अथविष्णुपूजा तत्प्रशंसायथा अग्निपुराणे येर्च्चयन्तिसदाविष्णुन्निश्चलेनान्तरात्म
ना नतेभूयोभिजायन्तेश्वेतद्वीपनिवासिनः निवासिनइत्यस्यभवन्तीतिशेषः भविष्य



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुराणे येपूजयन्तितन्देवंशङ्खचक्रगदाधरं वाङ्मनःकर्म्मभिःसम्यक्तेयान्तिपरम
म्पदं विष्णुपुराणे भौमान्मनोरथान्स्वर्गंस्वार्गावद्यंतथापदं प्राप्नोत्याराधितेविष्णौ
निर्वाणमपिचोत्तमं भौमान् ऐहिकान् नरसिंहपुराणे ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्यास्त्रि
यः शूद्रान्त्यजातयः सम्पूज्यतंसुरश्रेष्ठम्भक्त्यासिंहवपुर्द्धरम् मुच्यन्तेचाशुभैर्दुःखैर्ज्ज
न्मकोटिसमुद्भवैः तथा नरकेपच्यमानस्ययमेनपरिभाषितम् किन्त्वयानार्चितोदेवः
केशवःक्लेशनाशनः अलाभेचान्यद्रव्याणामुदकेनापिपूजितः योददातिस्वकंल्लोकं
सत्वयाकिन्नपूजितइति अनाश्रमिणाम्भगवत्पूजायान्नाधिकारः नरसिंहपुराणे अ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 नाश्रमीत्वङ्गृहभङ्गकारणात्ततोगृहाणाश्रममुत्तमन्द्विज अनाश्रमस्थैर्द्विजवेदपार 
गैः कृतन्त्वहन्नानुगृण्हामिचार्च्चनम् इतिभगवद्वाक्यात् शालग्रामेभगवत्पूजातिप्रश
स्ता वाराहे कुड्येलेख्येचमेकश्चित्पटेकश्चित्तुमानवः पूजयेद्यदिवाचक्रेममतेजों
शसम्भवम् पद्मेमेपूजनंशस्तंशस्तंचैवचस्थंण्डिले इतिभगवद्वाक्यात् चक्रेशा
लग्रामशिलाभवे विष्णुपूजाकल्पलतायाम्पौराणिकीगाथा शालग्रामाशिलायत्रय
त्रद्वारावतीशिला उभयोःसङ्गमोयत्रतत्रसन्निहितोहरिः येषान्नास्तीहवैमन्त्रोनदी 
क्षानविधिक्रमः नतेषामपिबाधोस्तिशालग्रामशिलार्च्चनं अगम्यागमनेपापन्तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्वासघातने तत्सर्व्वन्नाशयत्याशुशालग्रामशिलार्च्चनमित्यादि लिङ्गपुराणे का
मासक्तोपियोनित्यम्भक्तिभावविवर्ज्जितः शालग्रामशिलाचक्रम्पूजयेत्सोच्युतोभवे
त् लिङ्गकोटिसहस्त्रैस्तुपूजितैर्य्यत्फलंलभेत् तत्फलङ्कोटिगुणितंशालग्रामशिला
र्च्चने द्वादशेहशिलायोवैशालग्रामसमुद्भवाः अर्च्चयेद्वैष्णवोनित्यन्तस्यपुण्यंनिबोधमे
कोटिलिङ्गसहस्त्रैस्तुपूजितैर्ज्जाह्नवीतटे काशीवासोयुगान्यष्टौदिनेनैकेनतद्भवेत् ततो
बव्हीरर्च्चयेद्यःशालग्रामशिलानरः नहि ब्रह्मादयोदेवाः सङ्ख्याञ्जानन्तितत्फले
इत्यादिशिववाक्याच्च गौडीयनिबन्धे पूजाधारमाह शालग्रामेमणौयन्त्रेस्थण्डिले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. प्रतिमादिषु हरेःपूजातुकर्त्तव्याकेवलेभूतलेनतुइति तदीयनिबन्धान्तरे भागवतस भा.
७० म्मोहनतन्त्रयोः शैलीदारुमयी लौहीलेप्या लेख्यासचैकती मनोमयी मणिमयी प्र प्र.१६
तिमाष्टविधास्मृता चलाचलेतिद्विविधाप्रतिष्ठा जीवमन्दिरम् तथा उद्वासावाहनेन
स्तः स्थिरायामुद्ववार्च्चने अस्थिरायाव्विँकल्पःस्यात्स्थण्डिलेचभवेद्द्वयमिति अ
स्यार्थः स्थिरत्वेनप्रतिष्ठापितायांशैलीप्रभृतिप्रतिमायामर्च्चनेउद्वासोविसर्ज्जनं आ
वाहनञ्चनस्यात् अस्थिरायाञ्चलायाव्विँकल्पः सचव्यवस्थितःशालग्रामादिशिला ७०
दौस्वभावतोदेवतासन्निधानात् कृतप्रतिष्ठासंस्कारकप्रतिमादौचसंस्कारेणदेवता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्निधानाच्च प्रतिष्ठामुद्वासनञ्चनकुर्य्यात् सैकत्यामल्पकालस्थायिन्याम्मूर्त्तौचतेकु
र्य्यादेव स्थण्डिलेतुद्वयम्भवेत् प्रतिष्ठावाहनेस्याताव्वाँनवेत्यर्थः गृहादौ स्थण्डिले
कुलदेवतामेकदाप्रतिष्ठाप्यपुनःप्रतिष्ठाव्विँसर्ज्जनञ्चविनैवपूजयेत् यज्ञादिग्रहवेधा
दौग्रहादिप्रतिष्ठाविसर्ज्जनेभवेतामेवेति ध्यानंतु धेयःसदासवितृमण्डलमध्यवर्त्ती
त्यादिपुरुषसूक्तषोडशोपचारपूजायांवक्ष्यमाणञ्ज्ञेयम् पूजामन्त्रस्तु ओंइदव्विँष्णु
र्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं समूढमस्यपांसुले इतिछन्दोगानां ओंविष्णोरराटमसिवि
ष्णोःश्नप्त्रोस्थोविष्णोःस्यूरसिविष्णोर्द्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वाइतियजुर्व्वेदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



नां ओंनमोनारायणायेति ओंनमोभगवतेवासुदेवायेतिचाद्विजातीनाम् अर्घेनरसिं
हपुराणम् आपःक्षीरङ्कुशाग्रणिदध्यक्षततिलास्तथा यवाःसिद्धार्थकाश्चैव अर्घोऽ
ष्टाङ्गःप्रकीर्तितः अक्षताश्चात्रामतण्डुलाःयत्तुनबिल्वैरर्च्चयेत्सूर्य्यन्नतुलस्यागणाधि
पम् नाक्षतैःपूजयेद्विष्णुन्नाशिवंशङ्खवारिणेतिवचनात्तन्निर्म्मूलम् समूलत्वेप्यर्घा
तिरिक्तपरमितिशूलपाणिः सिद्धार्थकाः सितसर्षपाः सचार्घः सतिसम्भवेशङ्खेनदे
यःगारुडे शङ्खेनेत्युपक्रम्य सपुष्पंवारिणाचार्घन्दूर्वाक्षतसमन्वितम् योदद्याद्वासु
देवस्यतस्यश्रीः सर्व्वतोमुखीतिवचनात् दक्षिणावर्त्तशङ्खस्तु अर्घादिदानेतिप्रश



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तः दक्षिणावर्त्तशङ्खस्थतोयेनयोर्च्चयेद्धरिं सप्तजन्मकृतम्पापन्तत्क्षाणादेवनश्यतीति गौडधृतस्कांदवचनात् विद्याकरपद्धतौप्रल्हादंप्रतिभगवद्वाक्यम् वाद्यानामपिदेवस्यतन्त्रीवाद्यंसदाप्रियं किंव्वाँदित्रसहस्त्रैस्तुपुरतोवैममाग्रतः नागारिचिह्निताघण्टाप्राप्यतेयादिकार्हिंचित् नागारिचिह्नताङ्घण्टांरथाङ्गेनसमन्विताम् वादयन्कुरुतेनाशञ्जन्ममृत्युजरापदां तथा यस्तुवादयतेघण्टांव्वैनतेयेनसय्युँताम् धूपेनीराजनेस्नानेपूजनेचविलेपने ममाग्रेलभतेपुण्यञ्चान्द्रायणशतोद्भवं वैनतेयाङ्किताङ्घण्टांसुदर्शनसमन्विताम् ममाग्रेस्थापयेद्यस्तुतस्यदेहेवसाम्यहम् ममनामाङ्किता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



घण्टांमत्पुरोयत्रतिष्ठति अन्तिकेवैष्णवेगेहेतत्रमाविँद्धिदैत्यज मदीयार्चनवेला
याङ्घण्टावादंशृणोतियः शाम्यन्तितस्यपापानिशतजन्मार्जितान्यपि विष्णोःस्ना
नीयदानेशङ्खःप्रशस्तः विष्णुधर्म्मोत्तरेशङ्खमाहात्म्ये शङ्खस्थितेनतोयेनयः
स्नापयतिकेशवम् कपिलानांसहस्रस्यदत्तस्यफलमाप्नुयादितिवचनात् तथा विले
पयतिदेवेशंशंखेकृत्वातुचन्दनम् परमात्मापराम्प्रीतिङ्करोतिशतवार्षिकीम् तथातुल
सीदललग्नेनचन्दनेनजनार्द्दनम् विलेपयतियोनित्यंलभतेचिन्तितम्फलम् नित्यंच
न्दनदानेपिगुणविधिरयम् अथपञ्चोपचाराःतत्रगन्धद्रव्याणि श्रीखण्डचन्दन अगु



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रु कर्प्पूर कुङ्कुम उशीर पद्मकाष्ठ कालेयक सिल्हकरक्तचन्दनानि अग्निपुराणे च
न्दनागुरुकर्प्पूर कुङ्कुमोशीरपद्मकैः अनुलिप्तोहरिर्भक्त्यावरान्भोगान्प्रयच्छति
कालेयकन्तुरुष्कञ्चरक्तचन्दनमेवच नृणाम्भवतिदत्तानिपुण्यानिपुरुषोत्तमे इत्यभि
धानात् कालेयकङ्कृष्णागुरुः तुरुष्कं सिल्हकं गौडनिबंधे विष्णुधर्मोत्तरे दारिद्र्यंप
द्मकङ्कुर्य्यादस्वास्थ्यंरक्तचन्दनं उशीरंचित्तविभ्रंशमन्येकुर्य्युरुपद्रवमितिरक्तचंद
ननिषेधउक्तः सचाप्रमाणिकः अन्येकुर्य्युरुपद्रवमित्युक्त्याविष्णौचन्दनदानाभाव
प्रसङ्गात् तुलसीकाष्ठचन्दनंचास्यातिप्रियम् यथाविष्णोःसदात्द्दद्यंनैवेद्यंशालिस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



म्भवम् कापिलञ्चयथाक्षीरंतथातुलसिचंदनं योयच्छतिसदाविष्णौतुलसीदारुचन्द
नम् स्वदेहेधारयेद्यस्तुसुराणांसयथाहरिः इतिब्रह्मांडपुराणेगरुडम्प्रतिनारदवा
क्यात् श्रीदत्ताह्निकेतुकस्तूरिकाजातीफलेचगन्धद्रव्येउक्ते हरिभक्तिदीपिकायान्तु
यान्यात्मनःसदेष्टानितानिशस्तान्युपाकुर्वीतिवचनादात्मेष्टमधिकमुक्तम् अनुलेपा
नंतरञ्चामरैर्व्यजनैश्चवीजनङ्कुर्यात् ततोभगवतःकुर्यादनुलेपादनंतरम् विद्वान्वि
चित्रैर्व्यजनैश्चामरैरपिवीजनमितिवचनात् गौडनिबन्धे कालिकापुराणे गन्धोम
लयजोयस्तुदैवेपित्र्येचसस्मृतः तत्पङ्कोवारसोवापिचूर्णोवाविष्णुतुष्टिदः तथा अ



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नुलिप्तञ्जगन्नाथन्तालवृंतेनवीजयेत् वायुलोकमवाप्नोतिपुरुषस्तेनकर्मणा इत्याभि
हितम् पुष्पाणितु अगस्त्य अतिमुक्त अपराजिता अपामार्ग्ग अशोक गौडनिबन्ध
घृत अङ्कोट अम्लान अवंती अष्टापद आम्रातक आम्रमञ्जरी सर्व्ववर्णोत्पल क
दम्ब करञ्ज करवीर कर्णिकार किंशुक कुङ्कुम कुन्द कुब्जक कुमुद कुरुंट करुबक कु
श कूष्मांड कुसुंभ केतक खदिर चम्पक चारुपुट जवा जम्बू जया जाती गौडघृतश्वे
तजवाप्रसिद्ध जम्बूवनज तगर तिलक पीतश्वेतरक्तत्रिसंध्या तुलसी दमन द्रोण धा
वक नन्द्यावर्त्त नवमालिका नागकेशर नीप नेपालिका पद्म पाटला पारिभद्र पीतक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



स्वर्णजुहीप्रसिद्ध पीतिका पुन्नाग गौडधृत हरिद्रा प्रसिद्ध पिङ्गक पुङ्गवी प्रसिद्ध पुरं
ध्री बंधूक बाण भृङ्गराज भूचंपक मदन मणिपुष्प मरुवक मल्लिका मालती गौडधृत
मधुपिंङ्गल मधुपिंडिका माषवृन्तक यूथी वक बकुल लवङ्ग प्रसिद्ध वनज शतपत्र श
तपुष्पिका शतङ्गा शतावरी शमी शाल शिरीषगौढनिबंधधृतचुडिआप्रसिद्ध शिखि
नी श्वेतजवा शंश वाकसप्रसिद्ध सिंहास्य सेवंती सुवर्ण सौगंधिकानांविहितानि नि
षिद्धानितु अर्क कण्टकारी गौडधृत करवीरप्रसिद्ध ककर काञ्चनाल कुटज गौडधृ
त केतकी कृष्णजयन्ती गिरिकर्णिका श्वेता पराजिताप्रसिद्ध फिण्टी धुत्तूर मंदार बि



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भीतक शक्र शाल्मली गौडधृत शिरीष पुष्पाणि अशोक करवीर कुङ्कुम कुश कुसुं
भ जलज त्रिसन्ध्या पलाश पाटलापारिभद्र शमीवर्ज्जरोहितपुष्पाणि सितसुरभिव
र्ज्जं कण्टकीजपुष्पाणिच केतकी नृसिंहेतरविष्णुमूर्तौनिषिद्धा काम्येच केतकीद्वयंविँ
हितं पत्राणितु अपामार्ग्गआमलकी कुश केतकी गौडधृतकुम्भी खदिर भृङ्गरजभृ
ङ्गराज मरुवक वक बिल्व शमी गौडीय शेफाली सर्व्ववनस्पतीनांविँहितानि धूपा
स्तु सशर्क्करसाज्यमहिषाख्यगुग्गुलु जटामसीगुग्गुलु देवदारु सिल्हक सागुरु क
र्प्पूरनखी जातीफलसकर्प्पूर कृष्णागुरु साज्यसगन्धगुग्गुलुरूपाविहिताः महिषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





स्व्यंगुग्गुलुख्यँआज्ययुक्तंसशर्क्करं धूपन्ददातिराजेन्द्रनरसिंहायभक्तिमान् सधूपि
तःसर्व्वदिक्षुसर्व्वपापविवर्जितः अप्सरोगणयुक्तेनविमानेनविराजता वायुलोकंस
मासाद्यविष्णुलोकेमहीयते वामनपुराणे हिरुकाख्यङ्गणन्दारुसिल्हकंसागुरुंसित
म् शङ्खञ्जातीफलंश्रीशेधूपानिस्युःप्रियाणिवै इत्यभिधानाच्च हिरुका जटामसी
कणोगुग्गुलुविशेषः सागुरुइत्यगुरुसहितः सितः कर्प्पूरः शङ्खं नखी स्कन्दपुराणे
येकृष्णागुरुणाकृष्णन्धूपयन्तिकलौनराः सकर्प्पूरेणराजेन्द्रकृष्णतुल्याभवन्तिते ७५
साज्येनगुग्गुलेनापिसगन्धेनजनार्द्दनम् धूपितेननरोयातिपदम्भूपसदाशिवम् इत्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिधानाच्च कस्तूरिकातिरिक्तजीवजातधूपोविष्णवेनदेयः नधूपार्थेजीवजातामिति विष्णुनाभिधानात् विष्णुधर्म्मे विनामृगमदन्धूपेजीवजातँविवर्ज्जयेत् नयक्षधूप ँवितरेन्माधवायकदाचनेत्युक्तेश्च दीपेघृतंतिलतैलव्वाँदेयम् घृतेनवापितैलेनदीपं य्योज्वालयेन्नरः विष्णवेविधिवद्भक्तयातस्यपुण्यफलंशृणु विहायसकलम्पापंसहस्त्रा दित्यसन्निभः ज्योतिष्मताविमानेन विष्णुलोकेमहीयते इतिनरसिंहपुराणात् कर्प्पू रदीपदानेश्वमेधः कुलोद्धारश्चफलं प्रज्वाल्यदेवदेवस्यकर्प्पूरेणतुदीपकं अश्वमेधम वाप्नोतिकुलञ्चैवसमुद्धरेदितिकालिकापुराणात् नैवेद्यानितुभक्ष्यभोज्यादीनिसामा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



न्यप्रकरणेउक्तानि विशेषतस्तुकृत्यप्रदीपे फलेषु बदर खर्ज्जूर आमलकी प्राचीना
मलक आम्र पनस पुन्नाग बीजपूर कूष्माण्ड ताल कदल कर्क्कटी पटोलद्वयानि अ
न्नेषुहविः संस्कृतयव गोधूम शालि तिल मुद्गव्रीहि माष कुलित्थाः अन्यान्यपियज्ञि
यान्यन्नानिविहितानि वामनपुराणे हविषासंस्कृतायेचयवगोधूमशालयः तिलमुद्गा
दयोमाषाव्रीहयश्चहरेःप्रियाः इत्युक्तेमुद्गादयइत्यादिपदेनायज्ञियमसूरादिव्यावृत्त
सस्यग्रहणं अयज्ञियाअपिमाषाःपृथगुपादानाद्ग्राह्याःकुलित्थाश्चवराहपुराणेभि
धानादितिश्रीदत्ताह्निकं दधिदुग्धघृतानितुगव्यानिविहितानि गव्यान्यपिआनिर्द्दशा



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यावित्सायाअन्यवत्सायाः स्यन्दिन्यायमप्रसूतवत्याअमेध्यभुजश्चनिषिद्धानीति
कृत्यप्रदीपः नाभक्ष्यन्नैवेद्यार्थेभक्ष्येष्वप्यजामहिषीक्षीरेइति विष्णुवचनात् माहि
षञ्चाविकञ्चाजमयज्ञियमुदाहृतमिति वराहपुराणाच्च अजामहिषीमेषीदधिदुग्धघृ
तानिनिषिद्धानि मांसेषुहरिण छाग शश रुरु तृणमयूर लावक वर्त्तक हारीत टिट्टि
भ कुरर वनकपोत मांसानिपक्कानिविहितानि पञ्चनखमत्स्यवराहमांसानिनदेया
नि मृडालमूलशाकचुञ्चुशाकतिन्तिडीशाकानिविहितानीतिकृत्यप्रदीपः वस्त्रन्तु
दुकूलपट्टकौशेयवार्क्षकार्प्पासानिविहितानि दुकूलपट्टकौशेयवार्क्षकार्प्पासकादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. भिः वासोभिः पूजयेद्देवङ्कुसुमैरात्मनःप्रियैरित्यग्निपुराणेभिधानात् नीलंरक्तञ्चनि भा.
७७ षिद्धम् विष्णुपूजामुपक्रम्य नवासोनीलरक्तमितिविष्णुनाभिधानात् रक्तमित्यस्य प्र.१६
दद्यादितिशेषः पीतम्प्रशस्तम् अग्निपुराणे योगपीठंसमभ्यर्च्य समावाह्यहरिंयँ
जेत् पाद्यार्घाचमनीयञ्चपीतवस्त्राण्विंभूषणमित्याभिधानात् गौडनिबन्धे कालिकापु
राणे कार्प्पासंसर्व्वतोभद्रन्दद्यात्सर्व्वेभ्यएवतु नैकान्तरक्तन्दद्यात्तुवासुदेवायचेलक
म् तथा तत्पूर्व्वम्पूजयित्वैवमन्त्रैर्द्देवायचोत्सृजेत् निर्दशम्मलिनञ्जीर्णाञ्छिन्नङ्गात्रा ७७
वालिङ्गितं परकीयञ्चाखुदष्टंसूचीविद्धन्तथोषितम् उप्तकेशंविधूतञ्चश्लेष्ममूत्रादिदू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षितम् उप्तकेशम् केशेनसहवापितम् तथा वर्ज्जयेत्स्वोपयोगेनयज्ञादावुपयोजने प
ताकाध्वजवस्त्रादौस्यूतव्वँस्त्रंनिवेदयेदित्युक्तम् स्मृतिदीपिकायाम् स्कन्दपुराणे गी
तवाँद्यञ्चनृत्यञ्चतथापुस्तकवाचनम् पूजाकालेतुविप्रेंद्र सर्व्वदाकेशवप्रियं गीतनृत्या
द्यभावेपिकुर्य्यात्पुस्तकवाचनम् पूजाकालेमुक्तिदस्यगीताध्यायमनुस्मृतं पञ्चस्तव
म्महाराजमहाप्रीतिकरंहरेः स्तोत्राणाम्परमंस्तोत्रव्विँष्णोर्न्नामसहस्रकम् हित्वा
स्तोत्रसहस्राणिपठनीयम्महामुने तेनैकेनमुनिश्रेष्ठपठितेनसदाहरिःप्रीतिमायाति
देवेशोयुगकोटिशतानिच विहायगीतवाद्यानिपूजाकालेसदाहरिः परिपूर्णंभवत्याह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





सहस्त्रास्त्यानकीर्तनादित्यादिवचनात्पुस्तकवाचनम्पूजाकालेवश्यंविधेयम् पुस्तक
वाचनम्पूराणश्रवणन्तत्पाठश्च पञ्चस्तवम् गीत नृत्य वाद्य पुस्तकवाचनम् गीताध्या
यपाठश्चेतिपञ्चकम् विहाय अनादृत्य कीर्त्तनात्पूर्णसर्व्वम्भवतीत्याहहरिः गानंस्तो
त्रस्यगीतस्यवा गौडनिबन्धे ततश्चमूलमन्त्रेणदत्वापुष्पाञ्जलित्रयं महानीराज
नंङ्कुर्य्यान्महावाद्यजयस्वनैः प्रज्वालयेत्तदर्थञ्चकर्पूरेणघृतेनवा आरात्रिकंशुभे
पात्रेविषमानेकवर्त्तिकं तन्माहात्म्यंस्कान्देब्रह्मनारदसंवादे बहुवर्त्तिसमायुक्तञ्ज्व
लन्तङ्केशवोपरि कुर्य्यादारात्रिकंयस्तुकल्पकोटिंवसेद्दिवि कर्प्पूरेणतुयःकुर्य्याद्भ



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्तयाकेशवमूर्धनि आरात्रिकम्मुनिश्रेष्ठप्रविशोद्विष्णुमव्यय तत्रैवशिवोमासर्व्वँदेम
न्त्रहीनङ्क्रियाहीनय्यँत्कृतम्पूजनंहरेः सर्व्वंसम्पूर्णतामेतिकृतेनीराजनेशिवे इत्य
भिहितम् विष्णवेदेयमात्रदाने विष्णुधर्म्मोत्तरे अक्षयोभगवान्विष्णुःपरमात्मासना
तनः तमुद्देश्यचयद्दत्तमक्षयन्तत्प्रकीर्तितम् इतिदर्शनात् ब्राह्मणसम्प्रदानकतत्तज्जा
तीयवस्तुदानजन्यफलसमाक्षयफलप्राप्तिस्वर्ग्गलोकगमनकामनयातत्तद्वस्तुभग
वतेदेयम् कामनाविरहेतुमहाफलमुक्तन्तत्रैव अकामश्चैवयोलोकोयत्किञ्चिद्विनिवेद
येत् तेनैवस्थानमाप्नोतियत्रगत्वानशोचति धर्म्मवाणिजकामूढाःफलकामानराधमाः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



अर्च्चयन्तिजगन्नाथन्तेकामान्प्राप्नुवन्त्यथ अन्तवत्तुफलन्तेषान्तद्भवत्यल्पचेतसाम्
तथा पद्म्याम्प्रतीच्छतेदेवःसकामेननिवेदितम् मूर्ध्नाप्रतीक्षतेदत्तमकामेनद्विजोत्तमा
इति देवपित्रादिदत्तञ्चविष्णवेनदेयम् अपिदीपावलोकम्मेनोपयुञ्ज्यान्निवेदितमि
त्यादिभागवतात् निवेदितमन्यदेवादिभ्यः तथाचान्यनिवेदितंविँष्णवेनदद्यादित्य
र्थः अस्यपूजाप्रयोगस्तु तिलान्गृहीत्वा यथोक्तरूपंविँष्णुन्ध्यात्वा ओंभूर्भुवःस्व
र्भगवन्विष्णोइहागच्छेत्यावाह्यइहतिष्ठेतिस्थापयित्वापूर्व्वोक्तमन्त्रमुच्चार्य्य एतानि
पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि ओंविष्णवेनमः इदमनुलेपनमिति एष



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गन्धः इतिवा ओंविष्णवेनमः एतेयवतिलाः ओंविष्णवेनमः एतानिपुष्पाणि इदम्पु
ष्पव्वाँ ओंविष्णवेनमइतित्रिः एतानितुलसीपत्राणि ओंविष्णवेनमः एवम् एषधूपः
एषदीपः एतानिनैवेद्यानिइदन्नैवेद्यव्वाँ ओंविष्णवेनमः इदमाचमनीयम् ओंविष्ण
वेनमः इतिपूजयित्वा दीक्षितोजप्त्वादीक्षितस्तुजपमकृत्वैवप्रदक्षिणाचतुष्टयव्विधा
यप्रणम्यस्तुत्वाध्यात्वा ओंभगवन्विष्णोपूजितोसिप्रसीद क्षमस्वस्वस्थानङ्गच्छेति
विसर्ज्जयेदिति तत ओंविष्वक्सेनायनमः इतिनिर्म्माल्यंक्षिप्त्वा पादोदकम्पीत्वापा
दोदकेनशिरःसम्मार्ज्ज्यनैवेद्यम्भक्षयेत् अथपुरुषसूक्तेनविष्णुपूजा जलदेवन्नम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



स्कृत्यततो गृहगतः पुमान्
विष्णुं समर्च्चयेत् वैश्वदेवन्त
विधीति नरसिंहपुराणदर्श
जाकार्या तत्रक्रमः पूजोपयु
भिषिच्य नरसिंहपुराणोक्तं
सदासवितृमण्डलमध्यव
नसान्निविष्टः केयूरवान्कन



विधिना पुरुषसूक्तेन तत्र
तः कुर्य्याद्बलिकर्म्म यथा
नात् पुरुषसूक्तेनविष्णुपू
क्तवस्तूनि सन्निधाप्याऽ
ध्यायेत्ध्यानय्यँथा ध्येयः
र्तीनारायणः सरसिजास
ककुण्डलवान्किरीटीहा



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोहिरण्मवयपुर्धृतशङ्खचक्रः इतिसदापूजाकालेजपकालेच सवितृमण्डलपदन्ते
जःसमूहोपलक्षकसरसिजासनसन्निविष्टः पद्मासनोपविष्टः पद्मोपर्य्युपविशन्नुपवि
ष्टइतिकेचित् मकरकुण्डलवानितिदाक्षिणात्याःपठन्ति अत्रशङ्खेत्याद्युपलक्षणम्
तेनदक्षिणकरद्वये ऊर्द्ध्वाधःक्रमेणपद्मशङ्खौवामकरद्वयेऊर्द्ध्वाधःक्रमेणगदाचक्रेइति
तात्पर्य्यं ततोनारायणंध्यायेदेकाग्रमनसास्थितःपद्मशङ्खगदाचक्रपाणिनादिव्यभू
षितम् इतिपूजानन्तरविष्णुवचनसंवादात् दिव्यभूषितम् मनोहरहारकेयूरकिरीट
कनककुण्डलालङ्कृतञ्जलदनीलङ्कनकाभंवाहत्पुण्डरीकेरविमण्डलेवापद्मासनो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

पविष्टन्ध्यायेदितितदर्थः अत्रेदंबोध्यं हृत्पुण्डरीकंरविमण्डलञ्चसर्व्वासामपिदेवता
नांस्थानं अप्स्वग्नौहृदयेसूर्य्यइत्याद्यभिधानादिति पूजाक्रममाह तत्रैव आनुष्टुभ
स्यसूक्तस्यत्रिष्टुबन्तस्यदेवता पुरुषोयोजगद्बीजमृषिर्न्नारायणःस्मृतः आद्ययावाह
येद्देवमृचातुपुरुषोत्तमम् द्वितीययासनन्दद्यात्पाद्यञ्चैवतृतीयया चतुर्थ्यार्घ्यम्प्रदात
व्यंपञ्चम्याचमनीयकं षष्ठ्यास्नानम्प्रकुर्व्वीतसप्तम्यावस्त्रमेवच यज्ञोपवीतमष्टम्या
नवम्यागन्धमेवच दशम्यापुष्पदानंस्यादेकादश्यातुधूपकम् द्वादश्यादीपकन्दद्या
त्रयोदश्याचरुन्तथा चतुर्द्दश्याञ्जलिङ्कृत्वापञ्चदश्याप्रदक्षिणाम् षोडश्योद्वासन



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ङ्कुर्य्याच्छेषकर्म्माणिपूर्व्ववत् स्नानेवस्त्रेचनैवेद्येदद्यादाचमनीयकम् षण्मासात्सि
द्धिमाप्नोतिदेवदेवंसमर्च्चयन् दद्यात्पुरुषसूक्तेनयःपुष्पाण्यपएववा अर्च्चितंस्याज्जग
दिदन्तेनसर्व्वञ्चराचरम् एतत्पठेत्केवलमेवसूक्तन्दिनेदिनेभावितकृष्णबुद्धिः सस
र्व्वदुःखानिविहायवैष्णवंपदम्प्रयात्यच्युततुष्टिकृन्नरः पत्रेषुपुष्पेषुफलेषुतोयेष्वक्री
तलभ्येषुसदैवसत्सु भक्त्यैकलभ्येपुरुषेपुराणेमुक्त्यैकिमर्थङ्क्रियतेनयत्नःअत्रदि
नेदिनेभावितकृष्णबुद्धिरित्यस्यप्रकर्षकाष्ठाम्प्राप्ताभगवतिप्रीतिप्रापितातज्जनना
नुकूलीकृताकृष्णविषयिणीबुद्धिर्य्येनेत्यर्थः अत्रचदिनेदिनेइत्यभिधानात्तदनुकल्प

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



विधानाच्चनित्याधिकारइत्यवसीयते स्नानेइत्यादि षष्ठ्यास्नानानन्तरं सप्तम्यावस्त्र दानानन्तरम् त्रयोदश्याचरुदानानन्तरञ्चततोविराडितिपञ्चम्याचमनीयन्दद्यादि त्यर्थः नचाचमनीयस्यपुनरावृत्त्याषोडशोपचारत्वबाधः उपचारैक्यप्रयोजकाचमनी यत्वैकोपाध्यालिङ्गितत्वादाधिक्याभावात् शेषकर्म्माणीति प्रयातुभगवान्पुनरागम नाय पुनःसन्दर्शनायचेतिवाच्यमित्यर्थइतिबह्वः अस्मिँश्चकल्पेऽग्निपुराणे यद्यप्य ङ्गन्यासविधिरुक्तः तथापिसकाम्यइतितंविँनापिपुरुषसूक्तेननित्यपूजाविधेया त थाचाग्निपुराणम् प्रथमांविँन्यसेद्वामेद्वितीयांदक्षिणेकरे तृतीयांव्वाँमपादेतुचतुर्थी



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्दक्षिणेतथा जानुनोःञ्चपमीव्वँमेषष्ठीन्तुदक्षिणेतथा सप्तमीव्वाँमकट्यान्तुअष्टमी
न्दक्षिणेतथा नवमीन्नाभिमध्येतुदशमींहृदयेतथा एकादशीङ्कण्ठमध्येद्वादशीव्वाँम
बाहुके त्रयोदशीन्दक्षिणेतुतथास्येचचतुर्द्दशीम् अक्ष्णोःपञ्चदशीञ्चैवविन्यसेन्मूर्द्ध्नि
षोडशीं यथादेहेतथादेवेन्यासङ्कुर्य्याद्विचक्षणः न्यासेनतुभवेत्सोपिस्वयमेवजना
र्द्दनः एवंन्यासविधिङ्कृत्वापश्चाद्यागंसमाचरेदिति अथैतत्प्रयोगः वामादिकरद्वय
चरणद्वयजानुद्वयकटिद्वयनाभिहृदयकण्ठबाहुद्वयमुखचक्षुर्म्मूर्द्धसुप्रत्येकमेकैकामृचं
स्वस्यदेवस्यचदेहेविन्यस्ययथोक्तन्ध्यात्वा सहस्त्रशीर्षेत्यादिषोडशर्च्चस्यपुरुषसूक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पू. पं. स्यनारायणऋषिराद्याः पञ्चदशानुष्टुभोन्त्यात्रिष्टुब्जगद्बीजम्पुरुषोदेवताविष्णवर्च्चने भा.
८३ पुरुषस्तुतौवाविनियोगः इतिऋष्यादिकंस्मृत्वा ओंसहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःस प्र.१६
हस्रपात् सभूमिंसर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलं ओंभगवन्विष्णोइहागछ १ ओं
पुरुषएवेदंसर्व्वँय्यद्भूतँय्यच्चभाव्यम् उतामृतत्त्वस्येशानोजदन्नेनातिरोहति इदमा
सनमत्रतिष्ठ २ ओंएतावानस्यमहिमातोज्यायाँश्चपूरुषः पादोस्यविश्वाभूतानित्रि
पादस्यामृतन्दिवि इदम्पाद्यं ३ ओंविष्णवेनमः ओंत्रिपादूर्द्ध्वउदैत्पुरुषःपादोस्येहा ८३
भवत्पुनः ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेअभि एषोर्घः ४ ओंततोविराडजायत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विराजोअधिपूरुषः सजातोअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः इदमाचमनीयं ५ ओं
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्यम् पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्याग्राम्याश्च
ये इदंस्नानीयं ६ ततस्ततोविराडितिपूर्व्ववदाचमनीयदानं ओंतस्माद्यज्ञात्सर्व्वहु
तऋचः सामानिजज्ञिरे छदाꣳसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत इदंवस्त्रम् ७
अत्रापिपूर्व्ववदाचमनीयदानम् ओंतस्मादश्वाअजायन्तयेकेचोभयादतः गावोह
जज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताअजावयः इमेयज्ञोपवीते ८ अत्रापिपूर्व्ववदाचमनीयदा
नम् ओंतय्यँज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः तेनदेवाअयजन्तसाद्ध्याऋषयश्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri




ये ९ एषगन्धः ततएतेयवतिलाः ओंयत्पुरुषव्व्यँदधुः कतिधाव्व्यकल्पयन् मुखङ्कि
मस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाउच्येते १० इदम्पुष्पम् इतितिः पूजयेत् ओंब्राह्म
णोस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रोअजायत ११ एष
धूपः ओंचन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्योअजायत श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्नि
रजायत १२ एषदीपः ओंनाभ्याआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत पद्भ्याम्भू
मिर्द्दिशःश्रोत्रात्तथालोकाँअकल्पयन् १३ एषचरुः इदंनैवद्यमितिवा अत्रापिपूर्व्वव
दाचमनीयदानम् ओंयत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत वसन्तोस्यासीदाज्यङ्ग्री ८४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ष्मइध्मः शरद्धविः १४ इतिपठित्वाञ्जलिङ्कुर्य्यात् ओंसप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःस
प्तसमिधःकृताः देवायद्यज्ञन्तन्वानाअबध्नन्पुरुषम्पशुं इतिप्रदक्षिणङ्कुर्य्यात् १५
ओंयज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन् तेहनाकम्महिमानःसच
न्तयत्रपूर्व्वेसाध्याःसन्तिदेवाः १६ इतिपठित्वा ओंविष्णोक्षमस्वेतिविसर्ज्ज्य ओंप्र
यातुभगवन्पुनरागमनायपुनःसन्दर्शनायचेतिवदेदिति एतदशक्तौ पुरुषसूक्तम्पठि
त्वापुष्पाणिजलंव्वाददात् श्रीकृष्णानुस्मरणपूर्व्वकम्पाठमात्रव्वाँकुर्य्यात् पुरुषसू
क्तानन्तरन्नरसिंहपुराणं अनेनविधिनादेवःपूज्यतेमधुसूदनः वेदज्ञैरेवनान्यैस्तुत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



स्मात्सर्व्वहितंव्वदेतिप्रश्नानन्तरम् अष्टाक्षरेणमन्त्रेणनरसिंहमनामयं गन्धपुष्पा
दिभिर्न्नित्यमच्युतम्पूजयेन्नरः गन्धपुष्पादिसकलमनेनैवनिवेदयेत् अनेनाभ्यर्च्चि
तोविष्णुःप्रीतोभवतितत्क्षणात् इत्यभिधानादष्टाक्षरेणवेदमन्त्रानभिज्ञैस्त्रैवर्णिकै
स्स्त्रीशूद्रैश्चपूजाविधेयाअन्यथासर्वहितत्वानुपपत्तेः अत्रकेचित् गन्धपुष्पादिभिरि
त्यभिधानाद्गन्धपुष्पादिकमेवोपचारमिच्छन्तितन्नपूर्वोक्तषोडशोपचारात्मकेऽर्च्चनेप्र
तीयमानेमन्त्रान्तरसम्बन्धमात्रपरत्वाद्वाक्यस्थं किञ्चार्च्चनंसम्प्रवक्ष्यामीतिप्रक्रमा
देकस्यैवषोडशोपचारात्मकस्यार्च्चनस्यमन्त्रभेदाद्भिन्नंप्रकारद्वयमितियुक्तं तस्माद्ग



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्धपुष्पादिभिरित्यादिशब्दः प्रकारेप्राधान्याद्गन्धपुष्पयोर्व्यपदेशइतिछन्दोगाह्निकं
अत्रचायाव्विँशेषः नमोनारायणायेतिमन्त्रः सर्व्वार्थसाधकइति नरसिंहपुराणोक्तस
प्ताक्षरेप्रणवमादौपठित्वा अष्टाक्षरत्वमुपपाद्यत्रैवर्णिकैःपूजादौकार्य्येपठनीयः स्त्री
शूद्रैस्तुनामित्यादौदत्वाष्टाक्षरङ्कृत्वानान्नारायणायनमइतिपठनीयः अतएवपञ्चरा
त्रे ओंकारांशबहिर्भ्भावेणैवनारायणपदादिभूतबिन्दुमद्बीजेनाष्टाक्षरत्वमुक्तमिति
श्रीदत्ताह्निकम् आगमेतुप्रणवस्थाने औमितिचतुर्थसन्ध्यक्षरंस्त्रीशूद्राणाम्पठनीय
माह अत्रचकल्पेन्यासादिकन्नास्ति प्रमाणाभावात् किन्तुमूलमन्त्रेणैवावाहनास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





नपाद्यार्घाचमनीयस्नानीययज्ञोपवीतवस्त्रगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्याञ्जलिप्रदक्षिण
विसर्ज्जनात्मकषोडशोपचारान् कृत्वानैवेद्यप्रतिपत्तिंकुर्य्यात् जपोप्यस्यातिप्रशस्तः
किन्तस्यबहुभिर्म्मन्त्रैःकिन्तस्यबहुभिर्ज्जपैः नमोनारायणायेतिमन्त्रःसर्व्वार्थसाध
कः स्नात्वाशुचिर्ज्जपेद्यस्तु नमोनारायणंशतम् सयातिपरमन्देवन्नारायणमनामय
मितिनरसिंहपुराणदर्शनात् एकान्तेविजनेस्थानेविष्णवग्रेवाजलान्तिके जपेदष्टाक्ष
रम्मन्त्रञ्चित्तेविष्णुन्निधायवै आयुष्यधनपुत्रांश्चपशून्विद्याम्महद्यशः धर्म्मार्थका
ममोक्षांश्चलभतेजपकृन्नरः इतिदर्शनाच्च तत्रेयञ्जपेतिकर्त्तव्यता अष्टाक्षरस्यमन्त्र



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्य नारायणऋषिर्ग्गायत्रीछन्दः परमात्मादेवता चतुर्व्वर्ग्गसिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः
इति ऋष्यादीन्स्मृत्वा पूर्व्वोक्तान्नारायणमूर्त्तिन्ध्यात्वा शुक्लवर्णञ्चओंकारन्नकारंर
क्तमुच्यते मोकारव्वँर्णतः कृष्णन्नाकारंरक्तमुच्यते राकारङ्कुङ्कुमाभन्तुयकारम्पी
तमुच्यते णाकारमञ्जनाभन्तुयकारम्बहुवर्णकम् इतिवचनबोधितवर्णविशिष्टान् व
र्णान्ध्यायन् अष्टाधिकंसहस्रंशतन्दशवारव्वाँजेपत् सहस्रव्वाँशतव्वाँपिदशवानु
दिनञ्जपेत् कुर्य्यादष्टाधिकन्तेषामयञ्जप्येविधिःस्मृतइतिविद्याकरधृतवचानात्
अथप्रदक्षिणम् स्कन्दपुराणे अर्घङ्कृत्वातुशङ्खेयःप्रकरोतिप्रदक्षिणम् प्रदक्षि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू.पं. णीकृतातेनसप्तद्वीपावसुन्धरा इतिपूजाकल्पलतायाम् प्रदक्षिणंय्येकुर्व्वन्तिभक्ति भा.
८७ युक्तेनचेतसा नतेयमपुरीय्याँन्तियान्तिपुण्यकृताङ्गतिं विष्णुधर्म्मे रुक्ममाषकदान प्र.१६
स्यफलव्विँप्राः पदेपदे यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच तानितानिप्रणश्य
न्तिप्रदक्षिणपदेपदे इति तत्सर्व्वंनश्यतेविष्णोरितिपाठान्तरम् त्रिःप्रदक्षिणेवामन
पुराणम् त्रिःप्रदक्षिणमावृत्यसहाष्टाङ्गप्रणामकम् दशाश्वमेधस्यफलम्प्राप्नुयान्नात्र
संशयइति चत्वारिकेशवेकुर्य्यादितिवचनबोधितप्रदक्षिणचतुष्टयेतुपुरुषार्थचतुष्टय ८७
लाभः फलमितिशूलपाणिः अथनीराजनम् गौडनिबंधे ततश्चमूलमन्त्रेणदत्वापुष्पा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ञ्जलित्रयम् महानीराजनङ्कुर्य्यान्महावाद्यजयस्वनैः प्रज्वालयेत्तदर्थञ्चकर्प्पूरे
णघृतेनवा आरात्रिकंशुभेपात्रेविषमानेकवर्त्तिकम् स्कान्दे बहुवर्त्तिसमायुक्तञ्ज्वल
न्तङ्केशवोपरि कुर्य्यादारात्रिकंयस्तुकल्पकोटिंव्वँसेद्दिवि कर्प्पूरेणतुयःकुर्य्याद्भक्त्या
केशवमूर्द्धनि आरात्रिकंसुरश्रेष्ठप्रविशेद्विष्णुमव्ययम् अथनमस्कारः तत्रनरसिंहपु
राणे नमस्कारःस्मृतोयज्ञः सर्व्वयज्ञेषुचोत्तमः नमस्कारेणचैकेनअष्टाङ्गेनहरिंव्वँजे
त् उरसाशिरसादृष्ट्यामनसावचसातथा पद्भ्याङ्कराभ्याञ्जानुभ्याम्प्रणामोष्टाङ्गइ
ष्यते इतिविष्णुधर्म्मोत्तरे जानुभ्याञ्चैवपाणिभ्यांशिरसाचविचक्षणः कृत्वाप्रणाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



न्दवेस्यसर्व्वान्कामानवाप्नुयात् परमाणूनियावन्तिललाटेपुरुषस्यते पार्थिवानिभ
वन्तीहनमतोमधुसूदनम् तावन्त्यब्दानिविप्रेन्द्राः स्वर्ग्गलोकेमहीयते इत्यादि गौ
डनिबन्धे कैर्द्धृताञ्जलिभिर्न्नेमुरितिभागवतीयात् शिरोऽञ्जलिसँयोगोपिनमस्कारः
कलौनमस्कारमन्त्रोभागवते ध्येयंसदापरिभवघ्नमभीष्टदोहन्तीर्थास्पदंशिवविरञ्चि
नुतंशरण्यं भृत्यार्त्तिहन्प्रणतपालभवाब्धिपोतव्वँन्देमहापुरुषतेचरणारविन्दम् १
त्यक्त्वासदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीन्धर्म्मिष्ठआर्य्यवचसायदगादरण्यम् माया
मृगन्दयितयेप्सितमन्वधावद्वन्देमहापुरुषतेचरणारविन्दं २ एवय्युँगानुवृत्तिभ्या





Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्भगवान्हरिरीश्वरः मनुजैरिज्यतेराजन् श्रेयसामीश्वरोहरिः स्तुत्वाप्रसीदभगव
न्नितिवन्देतदण्डवत् तथा शिरोमत्पादयोःकृत्वाबाहुभ्याञ्चपरस्परम् प्रपन्नम्पाहि
मामीशभीतम्मृत्युमहार्णवात् इतिभगवद्वाक्यम् ब्रह्मपुराणे यत्किञ्चित्क्रियतेदेवम
यासुकृतदुष्कृतम् तत्सर्व्वन्त्वयिविन्यस्तन्त्वत्प्रयुक्तःकरोम्यहम् इत्यनेनसर्व्वंस
मर्प्पयेदित्युक्तम् अथविसर्ज्जनम् तत्रमन्त्रोभागवते विधिहीनमहीनव्वाँयत्किञ्चि
दुपपादितं क्रियामन्त्रविहीनव्वाँतत्सर्व्वङ्क्षन्तुमर्हसि मन्त्रहीनङ्क्रियाहीनंभक्ति
हीनञ्जनार्द्दन यत्पूजितम्मयादेवपरिपूर्णन्तदस्तुमे गच्छगच्छपरंस्थानम्पुराणपु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





रुषोत्तम यत्रब्रह्मादयोदेवाविशन्तिपरमम्पदम् अपराधसहस्त्रंण्यक्रियतेहर्निश
म्मया दासोयमितिमाम्मत्वाक्षमस्वमधुसूदनेति अथपादोदकधारणमाहात्म्यम्
विष्णुधर्म्मोत्तरे शालिग्रामशिलातोयैर्योभिषेकंसमाचरेत् सस्नातःसर्व्वतीर्थेषुसर्व्व
यज्ञेषुदीक्षितः इतिस्कांन्दे अकालमृत्युहरणंसर्व्वव्याधिविनाशनम् विष्णोःपादो
दकम्पुण्यंशिरसाधारयाम्यहम् इतिधारणमन्त्रोयं पानेतूदरेधारयाम्यहमित्यूहः
कार्य्यः हरिरूपम्मुखेनाममैनैवेद्यमुदरेहरेः पादोदकञ्चनिर्म्माल्यम्मस्तकेयस्यसो ८९
च्युतः बिभर्त्तिमूर्ध्नानिर्माल्यङ्केशवार्च्चाघृतन्तुयः अनिवेद्यनचाश्नातितस्यतुष्यतिके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शवः इतिविष्णुधर्म्मेभिधानात् दाक्षिणात्यनिबन्धे एतन्निर्म्माल्यन्देवदत्तम्भावयि
त्वाशिरसिधायेत् शङ्खोदकंशिरसिधृत्वादेवतीर्थम्पूजान्तेवैश्वदेवान्तेवाशिरसिधा
र्य्यम् पेयञ्च तत्रक्रमःविप्रपादोदकम्पीत्वाविष्णुपादोदकम्पिबेत् शालग्रामशिला
तोयमपीत्वायस्तुमस्तके प्रक्षेपणञ्चकुरुतेब्रह्महासनिगद्यते पात्रान्तरेणवैग्राह्यन्न
करेणकदाचनेतिकमलाकरइति गौडनिबन्धे निर्म्माल्यम्मस्तकेधार्य्यंसर्व्वाङ्गेष्वनु
लेपनम् नैवेद्यमुपभुञ्जीतदत्वातद्भक्तिशालिने तद्भक्तिशालिनेविष्वक्सेनाय कालि
कापुराणे योयद्देवार्च्चनरतः सतन्नैवेद्यभक्षकः ब्रह्मपुराणे अम्बरीषनवव्वैस्त्वम्फलम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



न्यद्रसादिकं कृत्वाकृष्णोपभोग्यन्तुसदासेव्यंतुवैष्णवैः तत्रैककर्त्तरिक्त्वाश्रवणात् स्व
दत्तनैवेद्यभक्षणेप्यधिकारउक्तः केवलंसौरशैवेतुवैष्णवोनैवभक्षयेत् विष्णुयामलेपी
त्वापादोदकन्देविनैवेद्यंस्वयमुद्धरेत् त्यजेत्पादोदकय्यँस्तुनैवेद्यव्वाँत्यजेच्चयः षष्टि
वर्षसहस्राणिरौरवेनरकेपचेत् उद्धरेत् अभ्यवहरेत् एतेनान्यदेवस्यनैवेद्यम्भुक्त्वाचा
न्द्रायणञ्चरेत् इतियद्वचनन्तदेकान्तवैष्णवपरमितिभूषणः यत्तुशूद्रान्नय्याँजकान्नञ्च
नैवेद्यञ्चापिवर्ज्जयेदितिलैङ्गवचनन्तन्नैवेद्यत्वेनोपकल्पितानिवेदितपरम् लोभादिना
भोजननिषेधकव्वाँ यथोक्तंशाम्बे नोपभुक्त्वाचनैवेद्यम्प्रयातिप्रेतयोनिषु विसर्ज्जना



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्पूर्व्वंविँष्णुनैवेद्योपादाननिषेधकव्वाँ अर्व्वाक्विसर्ज्जनाद्द्रव्यंसर्व्वंनैवेद्यमुच्यत।वि
सर्ज्जितेजगन्नाथेनिर्म्माल्यम्भवतिक्षणात्इतिगरुडपुराणीयसंज्ञाकरणस्यएतत्प्रयो
जनकत्वात् विसर्ज्जितेपूजनेसमापितेइतिभूषणइति निर्म्माल्यन्तु ओंविष्वक्सेना
यनमइतिनिवेद्यतथानद्यादौक्षिपेद्यथानकोपिलङ्घयेत् नरसिंहनिर्माल्यलङ्घना
द्ध्नादिव्यरथारोहणशक्तिंशान्तनुम्प्राति अतःपरन्तुनिर्म्माल्यंमालङ्घयमहीपते न
रसिंहस्यदेवस्यतथाऽन्येषान्दिवौकसामितिनारदवाक्यात् इतिशूलपाणिः दाक्षि
णात्यास्तु विष्वक्सेनायदातव्यंनैवेद्यस्यशतांशकम् पादोदकम्प्रसादञ्चलिङ्गे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

चण्डेश्वरायतु इत्युक्तवन्तः अथवराहपुराणोक्तविष्णोरपराधाः क्षत्रियासिद्धान्नभोजनम् १ अनिषिद्धादिनेदन्तकाष्ठमकृत्वाविष्णोरुपसर्प्पणम् २ मैथुनङ्कृत्वाऽस्नात्वा विष्णुप्रतिमादिस्पर्शनम् ३ शवन्दृष्ट्वाऽस्नात्वाविष्णुकर्म्मकरणम् ४ रजस्वलां स्पृष्ट्वाऽस्नात्वाविष्णुस्पर्शनम् ५ शवंस्पृष्ट्वाऽस्नात्वाविष्णुसान्निधाववस्थानं ६ विष्णुं स्पृशतःपायुवायुत्यागः ७ विष्णोःकर्म्मकुर्व्वतःपुरीषत्यागः ८ विष्णुशास्त्रमनादृत्य शास्त्रान्तरप्रशंसा ९ अतिमलिनव्वाँसःपरिधाय विष्णुकर्म्माचरणम् १० अविधानेनोपस्पृश्याविष्णुस्पर्शनम् ११ विष्णोरपराधङ्कृत्वाविष्णोरुपसर्प्पणम् १२ कु



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्धस्यविष्णुस्पर्शनम् १३ निषिद्धपुष्पेणविष्णोरर्च्चनम् १४ रक्तंवाँसःपरिधायवि
ष्णोरुपसर्प्पणम् १५ अन्धकारेविनादीपेनविष्णोःस्पर्शनम् १६ कृष्णवस्त्रम्परि
धायविष्णोःकर्म्माचरणम् १७ वायसोद्धूतवस्त्रम्परिधायविष्णोःकर्म्माचरणम् १८
विष्णवेकुक्कुरोच्छिष्टदानम् १९ वाराहमांसम्भुक्त्वाविष्णोरुपसर्प्पणं २० जालपाद
म्भुक्त्वाविष्णोरुपसर्प्पणम् २१ दीपंस्पृष्ट्वाहस्तमप्रक्षाल्यविष्णोः कर्म्माचरणं २२
श्मशानङ्गत्वाऽस्नात्वाविष्णोरुपसर्प्पणम् २३ पिण्याकम्भुक्त्वाविष्णोरुपसर्प्पणम्
२४ विष्णवेवराहमांसनिवेदनम् २५ मद्यमादायस्पृष्ट्वापीत्वावाविष्णुगृहप्रवेशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





म् २६ परकीयेनाशुचिनावस्त्रेणपरिहितेनविष्णुकर्म्माचरणम् २७ विष्णवेनवान्न
मप्रदायतद्भोजनम् २८ गन्धपुष्पेअप्रदायधूपदानम् २९ उपानहावारुह्यविष्णु
स्थानप्रवेशनम् ३० भेरीशब्देनविनाविष्णोः प्रबोधनम् ३१ अजीर्णेसतिविष्णोरु
पसर्प्पणमिति ३२ एतदपराधक्षमापनन्तुगीताध्यायपाठः पङ्कजपुष्पैर्व्विष्णुपूजन
ञ्च नारसिंहे अतःप्रभृतिनिर्म्माल्यम्मालङ्घयमहीपते नरसिंहस्यदेवस्यतथान्ये
षान्दिवौकसाम् अहन्यहनियोमर्त्योगीताध्यायन्तुसम्पठेत् द्वात्रिंशदपराधैश्चअ
हन्यहनिमुच्यते अपराधसहस्त्राणिअपराधशतानिच पद्मनैकेनदेवेशःक्षमतेहेल



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यार्चितइत्यभिधानात् स्मृत्यालोकेतु एतेद्वात्रिंशदाख्याताअपराधाःफलैःसह वि
ष्णोरभ्यर्च्चनंसम्यगमीषाम्मार्ज्जनंविँदुरित्युक्तम् इतिपूजापङ्कजभास्करेविष्णुपूजा
कथनन्नामषोडशः प्रकाशः १६ एवन्देवषट्कंसम्पूज्यतद्भिन्नस्येष्टदेवतात्वेताम्पूजयेत्
तत्रायंविँशेषः यस्यागमोक्तकल्पेदीक्षाभवेत्सतेनैवकल्पेन यस्यतुपञ्चरात्रोक्तकल्पे
दीक्षासतेनकल्पेनपूजयेत् देवषट्कान्यतमस्येष्टदेवतात्वेतुस्वदीक्षोक्तकल्पेनपूजयात
न्त्रेणैवशिवम्भास्करमित्यादिवचनबोधितानित्यपूजापिनिर्व्वहतीतिगौडाः शिष्टा
स्तुदेवषट्कान्यतमस्येष्टदेवतात्वेपि पृथक्स्वेष्टदेवताम्पूजयन्ति तत्रपञ्चगौडाआगमो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





क्तामेवदीक्षांगृण्हन्तीति आगमोक्तेष्टदेवतासामान्यपूजापद्धतिः क्वचित्सप्रमाणाक्व चित्तुविस्तरभियाप्रमाणरहितापिमहामहोपाध्यायगोविन्दठक्कुरकृतपूजाप्रदीप महामाहोपाध्यायदेवनाथठक्कुरकृततन्त्रकौमुदी मन्त्रमहोदधि तन्त्रसाराद्यनुसारेण लिख्यते तत्रदेवतापूजा द्वारमागत्ययथोक्तासनउपविश्यदक्षिणहस्तस्यतर्ज्जन्यां राजतमङ्गुलीयकमनामिकायांसौवर्णमङ्गुलीयकञ्चविधियात्वरदातन्त्रेप्रथमपटले पूजाकालेसर्व्वदैवकुशहस्तोभवेच्छुचिः तर्ज्जन्यांरजतन्धार्य्यंस्वर्णन्धार्य्यमनामया कुशकार्य्यकरंयस्मान्नतुवन्याःकुशाःकुशाः कुशेनरहितापूजाविफलाकथितामया



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नान्यस्यरजतंस्वर्णन्धार्य्यंहिनिजमङ्गले इत्यभिधानात् ततआचामेत् तत्प्रकार
स्तु मूलेनत्रिरपः पीत्वाकरम्प्रक्षाल्याद्धिरोष्ठौचप्रक्षाल्यतर्ज्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्मुखंस्पृशे
त् ताभ्यामेवनासिकेच अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यान्नेत्रेकर्णौचस्पृष्ट्वा कनिष्ठाङ्गुष्ठाभ्या
न्नाभिन्तलेनहृदयञ्चसर्व्वाङ्गुलीभिर्म्मस्तकमंसौचस्पृशेत् ततःसामान्यार्घङ्कुर्य्या
त् तद्यथा स्ववामेरक्तचन्दनसिन्दूरपटवासान्यतमैः त्रिकोणंवृत्तञ्चतुरस्रंभूबिम्ब
ञ्चविलिख्य ओंआधारशक्तयेनमइतिगन्धादिभिःसम्पूज्यफडितिमन्त्रेणार्घपात्र
म्प्रक्षाल्यसाधारमर्घपात्रन्तत्रनिधाय नमइतिपठन्जलेनापूर्य्य तत्रओंगङ्गेचयमुने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



चैवगोदावरिसरस्वति नर्म्मदेसिन्धुकावेरिजलेस्मिन्त्सन्निधिङ्कुरुइतिमन्त्रेणक्रो
मित्यङ्कुशमुद्रयासूर्य्यमण्डलात्तीर्थान्यावाह्य प्रणवेनगन्धादींस्तत्रनिःक्षिप्यधेनु
मुद्राम्प्रदर्श्यतज्जलंस्पृशन् दशधाऽष्टधावामूलमन्त्रञ्जपेदितितन्त्रसारः अतएवभै
रवतन्त्रे ततआचमनङ्कृत्वासामान्यार्घम्प्रकल्पयेत् त्रिकोणवृत्तभूबिम्बमण्डलंर
चयेत्ततः आधारशक्तिंसम्पूज्यतत्राधारंविनिःक्षिपेत् अस्त्रेणपात्रंसंशोध्यत्वन्मन्त्रे
णचपूरयेत् निःक्षिपेत्तीर्थमावाह्यगन्धादीन्प्रणवेनतु दर्शयेद्धेनुमुद्रांत्वैवंसामान्यार्घ
विधिःस्मृतः सामान्यार्घेणदेवेशिपूजयेदिष्टदेवताइत्युक्तं पूजाप्रदीपेतु प्रणवेनपु



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ष्पादिकन्तत्रनिःक्षिप्यफडितिशोधयित्वातज्जलंस्पृशन्मूलमन्त्रन्त्रिर्जप्त्वाधेनुमुद्रा
म्प्रदर्शयेदित्यभिहितम्  मूलमन्त्रस्तुतत्तद्देवताकतत्तन्मन्त्रःउपचारदानेविशिष्टम
न्त्राज्ञानेप्रणवादिचतुर्थ्यन्तनमोन्ततत्तद्देवतानामापि तन्त्रकौमुद्याम् उपचारप्रदाने
षुविशिष्टोनास्तिचेन्मनुः ताराद्यांङेसमायुक्तनमोन्तान्देवताभिधाम् समुच्चरेदयम्म
न्त्रोमूलादिः परिकीर्त्तितइति अर्घादिपात्रन्तन्त्रकौमुद्याम् तत्वसागरे हैरण्यंराजत
न्ताम्रङ्कांस्यम्पालाशपत्रकम् रत्नोद्भवंशङ्खजंवाँपद्मपत्रमथापिवा पात्रमष्टविध
म्प्रोक्तंसर्व्वसिद्धिकरम्परमिति ततःपात्रान्तरेणोद्धृतेनतज्जलेनफडितिमन्त्रेणद्वारम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

भ्युक्ष्यगृहद्वारदेवताःपुष्पतोयाभ्याम्पूजयेत् तद्यथा मन्त्रमहोदधौ ऊर्द्ध्वोदुम्बरेमध्ये
ओंगणेशायनमः १ दक्षे ओंमहालक्ष्म्यैनमः २ वामे ओंसरस्वत्यैनमः ३ पुनर्द्दक्षि
णशाखायाम् ओंविघ्नेशायनमः ४ ओंगङ्गायैनमः ओंयमुनायैनमः वामेक्षेत्रपाला
यनमः ओंगङ्गायैनमः ओंयमुनायैनमः पुनर्द्दक्षे ओंधात्रेनमः वामे ओंविधात्रेनमः
पुनर्द्दक्षे ओंशङ्खनिधयेनमः वामे ओंपद्मनिधयेनमः इतिपूजयित्वा देहल्याम् ओं
अस्त्रायनमइति पूजाप्रदीपेतूर्णापद्धतौ द्वारस्यदक्षिणेवामेगणेशञ्चसरस्वतीम् उर्द्धो
दुम्बरकेमध्येतयोर्द्वारश्रियंयजेत् ततोदक्षिणशाखायांविघ्नंक्षेत्रेशमन्यतः तयोःपा



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्वंगतेगङ्गायमुनेपुष्पवारिभिः धातारञ्चविधातारंशङ्खपद्मनिधीतथा देहल्यामर्च्च येदस्त्रम्प्रतिद्वारमितिक्रमात् दक्षिणवामशाखयोः क्रमेणगङ्गायमुनेपूजनीये तदुक्त न्तत्रैव गङ्गाञ्चयमुनान्तद्वद्दक्षसव्यन्तुशाखयोरित्युक्ता द्वारोर्द्ध्वशाखायाम् दक्षिण शाखोपरिविघ्नेशन्तत्रैवमध्येमहालक्ष्मीन्तत्रैववामशाखोपरिसरस्वतीम् पुष्पतोया भ्यांसम्पूज्यदक्षिणशाखायांविघ्नेशम् वामशाखायाङ्क्षेत्रपालञ्चपूजयेत् ततोद क्षिणवामशाखयोः क्रमेणगङ्गायमुनेपूजनीये एवन्धात्रादयोपि विघ्नेशस्यक्षेत्रपा लस्यच दक्षिणवामपार्श्वयोः क्रमेणगङ्गायमुने एवन्धातृविधात्रोःपार्श्वयोः शङ्ख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू.पं. निधिपद्मनिधी देहल्यामस्त्रञ्च पूजयेदितिकेचित् ततस्तत्तद्देवतायाद्वारपालम्पूजये भा.
९६ दित्यभिहितम् तन्त्रसारेतुधातृविधातृशङ्खनिधिपद्मनिधीनाम्पूजानोक्ता अश प्र.१७
क्तश्चेत्पुष्पाक्षतवारिभिरेकदैव ओंद्वारदेवताभ्योनमइतिपूजयेत् ततोदक्षिणपादपु
रःसरन्द्वारस्यवामशाखांस्पृशन् स्वदक्षिणाङ्गंसङ्कोचयन् पूजागृहान्तः प्रविश्यओं
वास्तुपुरुषायनमः ओंब्रह्मणेनमइतिपूजयेत् तथाचागमविवेके ततोवामाङ्गसङ्कोच ९६
दक्षपादपुरःसरः पूजायामण्डपस्यास्यप्रवेशःसमुदाहृतः नैऋत्यान्दिशिवास्त्वीश
म्ब्रह्माणञ्चसमर्च्चयेदिति ततआसनोपवेशनात्पूर्वमासनोपवेशनानन्तरंवामूलमन्त्रे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ण दिव्यदृष्ट्यवलोकनेनदिव्यान्विघ्नान् ओंअस्त्रायफडितिमन्त्रेणजलेनान्तरिक्षगा
न् विघ्नान् वामपार्ष्णिघातत्रयेणभौमान्विघ्नांश्चोत्सार्य्य लाजचन्दनसिद्धार्थभस्मदू
र्व्वाङ्कराक्षताःविकिराइतिसन्दिष्टाःसर्वविघ्नौघनाशकाःइतिवचनबोधितविकरान्
फडितिसप्तवाराभिमन्त्रितान् गृहीत्वा ओंअपसर्प्पन्तुतेभूतायेभूताभुविसंस्थिताः
येभूताविघ्नकर्त्तारस्तेनश्यन्तुशिवाज्ञया इतिमन्त्रेणदिक्षुविकिरेत् ततोक्षतमादाया
स्त्रमन्त्रेणनाराचमुद्रयागृहान्तराविघ्नानुत्सारयेत् ततओंह्रींआधारशक्तिकमलास
नायनमः इत्यासनङ्गन्धादिनासम्पूज्यपठेत् आसनमन्त्रस्यमेरुपृष्ठऋषिः सुतल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





ञ्छन्दः कूर्म्मोदेवताआसनपरिग्रहणेविनियोगः ओंपृथ्वित्वयाधृतालोकादेवित्वं
ञ्विष्णुनाधृता त्वञ्चधारयमाम्भद्रेपवित्रङ्कुरुचासनमितिपठित्वास्वस्तिकादिक्रमे
णोपविशेत् इतितन्त्रसारः पूजाप्रदीपेतु द्वारपालपूजामुक्त्वादिव्यदृष्ट्यवलोकनेन
दिव्यान्विघ्नान् अस्त्रमन्त्रेणजलक्षेपेणान्तरिक्षगान् ओंअपसर्प्पन्तुतेभूताइत्या
दिमन्त्रम्पठित्वाफडितिनाराचास्त्रबुद्ध्यासिद्धार्थाक्षतकुसुमानिमण्डपान्तःप्रक्षिप्य
पार्ष्णिघातत्रयन्दत्वाभौमान्विघ्नांश्चोत्सार्य्यवामशाखान्दक्षिणांशेनस्पृशन् दक्षि ९७
णाङ्घ्रिणादेहलीं‌विलंघ्याङ्गंसङ्कोचयन् मण्डपम्प्रविशेत् ततोनैर्ऋत्यान्दिशिवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्वीशम्ब्रह्माणञ्चाभ्यर्च्य पञ्चगव्यार्घतोयाभ्याम्मण्डपम्प्रोक्ष्य ओंतीक्ष्णदंष्ट्रमहा
कायकल्पान्तदहनोपम भैरवायनमस्तुभ्यमनुज्ञान्दातुमर्हसि इतिभैरवानुज्ञाङ्गृ
हीत्वाचतुर्भिः संस्कारैर्म्मण्डपंशोधयेत् तद्यथा मण्डपम्मूलमन्त्रेणवीक्ष्यफडितिप्रो
क्ष्यफडितिकुशैस्ताडयित्वाहूमित्यभ्युक्षेत् ततोमण्डपञ्चन्दनागुरुकर्प्पूरैर्द्धूपयित्वा
कुशाजिनकम्बलोत्तरंविहितमासनम्वेदिकायांविन्यस्यजलेनाभ्युक्ष्यतत्रासनेआ
धारशक्तिप्रकृतिकूर्म्मानन्तपृथिवीः सम्पूज्य आसनमन्त्रस्येत्याद्यभिहितवान् ततः
पञ्चगव्येनमण्डपम्पारिशोधयेत् ततः स्वदशिणेअर्घपाद्याचमनीयमधुपर्क्कपात्राणिग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



न्धपुष्पादींश्चस्थापयेत् वामपार्श्वे अम्बुपूर्णपात्रञ्छत्रंव्यँजनमादर्शञ्चामरन्ता
म्बूलञ्चस्थापयेत् पृष्ठदेशेहस्तप्रक्षालनार्थम्पात्रंस्थापयेत् सर्व्वदिक्षुघृतप्रदीपाँश्च
स्थापयित्वाकृताञ्जलिःसन् वामे ओंगुरुभ्योनमः ओंपरमगुरुभ्योनमः ओंपरात्पर
गुरुभ्योनमः ओंपरमेष्ठिगुरुभ्योनमः दक्षिणे ओंगणेशायनमः मध्येऽमुकदेवतायैन
मःइतिप्रणमेत् ततःफडितिमन्त्रेणगन्धपुष्पाभ्यांकरौसंशोध्य ऊर्ध्वोर्ध्वतालत्रयन्द
त्वा छोटिकाभिर्द्दशदिग्बन्धनङ्कुर्य्यात् ततोरमितिजलधारयावह्निप्राकारञ्चिन्तये
त् इतितन्त्रसारः पूजाप्रदीपेतु मध्येदुर्ग्गाप्रणामानन्तरम्पश्चात् क्षेत्रपालन्नमस्कृ



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्य ओंसहस्त्रारहुम्फडितिरक्षांव्विधाय सुगन्धिपुष्पमर्द्दनहस्तौसुरभीकृत्यतत्पुष्प न्नाराचमुद्रयोत्तरतःक्षिप्त्वा फडितिकरौसंशोध्य ऊर्ध्वोर्ध्वतालत्रयन्दत्वाऽस्त्रमुद्रया दिग्बन्धनङ्कुर्य्यात् इत्युक्तम् अथभूतशुद्धिः तत्प्रकारस्तु मन्त्रमहोदधौ स्वाङ्केउ त्तानौहस्तौ कृत्वामूलाधारेस्थितां बिसतन्तु निभां व्विद्युत्प्रभाङ्कुण्डलीम्परदेवतांहू ङ्कारोत्थध्वनिनाप्रबुद्धाम्मूलाधारस्वाधिष्ठानमणिपूरकानाहताख्यचत्वारिचक्राणि भित्त्वासुषुम्णावर्त्मनाहृद्गतांस्मृत्वाहृदम्बुज स्थितम्प्रदीपकलिकाकारञ्जीवमादाय विशुद्धाज्ञाख्येद्वेचक्रेभित्त्वाब्रह्मरन्ध्रगतांस्मरेत् ततोहंसमन्त्रेणजीवम्ब्रह्मणिसँय्यो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





ज्यपादादिजानुपर्य्यन्तञ्चतुष्कोणंलमितिभूबीजाढ्यं सवज्रकम्पीतवर्णम्भूमण्डल
ञ्जान्वादिनाभिपर्य्यन्तमर्द्धचन्द्रनिभं श्वेतंवमितिवरुणबीजाढ्यंपद्मद्वयाङ्कितञ्ज
लमण्डलन्नाभेर्हृदयपर्य्यन्तन्त्रिकोणंरमितिवह्निबीजाढ्यंस्वस्तिकाङ्कितंरक्तवर्णंव
ह्निमण्डलं हृदोभ्रूमध्यपर्य्यन्तव्वँर्तुलंषड्बिन्दुलाञ्छितय्यँमितिवायुबीजाढ्यं धूम्र
वर्णव्वायुमण्डलम्भ्रूमध्याद्ब्रह्मरन्ध्रपर्य्यन्तंवर्त्तुलंस्वच्छंहंबीजाढ्यङ्गगनमण्डलञ्चवि
चिन्त्यगन्धरसरूपस्पर्शशब्दैःनासिकाजिव्हाचक्षुस्त्वक्श्रोत्रैः वाक्पाणिपादपायू ९९
पस्थैश्चक्रमेणयुतानिचतानिविभाव्य ततः समानोदानव्यानापानप्राणान्धरादिम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ण्डलगतान् पञ्चवायून्स्मरेत् एषुचपञ्चसुमण्डलेषुतत्तदीशान् क्रमेणब्रह्मविष्णुशि
वेशानसदाशिवान् ध्यात्वानिवृत्तिप्रतिष्ठाविद्याशान्तिशान्त्यतीतेतिपञ्चकलाअपिध
रादिगताः स्मरेत् ततोभुवञ्जलेजलव्वँह्नौवह्निव्वाँयौवायुमाकाशेआकाशमहङ्कारेऽ
हङ्कारम्महत्तत्वेमहान्तम्प्रकृतौप्रकृतिमात्मनिविलापयेत् ततःशुद्धसच्चिन्मयोभूत्वाद
क्षकुक्षिस्थितमङ्गुष्ठपरिमितम्ब्रह्महत्याशिरोयुक्तंकनकस्तेयबाहुकं मदिरापानहृद
यंस्वर्णस्तेयकटीयुतंपापिसय्यँयोगिपादयुगलमुपपातकरोमाणंखड्गचर्मधरंदुष्टमधो
वक्त्रन्दुःसहङ्कृष्णम्पापपुरुषंव्विचिन्त्य यमितिबीजंषोडशवारंजपन् वायुनाशरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. रंसम्पूर्य्यस्वशरीरयुतमेनव्विँशोष्य रमित्यग्निबीजञ्चतुः षष्ठिवारञ्जपन् तदुत्थेनव भा.
१०० ह्निनास्वशरीरयुतम्पापपुरुषङ्कुम्भकेनदग्ध्वाय मितिवायुबीजन्द्वात्रिंशद्वारञ्जपन् प्र १७
पापनरोद्भवम्भस्मपृथक्कृत्यबहीरेचयेत् ततोवमितिसुधाबीजंस्मरन्ललाटेचन्द्र
न्नीलाचन्द्रमण्डलाद्गलितामृतेनस्वदेहोत्थम्भस्मसम्प्लाव्यल मितिभूबीजेनघनीकृ
त्यकनकाण्डाकारव्विँचिन्त्य विशुद्धमुकुरसन्निभंविचिन्त्यहमित्याकाशबीजंस्मरन्
मूर्द्धादिपादपर्य्यन्तन्तान्यङ्गानिविरचयेत् ततश्चैतन्यादाकाशादीनिभूतान्युत्पाद्यप १००
रसङ्गात्सुधामयजीवंसोहमितिमन्त्रेणसमादायहृदयाम्बुजेसंस्थाप्य मूलाधारगता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ङ्कुण्डलींस्मरेत् अस्याआवश्यकत्वमाह यामले भूतशुद्धिंलिपिन्यासंऽविँनायस्तु
प्रपूजयेत् विपरीतफलन्दद्यादभक्त्यापूजनंयथेति पूजाप्रदीपेतु हृत्पद्मकर्णिकास्थ
न्दीपशिखानिभञ्जीवात्मानंहंसइतिमन्त्रेण सुषुम्णावर्त्मनामस्तकोपरिसहस्रद
लकमलावस्थितेपरमात्मनिसंयोज्यआकाशवायुतेजोजलपृथिवीश्रोत्रत्वक्चक्षूरस
नघ्राणमुखपाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्ध वचनादानगतिविसर्गानन्दा
त्मकपञ्चविंशतितत्वानिपरमात्मानिबीजभावेनव्युत्क्रमाल्लीनानिविचिन्त्य वामना
सापुटे यमितिवायुबीजंधूम्रंवायुमंडलस्थंविचिन्त्य नाभिचक्रस्थवायुमण्डलावस्थि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





तवायुनाऐक्यव्विँभाव्य पूरकङ्कृत्वा कुम्भकेवामकुक्षिस्थकृष्णवर्णपापपुरुषेणसह
शुष्कंशरीरव्विँचिन्त्यदक्षिणनासापुटेनवायुंरेचयेत् ततोदक्षिणनसापुटेरमितिव
ह्निबीजंरक्तवर्णव्वँह्निमण्डलस्थंलीनमारुतव्विँचिन्त्यहृदयस्थवह्निमण्डलावस्थितव
ह्निनाऐक्यव्विँभाव्य पूरकेवह्निपूर्णशरीरव्विचिन्त्य कुम्भकेदग्धञ्चिन्तयित्वावाम
नासापुटेनभस्मनासहवायुंरेचयेत् ततोवामनासापुटे ठमितिचन्द्रबीजंश्वेतञ्जलम
ण्डलस्थव्विँचिन्त्यसहस्त्रपत्रकमलस्थजलमण्डलस्थामृतेनएकीभूतंसम्भाव्य पूर
केठमितिबीजंललाटचन्द्रंनीत्वाकुम्भकेवमित्यमृतबीजेनवह्निमयीञ्चन्द्रादमृतवृष्टि



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्निपात्यदोषजातव्विँश्लेषयन् दिव्यंशरीरमुत्पाद्यआपादतलमस्तकममृतेनाप्लाव्य दक्षिणनासापुटेनवायुंरेचयेत् पूरकेषोडशमात्रयाकुम्भकेचतुःषष्ठिमात्रयारेचकेद्वा त्रिंशन्मात्रयातत्तन्मन्त्रजपः ततस्तत्त्वानिस्वस्वस्थानानिनीत्वाजीवात्मानंपरमात्म नःसकाशात्सोहमितिमन्त्रेणह्रदयाम्बुजमानयेदिति तथाचसारसमुच्चये सय्यैाँ ज्यजीवमथदुर्ग्गममध्यनाडीमार्ग्गेणपुष्करनिविष्टाशिवेसुसूक्ष्मे हंसेनदेहममरेन्द्रपु रोगतेनसार्द्धेन्दुनाभासितसाद्विदधीतबुद्ध्याइति अमरेन्द्रपुरोगतेन लकारप्रथमेनरे फेणेत्यर्थः तन्त्रान्तरेतु सुषुम्णावर्त्मनात्मानम्परमात्मनियोजयेत् योगयुक्तेनवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



धिनाचिन्मन्त्रेणसमाहितः कारणेसर्व्वभूतानांतत्वान्यपिचचिन्तयेत् बीजभावेनली
नानिव्युत्क्रमात्परमात्मनीति सोहंमन्त्रेणयोजनमुक्तम् सोहमितिचिन्मन्त्रः अतए
वतत्रहंसमन्त्रेणानयनमुक्तम् एवञ्च सोहम्मन्त्रेणयोजनम् हंसमन्त्रेणानयनम् हं
समन्त्रेणयोजनम् सोहम्मन्त्रेणानयनमित्युभयमपिप्रामाणिकमेवेत्याहुः अशक्त
स्तुमूलाधरोत्थितकुण्डलिन्याल्हृद्वर्त्तिजीवात्मानंहंसइतिमन्त्रेणब्रह्मरन्ध्रस्थपरमशि
वेसंयोज्यसोहमितिमन्त्रेणजीवपरमात्मनोरैक्यंविचिन्त्य तस्माद्ब्रह्मणःप्रादुर्भू
तंशरीरंभावयेदिति इतिभूतशुद्धिः अथप्राणस्थापनम् अस्यप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्याजे





Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शपद्मजाऋषयः ऋग्यजुःसामानिछन्दांसिप्राणशक्तिर्देवता आँबीजम् ह्रींशक्तिः क्रोंकीलकम्प्राणस्थापनेविनियोगः शिरासि ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यऋषिभ्योनमः मुखे ऋग्यजुःसामभ्यश्छन्दोभ्योनमः हृदि प्राणशक्त्यैदेवतायैनमः गुह्ये आँबीजाय नमः पादयोः ह्रींशक्तयेनमः सर्वाङ्गे क्रोंकीलकायनमः इतिऋष्यादीन्विन्यस्य ङंकंखंघंगंनमोवय्वग्निजलभूम्यात्मनेहृदयायनमइतिहृदि ञंचंछंझंजंशब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मनेशिरसेस्वाहाइतिशिरसि णंटंठंढंडंश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिव्हाघ्राणात्मनेशिखायैवषडितिशिखायाम् नंतंथंधंदंवाक्पाणिपादपायूपस्थात्मनेकवचायहूमितिबा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





ङ्क्षोः मंपंफंभंबंवक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मनेनेत्रत्रयायवौषडितिनेत्रयोः शं
यंरंवंलंहंषंक्षंसंळंबुद्धिमनोऽहंकारचित्तात्मनेअस्त्रायफट् ततोनाभ्यादिपादाग्रान्तम्
आंनमः कण्ठादिनाभ्यन्तं ह्रींनमः मूर्द्धादिकण्ठान्तंक्रोंनमः ततोलेलिहानमुद्रयाहृद
यंस्पृशन्यंत्वगात्मनेनमः रंअसृगात्मनेनमःलंपरमात्मनेनमःवंमेदआत्मनेनमःशंअ
स्थ्यात्मनेनमःषंमज्जात्मनेनमःसंशुक्रात्मनेनमःहौंओजआत्मनेनमः हंप्राणात्मनेन
मःसंजीवात्मनेनमःइतियादीन्न्यसेत् ततोयंरंलंवंशंषंसंळंक्षंहौंहंसः इत्यनेनमूर्द्धा दि
पादांतंव्यापकंकुर्य्यात् इतिप्राणप्रतिष्ठांविँधायमातृकान्यासङ्कुर्य्यात् अस्याव



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्यकत्वमाह फेत्कारिणीतन्त्रे मन्त्रामूकत्वमायान्तिविन्यासेनविनालिपेः सर्व्वमन्त्र
प्रसिद्ध्यर्थन्तस्मादादौलिपिंन्यसेत्इति तत्प्रकारोयथा अस्यमातृकामन्त्रस्यब्रह्मा
ऋषिर्गायत्रीछंदोमातृकासरस्वतीदेवताहलोबीजानिस्वराः शक्तयःअव्यक्तंकीलकं
लिपिन्यासेविनियोगःदेहशुद्धौविनियोगइतिप्रदीपःशिरसिओंब्रह्मणेऋषयेनमःमु
खेओंगायत्रीछंदसेनमः हृदिओंमातृकासरस्वत्यैदेवतायैनमः गुह्ये हलभ्योबीजेभ्यो
नमःपादयोःस्वरेभ्यःशक्तिभ्योनमः सर्व्वाङ्गे अव्यक्तायकीलकायनमः इतिन्यस्य त
तःकराङ्गन्यासः अंकंखंगंघंङंआंअङ्गुष्ठाभ्यान्नमःइंचंछंजंझंञंईंतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



उंटंठंडंढंणंऊंमध्यामाभ्यांवषट् एंतंथंदंधंनंऐंअनामिकाभ्यांहूं ओंपंफंबंभंमंऔंकनि
ष्ठिकाभ्यांवौषट् अंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षंअःकरतलकरपृष्ठाभ्यांफट् करन्यासेपिअ
ङ्गुष्ठाभ्यान्नमइत्यादिस्थानेषु हृदयायनमः इत्यङ्गुष्ठयोः शिरसेस्वाहाइतितर्ज्ज
न्योः शिखायैवषाडितिमध्यमयोः कवचायहूमित्यनामिकयोः नेत्रत्रयायवौषडितिक
निष्ठयोः अस्त्रायफडितिकरतलयोर्व्विन्यसेदितिपूजाप्रदीपः षडङ्गानिविधेयानिजा
तियुक्तानिदैशिकैः अङ्गुष्ठादिष्वङ्गुलीषुन्यसेदङ्गैःसजातिभिः अस्त्रन्तुतलयोर्न्य
स्यकुर्य्यात्तालत्रयन्ततः दिशस्तेनैवबध्नीयाच्छोटिकाभिःसमाहितः हृदयादिषुविन्य



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्येदङ्गमन्त्रांस्ततःसुधीः हृदयायनमःपूर्वंशिरसेवह्निवल्लभा शिखायैवषडित्युक्तंकव
चायहुमीरितं नेत्रत्रयायवौषट्स्यादस्त्रायफडितिक्रमात् षडङ्गमन्त्रानित्युक्तान्षड
ङ्गेषुनियोजयेत् पञ्चाङ्गानिमनोर्यस्यतत्रनेत्रमनुंत्यजेत् अङ्गहीनस्यमंत्रस्यस्वेनै
वाङ्गानिकल्पयेत् जातयश्च नमःस्वाहावषट्हुञ्चवौषट्फट्कारएव्च जातिषट्कमिति
प्रोक्तंहृदयाद्यस्त्रसंयुतामितिकारणागमोक्तेः ततएवमेवहृदयादिन्यासंकुर्य्यात् त
तोन्तर्म्मातृकान्यासः तद्यथाअकारादिषोडशस्वरान्सबिन्दून्षोडशदलकमलेक
ण्ठमूलेन्यसेत् ककारादिद्वादशवर्णान्सबिन्दून्द्वादशदलकमलेहृदयेन्यसेत् डका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



रादिदशवर्णान्सबिन्दून्दशदलकमलेनाभौन्यसेत् वकारादिषड्वर्णान्सबिन्दून् 
षट्दलकमलेलिङ्गमूलेन्यसेत् वकारादिचतुरोवर्णान्सबिन्दून्चतुर्द्दलकमलेमूला 
धारेन्यसेत् हक्षवर्णद्वयंसबिन्दुन्द्विदलपद्मेभ्रूमध्येन्यसेत् ततोबाह्यमातृकान्यासः
तस्याध्यानन् पञ्चाशल्लिपिभिर्व्विभक्तमुखदोःपन्मध्यवक्षस्थलाम्भास्वन्मौलिनिब
द्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् मुद्रामक्षगुणंसुधाढ्यकलशंव्विँद्याञ्चहस्ताम्बुजै
र्ब्बिभ्राणाव्विँशदप्रभान्त्रिनयनाव्वाँग्देवतामाश्रयेत् इतिमुद्रादिकमधोदक्षिणह 
स्तमारभ्यप्रादक्षिण्येनध्येयम् एवन्ध्यात्वान्यसेत् तद्यथाअंनमोललाटे ॐनमोमु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खच्छ्त्ते एवंइंनमःदक्षनेत्रे ईंनमःवामनेत्रे उंऊंकर्णयोःऋंॠंनसोःऌंॡंगण्डयोःएंओ
ष्ठे ऐंअधरे ओंऊर्द्ध्वदन्तपंक्तौ औंअधोदन्तपंक्तौ अंब्रह्मरन्ध्रे अःमुखे कंदक्षबाहुमूले
खंकूर्प्परे गंमणिबन्धे घंअङ्गुलीमूले ङंअंगुल्यग्रे चंछंजंझंञंवामबाहुमूलसन्ध्यग्र
केषु एवंटंठंडंढंणं दक्षिणपादमूलसंध्यग्रकेषु तंथंदंधंनं वामपादमूलसन्ध्यग्रकेषु
पंदक्षिणपार्श्वे फंवामपार्श्वे बंपृष्ठे भंनाभौ मंजठरे यंहृदि रंदक्षबाहुमूले लंककुदिवं
वामबाहुमूले शंहृदादिदक्षिणकराग्रपर्य्यंते षंहृदादिवामकराग्रपर्य्यंते संहृदादिदक्ष
पदे हंहृदादिवामपदे ळंहृदाद्युदरे क्षंहृदादिमुखे सर्व्वत्रनमोन्तान्न्यसेत् हक्षमध्येळ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

कारस्थितौप्रमाणंतु वर्णमालाजपे अनुलोमविलोमेनक्लृप्तयावर्णमालया आदिळा
न्तळादिआन्तक्रमेणपरमेश्वरि क्षकारम्मेरुरूपञ्चलंघयेन्नकदाचनेतिमुण्डमातन्त्रं
बहुभिरस्याकारोच्चारणयोर्भेदोनाक्रियते वेदेऽस्योच्चारणस्थानञ्जिह्वामूलं देवना
गरवर्णमालायाम् अस्याकारएवम्प्रकारः ळइतिअस्यप्रयोगः अग्निमी ळे हेआग्नि
वीळचित् इत्यादिऋग्वेदे एवंसृष्टिन्यासव्विँधायस्थितिन्यासङ्कुर्य्यात् तद्यथा ऋ
षिश्छन्दश्चपूर्व्ववदेवदेवतात्रविश्वपालिनी ध्यानंतु उपविष्टाव्वँल्लभाङ्कध्यायेद्देवी
मनन्यधीः मृगबालव्वँराव्विँद्यामक्षसूत्रन्दधत्करैः मालाविद्यालसद्धस्तांवहन्ध्येयः



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवोगिरमिति ततोऽकारादिक्षकारांतान्वर्णान्सविसर्ग्गबिन्दून्पूर्व्वोक्तस्थानेषु विन्यस्यतादृशानेवअकारादिठकारान्पूर्व्वोक्तस्थानेषुविन्यसेत् यदाह एवंध्यात्वाड काराद्यान्वर्णानङ्गेषुविन्यसेत् गुल्फादिजानुपर्य्यन्तंस्थितिन्यासोयमीरितः ततःसं हारमातृकान्यासः ऋष्यादिरत्रापिपूर्व्ववत् तस्याध्यानम् अक्षस्रक्टङ्कसारङ्गवि द्याहस्तान्त्रिलोचनां चन्द्रमौलिङ्कुचानम्रांरक्ताब्जस्थाङ्गिरंभजे अक्षस्त्रगादीनिद क्षिणाधोहस्तमारभ्यध्येयानि न्यासस्तुबिन्दुयुक्तक्षकाराद्यकारान्तवर्णानाम् यथा क्षंनमोहृदादिमुखेइत्यादि एवंसंहारन्यासङ्कृत्वापुनःसृष्टिन्यासंस्थितिन्यासञ्चकु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



र्य्यात् ततःप्राणायामंकुर्य्यात् कृत्वेत्थम्मातृकान्यासम्प्राणायामंसमाचरेदित्युक्तेः त

द्यथामूलमंत्रस्यस्यप्रणवमन्त्रस्यवाषोडशवारजपेनवायुम्पूरयेत् तस्यचतुःषष्टिवा

रजपेनवायुङ्कुम्भयेत् तस्यद्वात्रिंशद्वारजपेनवायुंरेचयेत् पुनर्द्दक्षिणेनापूर्य्यउभा

भ्याङ्कुम्भयित्वावामेनरेचयेत् पुनर्व्वामेनापूर्य्यउभाभ्याङ्कुम्भयित्वादक्षिणेनरेच

येत् अशक्तस्तुचतुर्द्धाजपन्पूरयित्वाषोडशधाजपन्कुंभयित्वाचाष्टधाजपन्रेचयेदि

तिक्रमेणप्राणायामङ्कुर्य्यात् अशक्तस्तत्तुरीयतइत्युक्तेःतत्राङ्गुलिनियमः कनि

ष्ठानामिकाङ्गुष्ठैर्न्नासापुटधारणम्प्राणायामःततःपीठन्यासःप्राणायामविँध्यःयेत्थ



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्पीठन्यासंसमाचरेत् तत्रादौहृदिविन्यासंकथयामियथातथम् आधारशक्तिंकू
र्म्माख्यमनन्तम्पृथिवीन्तथा क्षीराब्धिश्वेतद्वीपञ्चमणिमंडपमेवच कल्पद्रुम्मणिवे
दीञ्चरत्नसिंहासनन्तथाप्रणवादिनमोन्तेनन्यसेत्साधकसत्तमइत्युक्तेः तद्यथाओं
आधारशक्तयेनमःओंप्रकृत्यैनमः एवङ्कूर्म्माय अनन्ताय पृथिव्यै क्षीरसमुद्राय
श्वेतद्वीपाय मणिमण्डपायकल्पवृक्षाय मणिवेदिकायै रत्नसिंहासनाय एतत्सर्व्वंहृ
दि ततोदक्षिणस्कन्धे धर्म्मायनमः वामस्कन्धे ज्ञानायनमः वामोरौ वैराग्याय दक्षि
णोरौऐश्वर्य्याय मुखे अधर्म्मायवामपार्श्वे अज्ञानाय नाभौ अवैराग्याय दक्षपार्श्वे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



अनैश्वर्य्याय सर्व्वत्रप्रणवादिनमोन्तेनन्यसेत् हृदि ओंअनन्तायनमः एवंओंप
द्मायनमः अंसूर्य्यमण्डलायद्वादशकलात्मनेनमः ऊंसोममण्डलायषोडशकलात्मने
नमः मंवह्निमण्डलायदशकलात्मनेः० संसत्वाय०रंरजसे०तंतमसे०आंआत्मने० अं
अन्तरात्मने० पंपरमात्मने० ह्रींज्ञानात्मने० इत्यन्तंविँन्यस्य इतितन्त्रसारः हृत्प
द्मस्यपूर्व्वादिकेशरेषुपीठशक्तीः मध्येपीठमनुञ्चन्यसेत् तत्रऋष्यादिन्यासः मूर्द्धि
अमुकऋषयेनमः मुखेअमुकछन्दसेनमः हृदिअमुकदेवतायैनमः गुह्येअमुकबीजा
यनमः पादयोःअमुकशक्तयेनमः सर्व्वाङ्गेअमुककीलकायनमः ततस्तत्तत्कल्पोक्त



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुद्राम्प्रदर्श्यध्यानङ्कुर्य्यात् एतच्चध्यानन्देवतारूपतयास्वचिन्तनम् हृत्कमलकर्णिकायांदेवताचिन्तनव्वाँ ततोदेवतारूपतयाध्यातस्यात्मनोमानसैरुपचारैःपूजनङ्कुर्य्यादितिप्रदीपः मानसपूजायथा हृत्पद्ममध्येदेवतांविभाव्य मूलाधारतउत्थाय कुण्डलिनीन्द्वादशान्तन्नीत्वा परमशिवेनसहसङ्गमंव्विभाव्य तदुत्थामृतधारया स्वेष्टदेवताचरणयोःपाद्यन्दद्यात् ततोमनश्चार्घ्यन्दत्वा सहस्रदलपद्मभृङ्गारललितपरमामृतजलेनआचमनीयम्मुखे पञ्चविंशतितत्त्वेनगन्धञ्चअहिंसाव्विँज्ञानङ्क्षमान्दयां अलोभं अमोहं अमात्सर्य्यं अमायां अनहङ्कारं अरागं अद्वेषं इंद्रियाणि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



द्वादशएतानिपुष्पाणिचप्रदापयेत् ततोवायुरूपंधूपन्तेजोरूपंदीपञ्चदद्यात् अम्ब
रञ्चामरम् दर्प्पणंसूर्यम् चन्द्रञ्छत्रम् पद्मन्तुमेखलाम् आनन्दंहारमुत्तमम् अनाह
तध्वनिमयीङ्घण्टांनिवेदयेत् ततःसुधारसाम्बुधिम्मांसपर्व्वतंब्रह्माण्डपूरितम्पाय
सञ्चदत्वा मनोनर्त्तनसत्तालैःशृङ्गारादिरसोद्भवैः नृत्यैर्ग्गीतैश्चवाद्यैश्चतोषयेत्परमे
श्वरीम् एवंसम्पूज्यअभेदेनजपःकार्य्यः इतिमानसपूजाविधिः ततोविशेषार्घपात्र
रूपशङ्खस्थापनङ्कुर्य्यात् तद्यथा अर्घस्यत्रीणिपात्राणिपाद्यस्यापित्रयम्भवेत् त
थैवाचमनीयानिपात्राणिचविभागशः तथाकरणदौर्ब्बल्यादेकमेवप्रशस्यते किन्तु





Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्यार्घ्यविशेषार्घ्यद्वयस्यावश्यकत्वम् तथाचनवरत्नेश्वरे एकपात्रन्नकर्त्तव्यँय्य
द्दिसाक्षान्महेश्वरः मन्त्राःपराङ्मुखायान्तिआपदश्चपदेपदे इहलोकेदरिद्रःस्या
न्मृतेचपशुताव्व्रँजेत् इति राघवभट्टधृतं सर्व्वत्रैवप्रशस्तोब्जःशिवसूर्य्यार्च्चनव्विँना
अब्जःशङ्खःस्ववामाग्रेत्रिकोणमण्डलङ्कुर्य्यात् इतितन्त्रसारःत्रिकोणषट्कोणवृ
त्तचतुरस्राणिकुर्य्यांदितिमन्त्रमहोदधिःततस्तदुपरि त्रिपदीमारोप्य आधारशक्तये
नमइतितांसम्पूज्य अस्त्रायफडितिशङ्खम्प्रक्षाल्यतदुपरिसंस्थाप्य नमइतिम
न्त्रेणगन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपदूर्व्वास्तत्रनिःक्षिपेत् तन्त्रकौमुद्याम् ततो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



र्घस्थापनङ्कुर्य्यादिष्टदेवानुसारतः गन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपैः सदूर्व्वैस
र्व्वदेवानामेतदर्घमितीरितम् अस्त्रेणपात्रम्प्रक्षाल्यवामतोवह्निमण्डले स्थापयि
त्वाहृदातत्रगन्धपुष्पादिकानपि निःक्षिप्यप्रतिलोमेनमूलान्तेमातृकांजपेत् इत्याभि
धानात् ततोविमलजलेनविलोममातृकावर्ण्णैर्म्मूलेनवापूरयेत् शुद्धतीर्थजलेनैवपूर
येच्छङ्खपात्रकम् विलोममातृकाभिर्व्वामूलेनाविधिनासुधीरित्युक्तेः विलोममातृ
कायथा क्षंळंहंसंषंशंवंलंरंयंमंभंबंफंपंनंधंदंथंतंणंढंडंठंटंञंझंजंछंचंङंघंगंखंकंअःअं
औंओंऐंएंॡंऌंॠंऋंऊंउंईंइंआंअंइति ततोमंवह्निमण्डलायदशकलात्मनेनमइति





Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिपदिकायाम्पूजा अंसूर्य्यमण्डलायद्वादशकलात्मनेनमइतिशङ्खेपूजा उंसोमम
ण्डलायषोडशकलात्मनेनमइति जलेगन्धपुष्पादिभिःसम्पूज्य ओंगङ्गेचयमुनेचैव
गोदावरिसरस्वति नर्म्मदेसिन्धुकावेरिजलेस्मिन्सन्निधिङ्कुरुइत्यनेनाङ्कुशमुद्र
यासूर्य्यमण्डलात्तीर्थमावाह्य अमुकदेवतेइहागछइहागछ इहतिष्ठइहतिष्ठ इतिम
न्त्रेणस्वहृदयाद्देवतान्तत्रावाह्य हमितितर्ज्जनीभ्यामवगुण्ठयेत् तज्जलन्नयनन्नयनम
न्त्रवीक्षितवँम्र्म्मणासमवगुण्ठ्यदोर्य्युजा इति इतिपूजाप्रदीपेऽभिधानात् अवगुण्ठ
नङ्कुराभ्यामेवेति नयनमन्त्रंवौषाडिति ततःफडितिमन्त्रेणगालिनीमुद्राम्प्रदर्श्यवौष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 डिततज्जलँ्वीक्ष्यपुनरङ्गमन्त्रैः संकलीकृत्यगन्धपुष्पाभ्यान्देवतान्तत्रसम्पूज्यतदु 
 परिमत्स्यमुद्रयाच्छाद्यशङ्खमुद्राम्प्रदर्श्यमूलमन्त्रमष्टधाजपेत् तथाचगौतमीये 
गन्धपुष्पैःसमभ्यर्च्यकृष्णाख्यन्धामयोजयेत् अष्टकृत्वोजपेन्मन्त्रंशिखायाङ्गालि
नींन्यसेत् सकलीकरणञ्चदेवताङ्गषडङ्गन्यासकरणम् शैवागमे देवताङ्गषडङ्गञ्चस
कलीकरणम्भवेदिति अत्रकृष्णपदन्तत्तद्देवतापरम् ततोधेनुमुद्राम्प्रदर्श्य अस्त्रेणसं
रक्ष्यतस्मात्किञ्चिज्जलम्प्रोक्षणीपात्रेनिःक्षिप्य तेनोदकेनात्मानम्पूजोपकरणञ्चा 
भ्युक्ष्यसिंहासनादौतत्तद्देवतायन्त्रादिपूजापीठंसंस्थाप्यपीठपूजाङ्कुर्य्यात्सायथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीठस्योत्तरेगुरुपङ्क्तिं पूजयेत् यथा वायव्यादीशपर्य्यन्तम् ओंगुरुभ्योनमः ओंपरम
गुरुभ्योनमःओंपरापरगुरुभ्योनमःओंपरमेष्ठिगुरुभ्योनमः पीठमध्येओंआधारश
क्तयेनमः एवङ्कूर्म्माय शेषाय पृथिव्यै क्षीरसमुद्राय श्वेतद्वीपाय मणिमण्डपाय
कल्पवृक्षाय मणिवेदिकायै रत्नसिंहासनाय अग्निकोणे धर्म्माय नैर्ऋतीवाय्वीशा
नेषु ज्ञानंवैराग्यमैश्वर्य्यञ्च पूजयेत् ततःपूर्वादिचतुर्द्दिक्षुअधर्म्माज्ञानावैराग्यानै
श्वर्य्याणिपूजयेत् मध्येपुनः अनन्तादिर्ह्रींज्ञानात्मनेनमइत्यन्तम्पूर्वोक्तम्प्रपूज्यपू
र्वादिकेशरेषु मध्येषुच तत्तत्कल्पोक्तपीठशक्तीःसम्पूज्यपीठमनुञ्चपूजयेत् पूर्वादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





दिङ्नियमस्तु यामले पूज्यपूजकयोर्म्मध्यम्प्राचीतिकीर्त्यतेबुधैः तद्दक्षिणन्दाक्षिणं
स्यादुत्तरञ्चोत्तरम्मतम् पृष्ठन्तुपाश्चिमंज्ञेयंसर्व्वत्रैवंप्रयोजयेत् इतिपुन्देवतापरम्
पुरन्दरमुखोमन्त्रीयदायन्त्रेप्रपूजयेत् देवीपश्चात्तदाप्राचीप्रतीचीदेवतापुरः एवम्
उत्तराभिमुखोभूत्वायदादेवीम्प्रपूजयेत् उत्तराशातदादेविपूर्व्वाशैवानिगद्यते ईशा
नकोणन्देवेशितदाग्नेयम्प्रचक्षतेइतिवचनात् अथपूजा साचयन्त्रेप्रशस्ता तदभावेच
तुर्द्वारभूपुरावृताष्टदलपद्मे पूजाप्रदीपे आदौलिखेद्यन्त्रराजन्तत्तत्कल्पोक्तलक्षण
म् सौवर्णेराजतेताम्रेपीठेभूर्ज्जपटेभुवि विनायन्त्रेणचेत्पूजादेवतानप्रसीदति कल्पो



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्तयन्त्राभावेतु भूपुरावृतश्चतुर्द्वारमष्टदलंलिखेत् इत्यभिधानात् यन्त्रलेखनाद्यश
क्तस्तुशालग्रामादिपूजाचक्रे ओंआधारशक्त्यादिपीठदेवताभ्योनमः इत्यनेनजपा
करवीरापराजिताद्यन्यतमपुष्पविशेषार्घोदकचन्दनाक्षतैरेकदैवपीठदेवताः संपूज्या
वाहनङ्कुर्य्यात् तद्यथा पूजाधारयंत्रेमूलेनतत्तद्देवतामूर्त्तिम्परिकल्प्य कूर्म्ममुद्राञ्ज
लिनामातृकावर्णधियारक्तपुष्पाणिगृहीत्वा स्वहृदयाब्जेविद्युत्पुञ्जनिभस्फुरत्पूज्यदे
वतातेजः सुषुम्णावर्त्मनासहस्त्रदलकमलमध्यवर्त्तिनिपरमशिवेसय्यँयोज्यपरमामृत
लोलितश्चिदानन्दघनव्विँभाव्यवामनासामार्ग्गेणवायुबीजेन करस्थपुष्पाञ्जलौ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

मातृकाम्भोजस्वरूपेहसौः कर्णिकेस्वरद्वन्द्वाष्टकशोभमानकेसराष्टकेकचटतपयशल
वर्ग्गाष्टकसहिताष्टपत्रसहिते दिग्गतवकारकोणगतठकारभूपुरावृतेसय्योँज्यकाम
कलात्मिकान्देवतान्ध्यायेत् ध्यानय्यँथा भावचूडामणौ मुखाब्बिँन्दुवदाकारन्तदधः
कुचयुग्मकम् सर्व्वविद्यासुसम्पन्नं सर्व्ववाग्विभवप्रदम् सर्व्वार्थसाधनन्देवं स
र्व्वरञ्जनकारकम् तदधःसपरार्द्धन्तुसुपरिष्कृतमण्डलम् सर्व्वदेवादिभूतञ्च सर्व्व
देवनमस्कृतम् सर्व्वानन्देनसम्पूर्णं सर्व्वस्यचप्रवर्त्तकम् एतत्कामकलाध्यानं सुगो ११३
प्यंसाधकोत्तमैरिति ओंदेवेशिभक्तिसुलभे परिवारसमन्विते यावत्त्वांपूजयिष्यामि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तावत्त्वंसुस्थिराभवइतिपठन् कल्पितमूर्तेःशिरसिपुष्पाञ्जलिन्दत्वादेवतातेजः पुष्पाञ्जलिमपहायब्रह्मरन्ध्रद्वारेणतस्यामूर्त्तेर्हृदयंप्रविश्यस्थिरीभूतंभावयेत् तन्त्रकौमुद्यान्तु ध्यानमात्मेष्टदेवस्यमनसावेदनम्मतम् तदपिद्विविधम्प्रोक्तंनिर्गुणंसगुणन्तथा यज्जीवब्रह्मणोरैक्येसोहंस्यामितिवेदनम् तदेवनिर्गुणन्ध्यातमितिवेदाविदोविदुः आत्मनोहृदयाम्भोजङ्कर्णिकाकेशरान्वितम् प्रफुल्लंसूर्य्यसोमाग्निमण्डलेनविराजितम् स्वीयेष्टदेवतान्तत्रध्यायेदागमवेदिताम् एवय्यँद्वेदनन्तद्धिसगणन्ध्यानमुच्यते मूलाधारेप्रदीपाभन्दैवन्तेजोविचिन्तयेत् मूलमन्त्रेणतत्तेजःसुषुम्णावर्त्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



नाशिवे सध्येयोँज्यानीयभालंतश्चिन्तयित्वेष्टदेवताम् नासिकारन्ध्रमार्ग्गेणनिर्ग्ग
तेसुमनोहरम् करस्थपुष्पसम्भारे मातृकाम्भोजरूपिणि सध्येयँाज्यब्रह्मरंध्रेणमू
र्तौतस्याविधानतइत्यभिहितम् ततआवाहनमुद्रयामूलान्तेअमुकदेविइहावहइहा
वह स्थापनमुद्रयामूलान्तेअमुकदेविइहातिष्ठइहतिष्ठसान्निधापनमूद्रयामूलान्तेअ
मुकदेविइहसन्निधेहिइहसन्निधेहि सान्निरोधनमुद्रयामूलान्तेअमुकदेविइहसान्नि
रुद्धयस्वइहसन्निरुद्धयस्वसम्मुखीकरणमुद्रयामूलान्तेअमुकदेविइहसम्मुखीकृताभ
वइहसंमुखीकृताभव इतिपञ्चमुद्राभिरावाहनादिकृत्वायन्त्रादौप्राणप्रतिष्ठाङ्कुर्य्या



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्सायथा लेलिहानमुद्रयादेव्यात्हृदयेकरन्दत्वा ओँ ह्रींक्रौंहंसः श्रीअमुकदेवतायाः प्राणाइहप्राणाः ओँ ह्रीँक्रौंहंसः श्रीअमुकदेवतायाः जीवइहस्थितः ओँ ह्रीँक्रौंहंसः श्रीअमुकदेवतायाःसर्वेन्द्रियाणिइहस्थितानि ओँ ह्रीँक्रौंहंसः श्रीअमुकदेवताया वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणाइहागत्यसुखञ्चिरन्तिष्ठंन्तुस्वाहा इतिप्राणान्प्रतिष्ठापयेत् अत्रेदम्बोध्यम् प्रतिष्ठितप्रतिमाशालिग्रामादिपीठेषुआवाहनविसर्ज्जनेविनैवपूजाविधेया शालग्रामेस्थिरायाञ्चाँनावाहनविसर्ज्जनेइत्याभिधानात् एवञ्चकुण्डलिन्यामपिनावाहनविसर्ज्जनेशालग्रामशिलात्वाविशेषादित्येकेस्वकीयत्हृद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





याकाशवर्त्तिचैतन्यस्यवामनासारन्ध्रद्वाराञ्जलिवर्त्तिपुष्पेआनीयशालग्रामादिपी
ठवर्त्तिचैतन्येकल्पितमूर्तौपुष्पप्रक्षेपद्वाराऐक्यंविधायपूजयित्वा पूर्वकल्पितेष्टदेव
तायाः पुष्पद्वाराहृदयाकाशवर्त्तिचैतन्येयोजयेदित्येवंरूपावाहनविसर्ज्जने शालग्रा
मादावपिविधेये नतुप्राणप्रतिष्ठाकार्य्यैत्यपरे तन्त्रकौमुद्याम्महामहोपाध्यायदेव
नाथठक्कुरस्तु शालग्रामशिलादौहिनित्यंसन्निहितोहरिः इतिकेचिद्वदन्त्यत्रबोधा
यननिदर्शनात् सर्व्वत्रपरिपूर्णस्यतनुरूपस्यतेजसः सादरंसम्मुखीभावमावाह ११५
नमितीरितम् इतिसिद्धान्तसारीयवचनस्यानुरोधतः शिलादावपिकुर्व्वन्तिकेचि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्वावाहनम्बुधाइत्युक्तवानिति कुण्डलिनीतुंद्दिविधा वामावर्त्तादक्षिणावर्त्ताच म
हाविपुलतन्त्रे वामावर्त्ताभवेद्रेखावर्त्तुलात्रितयायदि कुण्डलीसाचविज्ञेयाशक्तिपू
जनउत्तमा दक्षिणेवर्त्तुलय्यँत्रतत्सुदर्शनमीतीरितमिति दाक्षिणात्यनिबन्धे सप्ताङ्क
सदृशाकारादक्षिणावर्तसञ्ज्ञिका नवाङ्कनसमाकृत्याकुण्डल्येवसुदर्शनम् वामावर्त्ता
पिसैवोक्तावामाचाररताशुभेत्युक्तत्वात् ततोवगुण्ठनमुद्रयामूलान्तेश्रीअमुकदेविअ
वगुण्ठिताभवेत्यवगुण्ठ्यसकलीकुर्य्यात् तच्चपुष्पेणसम्पूज्यदेवतायास्तत्तदङ्गेषुतद्दे
वतामूलमन्त्रस्यषडङ्गन्यासएवततोधेनुमुद्रयावामित्यमृतीकृत्यपरमीकरणमुद्रयाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





रमीकरणङ्कुर्य्यात् तच्चापराधक्षमापनम् क्षमापनापराधानांविज्ञेयापरमाकृतिरि
तिवचनात् ततःप्राणप्रतिष्ठाङ्कृत्वाषोडशोपचारैःपञ्चोपचाराद्यन्यतमोपचारैर्व्वापू
जयेत् तत्रषोडशोपचारेयथा मूलमुच्चार्य्यइदमासनंअमुकदेवतायैनमः इत्यासन
न्दद्यात् दानेतु आदौमूलन्ततोद्रव्योल्लेखः ततःसम्प्रदानम् ततस्त्यागार्थकम्प
दमितिसर्व्वत्र तथाचकुलार्णवे आदौमन्त्रंसमुच्चार्य्यपश्चाद्देयंसमुच्चरेत् सम्प्रदान
न्तदन्तेतुत्यागार्थकपदन्ततः एवंक्रमेणदेवेशिउपचारान्प्रकल्पयेदिति ततोमूलम्पठ
न्तद्गतमानसःमहामुद्रयास्वागतन्तेइतिपठेत् ततः श्यामाकविष्णुक्रान्ताब्जदूर्व्वा



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युतपाद्यङ्गृहीत्वामूलमुच्चार्य्यइदम्पाद्यंअमुकदेवतायैनमइति देवतापादयोर्द्दद्यात्
ततोगन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपदूर्व्वायुतमर्घङ्गृहीत्वामूलमुच्चार्य्यएषोर्घः
अमुकदेवतायैस्वाहा इतिदेवताशिरसिदद्यात् वैष्णवेतु अर्घोत्तरम्पाद्यदानमिति
विशेषःततोजातीलवङ्गकङ्कोलचूर्णयुतजलेनमूलमुच्चार्य्यइदमाचमनीयंअमुकदेवता
यैस्वधा इतिदेवतामुखेआचमनीयन्त्रिर्द्दद्यात्स्वधेत्याचमनीयञ्चत्रिवारम्मुखपङ्कजे
इतिपूजाप्रदीपधृततूर्णायागवचनात् ततःकांस्यपात्रेदध्याज्यमधुरूपम्मधुपर्कंङ्गृ
हीत्वामूलमुच्चार्य्यएषमधुपर्कःअमुकदेवतायैस्वधा इतिमुखेदद्यात् ततःपुनराचमनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



यम्मूलेन अमुकदेवतायैस्वधाइतिदद्यात् एवंस्नानवस्त्रोपवीतनैवेद्यान्तेपिदद्यात् त
तोमूलमुच्चार्य्यस्नानीयमिदञ्जलम् अमुकदेवतायैनिवेदयामिइतिदद्यात् ततोमूले
नविष्णौपीतं शम्भौसितम् विघ्नार्कशक्तिषुरक्तेपरिधानीयोत्तरीयवस्त्रेनमइत्युच्चार्य्य
दद्यात् पुन्देवतापक्षेउपवीतामितिविशेषःततोमूलेनाभरणन्नमइत्याभरणन्दद्यात् श
क्तिपक्षेत्रैवकेशसम्मार्ज्जनङ्कज्जलदानञ्चज्ञेयम् ततोमूलेनगन्धमुद्रया एषगन्धःअ
मुकदेवतायैनमः इतिचन्दनकर्प्पूरकालागुरुनिर्म्मितङ्गन्धन्दद्यात् एवय्यँथायो
ग्यंरक्तचन्दनसिन्दूराक्षतान्दद्यात् ततआदर्शञ्चदर्शयेत् ततोमूलेनपुष्पमुद्रयाएता



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निपुष्पाणिअमुकदेवतायैवौषट् इतिपुष्पाणिदद्यात् अत्रतन्त्रकौमुद्याम् पररोपि
तवृक्षेभ्यःपुष्पाण्यानीयचार्च्चयेत् अविज्ञाप्यैवतय्यँस्तुनिष्फलन्तस्यपूजनम् इति
विशेषः ततःषडङ्गेनपूजयेत् ततोमूर्द्धगुह्यपादद्वयसर्व्वाङ्गेषुमूलेनपञ्चपुष्पाञ्जली
न्दत्वा तत्तत्कल्पोक्तावरणपूजाङ्कुर्य्यात् तथाचपञ्चपुष्पाञ्जलीन्दत्वा परिवारा
र्च्चनञ्चरेदितिभट्टः सर्व्वत्रोपचारदानेतत्तदुपचारमुद्रादर्शनीया प्रतिमायाम्पूजाक
रणेत्वावरणपूजाघटेकार्य्या प्रतिमायाश्चपुरतोघटम्संस्थाप्ययत्नतः परिवारान्य
जेत्तत्रघटेतुपरमेश्वरि यन्त्राधिष्ठातृदेवांश्चघटवक्त्रेप्रपूजयेत् समस्तदेवतारूपंघट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



ञ्चपरिचिन्तयेत् इत्यभिधानात् ततोधूपपात्रस्थिताङ्गारेगुग्गुल्वगुरुघृतकर्प्पूरशर्क्क
राःप्रक्षिप्यफडितिमन्त्रेणजलेनसम्प्रोक्ष्य नमइतितत्रपुष्पम्प्रक्षिप्यधूपपात्रंवाँम
तर्ज्जन्यासंस्पृशन् मूलेनएषधूपःअमुकदेवतायैसमर्प्पयामिनमइतिधूपमुत्सृजेत् त
तस्तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेनधूपमुद्राम्प्रदर्शयेत् ततोजयध्वनिमन्त्रेणमातःस्वाहेतिघण्टा
मभ्यर्च्यवामहस्तेनवादयन् दक्षिणहस्तेनधूपपात्रमुत्थाप्यनाभितोनासापर्य्यन्त
न्त्रिरुत्तोल्यधूपयेत् ततःफडितिदीपम्सम्प्रोक्ष्यनमइतितत्रपुष्पम्प्रक्षिप्यदीपपात्र
ंवाँममध्यमयास्पृशन् मूलमिमन्दीपममुकदेवतायैसमर्प्पयामि नमइत्युत्सृज्यद



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षिणहस्तमध्यमाङ्गुष्ठयोगेनदीपमुद्राम्प्रदर्श्य जयध्वनीत्यादिमन्त्रेणपुनर्घण्टा
मभ्यर्च्यवामहस्तेनवादयन् दक्षिणहस्तेनदीपपात्रमुत्थाप्यनेत्रपर्य्यन्तन्नयेत् दीप
नैवेद्यदानेतुविशेषोयामले दीपङ्घृतयुतन्दक्षेतैलयुक्तञ्चवामतः दक्षिणेचसितावर्त्ति
र्व्वामतोरक्तवर्त्तिकम् पक्वापक्वविभेदेननैवेद्येष्वपितत्स्थितम् पुरतोनियमोनास्ति
दीपनैवेद्ययोःक्वचित् इति ततः चतुरस्रमण्डलस्थापितसाधारस्वर्णादिभाजनेसा
ज्यपायसादिनैवेद्यम्परिविष्य फडितिप्रोक्ष्य चक्रमुद्रयासंरक्ष्य द्वादशवारंज
प्तेनवायुबीजेनाभिमन्त्रितैर्ज्जलैर्न्नैवेद्यदोषंसंशोष्य दक्षिणकरेरमित्यग्निबीजंविचि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



न्त्य तत्पृष्ठेवामकरव्विँन्यस्यदर्शयित्वानैवेद्यदोषंसन्दह्यवामकरेवमित्यमृतबीजंस
ञ्चिन्त्यतत्पृष्ठेदक्षिणहस्तङ्कृत्वा अमृतेनाप्लाव्यमूलेनप्रोक्ष्यअष्टधामूलञ्जप्त्वा
धेनुमुद्राम्प्रदर्श्यनैवेद्यायनमः इतिगन्धपुष्पाक्षतैरभ्यर्च्यदेवमुखोद्गतन्तेजोविचिंत्य
वामाङ्गुष्ठेननैवेद्यभाजनंस्पृशन् दक्षहस्तस्थजलेनमूलमुच्चार्य्यइदंनैवेद्यममुकदे
वतायैसमर्प्पयामिनमइतिजलमुत्सृज्य अनामामूलयोरङ्गुष्ठयोगेननैवेद्यमुद्राम्प्र
दर्शयेत् ओंअमृतोपस्तरणमसिस्वाहेतिदेव्याहस्तेजलन्दद्यात् ततोवामकरेणवि
कचोत्पलसदृशींग्रासमुद्राम्प्रदर्श्य दक्षिणकरेणसमंत्रकम्प्राणादिमुद्राम्प्रदर्शयेत्



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यथा ओंप्रणायस्वाहा अङ्गुष्ठकनिष्ठानामिकाभिः ओंअपानायस्वाहा अङ्गुष्ठ तर्ज्जनीमध्यमाभिः ओंव्यानायस्वाहा अनामामध्यमांगुष्ठैः ओंउदानायस्वाहा अंगुष्ठतर्जनीध्यममानामाभिः ओंसमानायस्वाहा सर्व्वाभिरिति अथब्रह्मेशाद्यैः स्तुतां देवकन्याभिःसुधांशुचामरैःपरिवीज्यमानाम् भोक्तृगणान्हासयन्तीन्देवीन्ध्याये दिति अत्रपुन्देवतापक्षेऊहःकार्य्यः अत्रैवपानार्थम्पानीयन्ताम्बूलादिकञ्चदेयम् अत्रावसरेपूजाङ्गहोमङ्कुर्य्यात् तद्यथा तत्रात्मदक्षिणहस्तप्रमाणञ्चतुरङ्गुलमुन्नतंस्थण्डिलङ्कृत्वा मूलेनवीक्ष्यफडितिप्रोक्ष्यतैरेवकुशैःसन्ताड्य हूमितिमन्त्रेणाभ्यु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





क्ष्यमूलेनाग्निमादायतदंशङ्गृहीत्वा नैर्ऋतकोणे ओंक्रव्यादेभ्योनमइतिक्षिपेत् ततो
मूलेनाग्निंस्थापयित्वावमित्यमृतीकृत्यहूमित्यवगुण्ठ्यफडितिसंरक्ष्य ओंवैश्वानरजा
तवेदइहावहलोहिताक्षसर्व्वकर्म्माणिसाधयस्वाहेतिवह्निंसम्पूज्य तत्रेष्टदेवतामावा
ह्यसम्पूज्य आज्येन ओंभूःस्वाहा ओंभुवःस्वाहा ओंस्वःस्वाहा ओंभूर्भुवःस्वः
स्वाहा इतिहुत्वामूलमन्त्रेणपञ्चविंशतिसंख्याकंहुत्वापुनर्व्व्याहृतिभिर्हुत्वा मुर्त्तौदे
वतांसंयोज्याग्निर्व्विसर्ज्जयेदिति भोभोवह्नेमहाशक्तेसर्व्वकर्म्मप्रसाधक कर्म्मान्तरे
पिसम्प्राप्तेसान्निध्यङ्कुरुसादरमितिविसर्ज्जनङ्कृत्वादेवतायैआचमनन्दत्वा तन्मु



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वागतन्तेजःपुनस्तन्मुखेनिर्ग्गतमितिविचिन्त्य पुष्पाञ्जलिन्दत्वा ताम्बूलंनिवेद्यछ
त्रचामरेदर्शयेत् अथजपात्पूर्व्वमितिकर्तव्यता गुर्व्वादिनमस्कारं १ मन्त्रशिखाम् २
मन्त्रचैतन्यम् ३ मन्त्रार्थभावनाम् ४ शिरःपद्मेगुरुध्यानम् ५ इष्टदेवताध्यानम् ६
मूर्ध्निकुल्लुकाम् ७ हृदिसेतुम् ८ कण्ठेमहासेतुम् ९ मणिपूरेनिर्व्वाणजपः १० यो
निमुद्राविभावना ११ ऋष्यादिन्यासम् १२ कराङ्गन्यासौ १३ १४ प्राणायामम्
१५ मुखशोधनम् १६ जिव्हाशोधनन् १७ प्राणयोगम् १८ दीपनीम् १९ जनना
शौचभङ्गं २० भ्रूमध्यंवानसोरग्रंवादृष्ट्वासेतुं २१ पुनर्ज्जपेदिति सरस्वतीतन्त्रेप्रथमपट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





ले अथोच्यतेजपस्यात्रक्रमश्चपरमाद्भुतः यत्कृत्वासिद्धिसङ्घानामधिपोजायतेनरः
गुर्व्वादिनातिरादौस्यात्ततोमन्त्रशिखाम्भजेत् ततोपिमन्त्रचैतन्यम्मन्त्रार्थभावनात
तः गुरुध्यानांशिरःपद्मेइष्टध्यानमतःपरम् कुल्लुकाञ्चततःसेतुम्महासेतुमनन्तरं नि
र्व्वाणञ्चततोदेवियोनिमुद्राविभावना अङ्गन्यासंप्राणायामञ्जिह्वाशोधनमेवच प्रा
णयोगंदीपनीञ्च अशौचभङ्गमेवच भ्रूमध्यंवानसोरग्रंदृष्ट्वासेतुञ्जपेत्पुनः सेतुमशौच
भङ्गञ्च प्राणायाममितिक्रमः चतुर्थपटले कुल्लुकांमुर्द्ध्निसञ्जप्यहृदिसेतुंविचिन्तयेत्
महासेतुंविशुद्धौचकण्ठदेशेसमुद्धरेत् मणिपूरेतुनिर्व्वाणम्महाकुण्डलिनीमधः स्वा



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धिष्ठानेकामबीजंराकिनीमूर्द्धसंस्थितम् विचिन्त्यविधिवद्देविमूलाधारान्तिकांशिवे
विशुद्धान्तंस्मरेद्देविबिसतन्तुतनीयसीम् वेदिस्थानंहिजिव्हान्तम्मूलमन्त्रावृतम्मु
हुरिति तत्रमन्त्रशिखा मूलाधारादिचक्रेषुसप्तधासप्तसुक्रमात् नियोजनङ्कुण्डलि
न्याज्ञेयामन्त्रशिखाशिवे इतियामलोक्ता कुल्लुकातुरुद्रयामले तारायाःकुल्लुकादे
विमहानीलसरस्वती सायथा ह्रींस्त्रींहूँ पञ्चाक्षरीकालिकायाः कुल्लुकापरिकथ्यते
कालीकूर्च्चंवधूर्मायाफडन्तापरमेश्वरि यथाक्रींस्त्रींह्रींहूँफट् श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्य्याःकु
ल्लुकाद्वादशाक्षरी वाग्भवम्प्रथमम्बीजङ्कामबीजमनन्तरं लज्जाबीजन्ततःपश्चात्त्रिपु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



रेचपदंततः ततोभगवतिपदमन्तेठद्वयमुद्धरेत् यथा ऐंक्लींह्रींत्रिपुरेभगवतिस्वाहा इ
तितेकथितादेविसंक्षेपात्कुल्लुकामयेत्यादिनोक्ता सेतुरपितत्रैव विप्राणाम्प्रणवःसे
तुःक्षत्रियाणान्तथैवच वैश्यानान्तुफडर्णःस्यान्मायाशूद्रस्यकथ्यते इति महासे
तुरपितत्रैव महासेतुश्चदेवेशिसुन्दर्य्याभुवनेश्वरी कालिकायाःस्वबीजन्तुताराया:
कूर्च्चबीजकम् आन्यासांतुवधूबीजम्महासेतुर्व्वरानने इति निर्व्वाणमपितत्रैव अथ
वक्ष्यामिनिर्व्वाणंशृणुष्वावहितानघे प्रणवम्पूर्व्वमुच्चार्य्यमातृकाञ्चसमुच्चरेत् अथ
मूलम्महेशानिततोवाग्भवमुच्चरेत् मातृकाञ्चसमस्ताञ्चपुनःप्रणवमुच्चरेत् एव



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्पुटितमूलन्तुप्रजपेन्मणिपूरके इति अत्राङ्गन्यासपदमृष्यादिन्यासकरन्यास
योरपिबोधकम् एवञ्जिह्वाशोधनंमुखशोधनस्याप्युपलक्षणम् तदुभयञ्चप्रणव
स्यदशधाजपेनभवतीतिज्ञेयम् तत्रैवप्राणयोगः माययापुटितोमन्त्रः सप्तधाजपि
तःपुनः सप्राणोजायतेदेविप्राणयोगइतिस्मृतइति दीपन्यपितत्रैव वेदादिपुटितं
मन्त्रंसप्तवारञ्जपेत्पुनः दीपनीयंसमाख्यातासर्व्वत्रपरमेश्वरीति अशौचभङ्गश्च
जननमरणाशौचयोर्भङ्गः सचक्रमेणजपस्याद्यन्तयोःकार्य्यः सचप्रणवपुटितस्य
मूलमन्त्रस्यसप्तधाजपेनभवति कुलार्णवे ब्रह्मबीजम्मनोर्द्दत्वाचाद्यन्तेचमहेश्वरि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





सप्तवारञ्जपेन्मन्त्रंसूतकद्वयमुक्तयेइत्युक्तेः ततोजपमालामानीय पुरतःक्वचित्पा
त्रेसंस्थाप्य ऱ्हीं मालेमाले महामालेसर्वशक्तिस्वरूपिणि चतुर्व्वर्ग्गस्त्वयिन्यस्त
स्तस्मान्मेसिद्धिदाभवेतिमन्त्रेण ओंअमुकदेवतामालायैनमइत्यर्घोदकगन्धाक्षतपु
ष्पादिभिः मालाम्सम्पूज्य ऱ्हीं अविघ्नङ्कुरुमालेत्वञ्जपकालेसदाममं निर्व्विघ्न
ङ्कुरुदेवेशिअक्षमालेनमोस्तुते इतिमन्त्रेणदक्षिणहस्तेनगृहीत्वा शिरसिगुरुंहृद
येस्वेष्टदेवतांध्यायन्हृदयसमीपम्मालामानीयदक्षहस्तमध्यपर्व्वणिसंस्थाप्य प्रण
वमुच्चार्य्यसहस्त्रधाशतधादशधावामूलमन्त्रञ्जपेत् पुनःप्रणवमुच्चार्य्यजपंसमाप्य



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऱ्हींलम्माले सर्व्वदेवानाम्प्रीतिदा शुभदामता शुभङ्कुरुष्वमेभद्रे यशोवीर्य्यञ्चदे
हिमे ऱ्हींसिध्यैनमइतिस्वशिरसिमालांसंस्थाप्यपुनःसेतुमशौचभङ्गञ्चविधायप्राणा
यामत्रयङ्कृत्वाऋष्यादिन्यासङ्करन्यासंषडङ्गन्यासञ्चविधायदेव्यावामहस्तेअर्घो
दकेनॐगुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् सिद्धिर्भवतुमेदेवित्वत्प्रसा
दान्महेश्वरीतिजपंसमर्प्पयेत् पुन्देवतापक्षेतु देवस्यदक्षिणहस्तेइतिविशेषः एवम्म
न्त्रेसर्व्वत्रपुल्लिङ्गपदमूहनीयम् क्वचित्तुजपसमर्प्पणानन्तरम्प्राणायामउक्तः ततो
देवताग्रेमूलेनपञ्चपुष्पाञ्जलिम्प्रक्षिपेत् ततोमालांस्थापयेत् सूर्य्यादिसन्निधौतद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



भिमुखएदसर्व्वासित्ध्यैजपङ्कुर्य्यात् मन्त्रदेवप्रकाशिकायां सूर्य्यस्याग्रेगुरोरिन्दो
र्द्दीपस्यचजलस्यच विप्राणाञ्चगवाञ्चैवसन्निधौसम्मुखोजपेत् इत्यभिधानात् ततोघ
ण्टावादनपूर्व्वकंस्तोत्रकवचादिकम्पठित्वा मूर्द्धपर्य्यन्तंआरात्रिकङ्कुर्य्यात् तल्ल
क्षणन्तन्त्रकौमुद्याम् ततःपिष्टकसंजातान्समवर्त्तिसमन्वितान् घृतादिज्वलितान्म
न्त्रीउच्चैर्द्दीपान्प्रदर्शयेत् पारावतभ्रमाकारान्नातिदीप्तशिखान्वितान् आदायपा
णिनाध्यायन्मूर्द्ध्नि नीराजयेत्प्रभुम् आरात्रिकमितिप्रोक्तङ्घण्टावादनपूर्व्वकमिति
पूजाप्रदीपेतु अमृतापिधानदानात्पूर्व्वमेवारात्रिकमुक्तम् क्वचित्तु जपात्पूर्व्वमेवकव



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चादिपाठः जपसमर्प्पणानन्तरंनित्यहोमश्चद्दश्यतइति ततःप्रदक्षिणामष्टाङ्गप्रणामञ्चकुर्य्यात् ततउपविश्यपुष्पाञ्जलीन्दत्वादाक्षिणहस्तचुलुकेनजलपुष्पाक्षतादीन्यादाय ओंइतःपूर्व्वम्प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतोजाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसावाचाकर्म्मणाहस्ताभ्याम्पद्भ्यामुदरेणशिश्नायत्स्मृतय्यँदुक्तं यत्कृतन्तत्सर्व्वम्ब्रह्मार्प्पणम्भवतुस्वाहा इतिसमर्प्य पुनर्ज्जलाक्षतादीन्यादायमाम्मदीयंसकलंसम्यक्श्रीअमुकदेवतायैसमर्प्पयामिओंतत्सत्पुनर्ज्जलादीन्यादाय ओंसाङ्गसायुधसवाहनसपरिवारेअमुकदेविपूजितासिक्षमस्वेतिविसर्ज्जयेत् ततःसंहारमुद्रयातत्तेजःपु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



षपेणसार्द्धमाघ्रायहृदयेसमानीयऐशान्याम्मण्डलङ्कृत्वा निर्म्माल्यङ्गृहीत्वाओंउ
च्छिष्टचाण्डालिन्यैनमइतिपठित्वातत्रप्रक्षिपेत् पुन्देवतापक्षेविष्वक्सेनादिभ्योनम
इतिविशेषः ततःशङ्खस्यावशिष्टजलंशरीरेलेपयेत् ततश्चरणोदकङ्गृहीत्वानैवेद्य
न्तद्भक्तेभ्योदत्वा शेषंस्वयम्भुञ्जीत ततोदेवतान्ध्यायन्सुखव्विँहरेदितिपुजासामा
न्यविधिः अथसंक्षेपतःसर्व्वासान्देवतानान्नित्यपूजाविधिर्ल्लिख्यते तदुक्तय्यामले
आदावृष्यादिविन्यासःकरशुद्धिस्ततःपरं अङ्गुलीव्यापकौकृत्वाहृदादिन्यासएव
च तालत्रयञ्चदिग्बन्धःप्राणायामस्ततःपरम् ध्यानंपूजाजपश्चैवसर्व्वतन्त्रेष्वयव्विँ



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धिः पूजाचमूलदेवतायाएवमन्यच्च जपार्थंसर्व्वमन्त्राणांविँन्यासञ्चलिपिंविना कृतेतद्विफलंविँद्यात्तस्मादादौलिपिंन्यसेदिति पूजाप्रदीपे एतान्यन्यानिपूजायांसा धनानिबहून्यपि उत्तमानिचमध्यानिन्यूनानिविविधानिवै स्वस्थःसमर्थःकुर्व्वीतउत्त मैरेवसाधनैः मध्यमोमध्यमैरेवन्यूनोन्यूनैस्तुसाधनैः आपन्नश्चेत्समर्थोपिन्यूनैरेवस माचरेत् पूजाकर्म्मविशेषेणदेशकालानुसारतः यथाशक्तियथान्याययथँथालोकाविग र्हितम् पूजांविस्तरतःकर्त्तुय्यँोनशक्नोतिमानवः सइहाङ्गेन्द्रवज्राद्यैःपूजयेदिष्टदे वताम् अथवादेवतामात्रन्ध्यात्वासम्यक्प्रपूजयेत् अथवामानसीङ्कुर्य्यादात्मपूजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 मथापिवा अथवाकेवलाम्पूजाम्बाह्याङ्कुर्य्याद्विचक्षणः अर्च्चामात्रेऽसमर्थश्चेद्दद्याद 
र्च्चनसाधनम् सम्पूज्यैवजपङ्कुर्य्यान्नमन्त्रङ्केवलञ्जपेदिति सकलावरणपूजाश 
क्तौ अङ्गेन्द्रवज्राद्यावरणत्रयमेवपूजयेत् तत्राप्यशक्तौदेवतामात्रपूजांसम्यक्तया
तत्राप्यशक्तौपूजामात्रङ्कुर्य्यात् तत्राप्यशक्तावन्यस्मैपूजासाधनंदत्वा तद्द्वारापूजा
ङ्कारयेत् तत्राप्यशक्तावन्यविधीयमानपूजाम्पश्येदिति अथमालानिर्णयः साचत्रि
विधा करमालावर्णमालापद्माक्षादिमालाच तत्राद्यापुन्देवताविषये क्रमेण अना 
मिकामध्यममूलपर्व्वकनिष्ठापर्व्वत्रयानामामध्यमाग्रपर्व्वतर्ज्जनीपर्व्वत्रयघटिता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यमामूलमध्यमपर्व्वरूपमेरुसहिता तत्रप्रादक्षिण्यक्रमेणजप्त्वाउक्तपर्व्वसुप्रथ
मान्तिमेपर्व्वणीविहायाष्टसुपर्व्वसुजपेनाष्टोत्तरत्वंसम्पादनीयं शक्तिमन्त्रजपेतुक्र
मेणानामिकामध्यममूलपर्व्वकनिष्ठापर्व्वत्रयानामिकाग्रपर्व्वमध्यमापर्व्वत्रयतर्ज्ज
नीमूलपर्व्वघटिता तर्ज्जनीमध्यमाग्रपर्व्वरूपमेरुसहिता तत्रप्रदक्षिणक्रमेणैवजपेत्
अनुलोमविलोमाभ्याम्प्रजपेत्सर्व्वमालया केवलञ्चानुलोमेनप्रजपेत्करमालयेति
शिवोक्तेः ततउक्तपर्व्वसुप्रथमांतिमेपर्व्वणीमुक्त्वाष्टसुपर्व्वसुसकृज्जपेनाष्टोत्तरत्वञ्ज
पस्यसम्पादनीयं तत्रायंविधिः छिद्ररहितसंहताङ्गुलीकदक्षिणकरन्तिर्य्यक्कृत्वा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू. पं. हृदयदेशेसमारोप्यवाससाहस्तमाच्छाद्यअङ्गुल्यग्राणांपर्व्वसंधीनाञ्चस्पर्शम्मेरु भा.
१२७ लङ्घनञ्चविहायससङ्ख्याकञ्जपङ्कुर्य्यादिति द्वितीयावर्णमाला सातुअकचट प्र.१७
तपयशेत्यष्टवर्ग्गावयवकसानुस्वाराकारादिक्षकारान्तैकपञ्चाशद्वर्णघटिता क्षकार
स्तत्रमेरुत्वेनोपकल्पितः तत्र शवर्ग्गस्तुशषसहळक्षरूपोज्ञेयः तस्याञ्चएकवर्णोव्विँ
भाव्यमन्त्रमेकवारमुच्चार्य्यद्वितीयव्वँर्णोऽव्विँभाव्यमन्त्रमुच्चारणीयमिति एवंळकारप
र्य्यन्तेवर्णेजप्त्वापुनर्ळकाराद्यकारपर्य्यन्तेजप्त्वा यदृच्छयाशतादिसङ्ख्याकलञ्ज १२७
परस्योपपाद्याष्टानामपिवर्ग्गाणामन्तिमेषुवर्णेषुजपिलाऽष्टोत्तरत्वंसम्पादनीयम् तृ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीयातुरुद्राक्षशङ्खपद्माक्षपुत्रजीवमौक्तिकस्फाटिकमणिरत्नसौवर्णविद्रुमराजतकुशमूलैःकृतान्यस्ताकारादिक्षकारान्तवर्णा तन्त्रोक्तविधिनाकृतसंस्कारा सर्प्पाकृतिर्गोपुच्छाकृतिर्व्वाग्रहस्थस्याक्षमालारूपा तत्रचाकारघटितमणिमारभ्य ळकारघटितमणिपर्य्यन्तंजप्त्वा ळकारघटितमणिमारभ्याकारघटितमणिपर्य्यन्तंजपेदित्यनुलोमविलोमक्रमेणजप्त्वा जपस्यशतादिसङ्ख्याकत्वमुपपाद्यप्रथममणौजप्त्वा षष्मणोनन्तरानूकृत्वा अष्टमेमणौमूलञ्जपेत् एवमन्तिमगुटिकापर्य्यन्तजपेनाष्टोत्तरलञ्जपस्यसम्पादयेत् आदावेकन्ततःसप्तसप्तसप्तक्रमेणतु एवङ्क्रमेणदेवेशिज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पू.पं. पेदष्टोत्तरंशतमितितन्त्रान्तरेऽभिधानात् इमान्तुमालाम्पट्टवस्त्रादिनिर्म्मितगोमुखा भा.
१२८ कृतियन्त्रेसंस्थाप्यकृतोजपोऽतिप्रशस्तः मुण्डमालातन्त्रे चतुर्व्विंशाङ्गुलिमितम्प प्र.१७
ट्टवस्त्रादिसम्भवम् निर्म्मायाष्टाङ्गुलिमुखङ्ग्रीवान्ततुषोडशाङ्गुलाम् ज्ञेयङ्गोमु
खयन्त्रञ्चसर्व्वतन्त्रेषुगोपितम् तन्मुखेस्थापयेन्मालाङ्ग्रीवामध्यगतःकरः प्रजपेद्वि
धिनागुह्यव्वँर्णमालाधिकम्प्रिये इत्यभिधानात् गोमुखादौततोमालाङ्गोपयेन्मातृ
जारवदिति मायातन्त्रेऽभिधानाच्च विशेषान्तरन्तुवैशंपायनसंहितायां अङ्गुष्ठमध्य १२८
माभ्याञ्चचालयेन्मध्यमध्यतः तर्ज्जन्यानस्पृशेदेनाम्मुक्तिदोगणनक्रमः जीर्णसूत्रे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुनःसूत्रङ्ग्रन्थयित्वाशतञ्जपेत् प्रमादात्पतितेहस्ताच्छतमष्टोत्तरञ्जपेत् जपे न्निषिद्धसंस्पर्शेक्षालयित्वायथोचितं छिन्नेप्यष्टोत्तरशतजपः छिन्नकरभ्रष्टयोस्तुल्य त्वादिति अथाक्षमालादिषुकृतस्यमन्त्रजपस्यसङ्ख्याकरणद्रव्यनिषेधविधीआह यामले नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्व्वानधान्यैर्न्नचपुष्पकैः नचन्दनैर्म्मृत्तिकयाजपसङ्ख्यातु कारयेत् लाक्षाकुसीदंसिन्दूरंगोमयञ्चकरीषकम् एभिर्न्निर्म्मायगुटिकाजपसङ् ख्यान्तुकारयेदिति कुसीदंरक्तचन्दनम् करीषंशुष्कगोमयमिति अथागमोक्तपूजोप योगितत्तन्मुद्रालक्षणङ्क्रमेणलिख्यते ऋज्वीञ्चमध्यमाङ्कृत्वातर्ज्जनीमध्यपर्व्वणि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



संयोज्याकुञ्चयेत्किञ्चिन्मुद्रैषाङ्कुशसाज्ञिकेति ॥ १ ॥ अन्योन्याभिमुखाश्लिष्टाक
निष्ठानामिकापुनः ॥ तथैवतर्ज्जनीमध्याधेनुमुद्राप्रकीर्तिता ॥ २ ॥ अङ्गुष्ठाग्रेणतर्ज्ज
न्याः संयोज्याथोर्द्ध्वरेखया अन्याङ्गुलीस्तथानम्यनाराचःस्यात्प्रसार्य्यते ॥ ३ ॥ त
र्ज्जन्यङ्गुष्ठाङ्गुलिध्वनिश्छोटिका कनिष्ठाङ्गुष्ठकौशक्तौकरयोरितरेतरं तर्ज्जनीम
ध्यमानामासंहताभुग्नवर्ज्जिता मुद्रैषागालिनीप्रोक्ताशङ्खस्योपरिचालिता ॥ ४ ॥
दक्षपाणिपृष्ठदेशेवामपाणितलंन्यसेत् अङ्गुष्ठौचालयेत्सम्यङ्मुद्रेयम्मत्स्यरूपि
णी॥५॥ वामहस्तस्यतर्ज्जन्यान्दाक्षिणस्यकानिष्ठया ॥ तथादक्षिणतर्ज्जन्यावाँमाङ्गु



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ष्ठेनयोजयेत् ॥ उन्नतन्दक्षिणाङ्गुष्ठंवाँमस्यमध्यमादिकाः॥ अङ्गुलीर्योजयेत्पृष्ठे
दक्षिणस्यकरस्यच ॥ कूर्म्मपृष्ठसमङ्कुर्य्याद्दक्षपाणिञ्चसर्व्वतः॥ कूर्म्ममुद्रेयमाख्या
तादेवताध्यानकर्म्मणि ॥६॥ हस्ताभ्यामञ्जलिम्बद्ध्वानामिकामूलपर्व्वणोः॥ अङ्गु
ष्ठौनिःक्षिपेत्सेयम्मुद्रात्वावाहिनीस्मृता ॥ ७॥ अधोमुखीत्वियञ्चेत्स्यात्स्थापनी
मुद्रिकास्मृता ॥८॥ उच्छ्रिताङ्गुष्ठमुष्ट्योस्तुसंय्योगात्सान्निधापिनी ॥९॥ अंतःप्रवे
शिताङ्गुष्ठासैवसंरोधिनीमता॥१०॥उत्तानमुष्टियुगलासम्मुखीकरणीमता॥११॥
तर्जनीमध्यमानामाःसमङ्कुर्यादधोमुखं॥ अनामायाक्षिपेद्वृद्धामृज्वीङ्कृत्वाकनिष्ठि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

कां ॥ ललिहानाममुद्रेयञ्जीवन्यासेप्रकीर्तिता ॥१२॥ सव्यहस्तकृतामुष्टिर्दीर्घाधोमु
खतर्जनी ॥ अवगुण्ठनमुद्रेयमभितोभ्रामितामता ॥१३॥ दक्षिणानिबिडामुष्टिर्दीर्घा
धोमुखतर्जनी ॥ अवगुण्ठनमुद्रेयमभितोभ्रामितामता ॥१४॥ अन्योन्यग्रथिताङ्गु
ष्ठाप्रसारितपराङ्गुली ॥ महामुद्रेयमुदितापरमीकरणेबुधैः ॥ १५ ॥ कनिष्ठामूलसं
लग्नावङ्गुष्ठौगन्धमुद्रिका॥१६॥अङ्गुष्ठमूललग्नेचतर्ज्जन्यौपुष्पमुद्रिका ॥१७॥ अ
ङ्गुष्ठेतर्ज्जनीमूलयोगःस्याद्धूपमुद्रिका ॥ १८ ॥ अङ्ष्ठेमध्यमामूलयोगेस्याद्दीपमुद्रि
का॥हस्तौतुसंमुखौकृत्वासन्नतप्रोत्थिताङ्गुली ॥ तलान्तर्म्मिलिताङ्गुष्ठौसुभुग्नौसु



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसारितौ ॥ कनिष्ठाङ्गुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्रसञ्ज्ञिका ॥ १९ ॥ अङ्गुष्ठेनामिकामू
लयोगे नैवेद्यमुद्रिका ॥२०॥ पद्माभश्च वामहस्तो ग्रासमुद्रा प्रकीर्त्तिता ॥२१ ॥ कनि
ष्ठानामिकाङ्गुष्ठैर्द्दक्षहस्तस्य संयुतैः॥ कथिता मुनिभिः प्राणमुद्रा परमदुर्ल्लभा ॥२२
तर्ज्जनीमध्यमाङ्गुष्ठैरपानस्य तु सा स्मृता ॥ २३ ॥ सामुद्रा ॥ अनामामध्यमाङ्गुष्ठै
रुदानस्य च मुद्रिका ॥ २४ ॥ तर्ज्जन्यनामामध्याभिः साङ्गुष्ठाभिश्चतुर्थिका ॥ २५ ॥
॥ चतुर्थिका व्यानमुद्रा ॥ ॥ मुद्राङ्गुलीभिः सर्व्वाभिरुदानस्य प्रकीर्त्तिता ॥ २६ ॥
संयुतैरिति सर्व्वत्र तृतीयान्तेनान्वेति ॥ मध्याभिरित्यादौ लिङ्गविपरिणामेनेतिज्ञे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



यम् ॥ अधोमुखेवामस्तेऊर्द्ध्वास्यन्दक्षहस्तकम् ॥ क्षिप्त्वाङ्गुलीरङ्गुलीभिःसङ्ग्र
थ्यपरिवर्त्तयेत् ॥ एषासंहारमुद्रास्याद्विसर्ज्जनविधौस्मृता ॥ २७ ॥ तत्तन्मुद्राकरणा
सामर्थ्येतत्तन्मुद्राध्यानेन पुष्पप्रक्षेपेण तत्त्वमुद्रया वा न्यासोपचारादिकङ्कर्त्तव्यम् ॥
गौतमीतन्त्रे ॥ मनसाविन्यसेत्तास्ताःपुष्पेणैवाथवामुने ॥ अङ्गुष्ठानामिकाभ्याव्वा
चान्यथाविफलम्भवेदित्यभिधानात् ॥ ॥ इतिपूजापङ्कजभास्करे आगमोक्तेष्टदे
वतापूजाकथनन्नामसप्तदशःप्रकाशः ॥ १७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अथकाम्याःपार्थिवशिव
लिङ्गपूजा साचाचारान्नित्यायाअपिब्रह्मपूजातःप्रागेवविधेया तस्याइतिकर्त्तव्यता





Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मपुराणेउक्ता हरोमहेश्वरश्चैवशूलपाणिःपिनाकधृक् पशुपतिःशिवश्चैवमहादे वेतिसर्ज्जयेत् मृत्तिकाग्रहणेचैवघट्टनेचप्रतिष्ठने आवाहनेचस्नपनेपूजनेचविसर्ज्ज ने हरादीनिचनामानिमहादेवान्तानिकीर्त्तयेत् एवञ्च भस्मत्रिपुण्ड्रंविँधायरुद्रा क्षमालाम्परिधाय ओंहरायनम इतिशुभमृत्तिकामाहृत्य ओंमहेश्वरायनमइति स ङ्घट्य ओंशूलपाणयेनमः ओंशूलपाणेइहसुप्रतिष्ठितोभव इतिपूज्यत्वप्रयोजक संस्कारंविँधाय ध्यायेन्नित्यम्महेशंरजतगिरिनिभञ्चारुचन्द्रावतंसंरत्नाकल्पोज्ज्व लाङ्गम्परशुमृगवराभीतिहस्तंप्रसन्नम् पद्मासीनंसमन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घु.पं. त्तिंवँसानंविँश्वाद्यंविँश्वबीजंन्निखिलभयहरम्पञ्चवक्रन्त्रिनेत्रम् इतिध्यात्वा ओं भा.
१३२ पिनाकधृषेनमः ओंपिनाकधृक् इहागछेहतिष्ठेत्यावाह्यस्थापयित्वा ओंपशुपतये प्र.१८
नमः एतानिपाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि ओंपशुपतयेनमः इतिपा
द्यादीनिदत्वा ओंनमःशिवाय एषगन्धः ओंशिवायनमः इतिगन्धान्दद्यात् तत
एवमेवाक्षतपुष्पबिल्वपत्रधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवस्त्रालङ्कारनैवेद्यानिदद्यात् त
तोवामावर्त्तेनलिङ्गपूर्व्वाद्याग्नेय्यान्तमष्टसु दिक्षुवेद्यामष्टमूर्त्तीर्व्वक्ष्यमाणमन्त्रैर्ग्गन्धा १३२
क्षतपुष्पैःपूजयेत् मन्त्रायथा ओंशर्वायक्षितिमूर्त्तयेनमः १ ओंभवायजलमूर्त्तयेन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मः २ ओंरुद्रायाग्निमूर्त्तयेनमः ३ ओंउग्रायवायुमूर्त्तयेनमः ४ ओंभीमायाकाशमूर्त्त
येनमः ५ ओंपशुपतयेयजमानमूर्त्तयेनमः ६ ओंमहादेवायसोममूर्त्तयेनमः ७ ओं
ईशानायसूर्य्यमूर्त्तयेनमः ८ इति तथाच भविष्यपुराणे विष्णुवाक्यम् साधुसाधुद्वि
जश्रेष्ठसाधुपृष्टोस्मिसुव्रत शृणुष्वगदतःसर्वंशिवमन्त्रगणम्परम् इत्युक्त्वाऽष्टम
न्त्रानभिधाय मूर्तयोष्टौशिवस्यैताःपूर्व्वादिक्रमयोगतः आग्नेय्यान्ताःप्रपूज्याश्च
वेद्यांलिङ्गेशिम्वयजेत् शिवमिति ओंनमःशिवायेतिमंत्रेणलिङ्गे शिवम्पूजयेत् त
तोष्टमूर्तिरुक्तक्रमेणेतिवाक्यार्थः ततः ओंमहादेवायनमः ओंमहादेवपूजितोसिप्रसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

दक्षमस्व स्वस्थानङ्गच्छेतिविसर्ज्जयेत् ततः ओंचण्डेश्वरायनमइति निर्माल्यङ्क्षि
पेत् दाक्षिणात्यनिबन्धेप्रयोगपारिजातेक्रियासारेअशून्यमस्तकांलिङ्गंसदाकुर्वीत
साधकः लिङ्गम्पार्थिवशिवलिङ्गम् प्रकरणात् शूलपाणौलैङ्गे सूतकेमृतकेचैवन
त्याज्यंशिवपूजनम् विष्वक्सेनायदातव्यंनैवेद्यस्यशतांशकम् पादोदकप्रसादञ्च
लिङ्गेचण्डेश्वरायतुइत्युक्तम् ॥ इतिपूजापंकजभास्करेपार्थिवशिवलिङ्गपूजनन्नामा
ष्टादशःप्रकाशः ॥ १८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अथब्रह्मपूजा ॥ साच सर्व्वदेवतापूजोपकरण
द्रव्यैः प्रतिपत्तिरूपेण ओंब्रह्मणेनमइतिभूमौकार्य्या अस्यध्यानम् ब्रह्माचतुर्म्मुखः



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद्मगर्भवर्णश्चतुर्भुजः ऊर्ध्वाधःक्रमेणदक्षिणहस्ताभ्यांस्रुवंस्रुचञ्चदधानस्तथा वामकराभ्याङ्कमण्डलुन्दण्डञ्चदधानः शुक्लाम्बरपरीधानोमृगचर्मोत्तरीयोदिव्ययज्ञोपवीतीकदाचिद्धंसारूढःकदाचित्कमलासनःदक्षिणपार्श्वेसन्निधौआज्यस्थालीसरस्वतीचचत्वारोवेदाश्चवामपार्श्वेसावित्रीयस्यसइति ननुपद्मपुराणप्रथमखण्डे यदिमेस्तितपस्तप्तङ्गुरवस्तोषितायदि सर्व्वब्रह्मसमूहेषुस्थानेषुविविधेषुच नतुतेब्राह्मणाः पूजाङ्करिष्यन्तिकदाचनेतिसावित्रीकृतशापेनब्रह्मणोऽपूज्यत्वात्तत्पूजाप्रयोगकथनमयुक्तमितिचेन्न पूजायिष्यन्तिब्रह्माणन्नराभक्तिसमन्विताः तेषामसौधनन्धान्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





न्दातायुष्यंसुखानिचेतिगायत्रीकृतशापोद्धारस्यब्रह्मपूजाफलप्रदर्शकस्यतदग्रेदर्शनेन ब्रह्माणव्वाँप्रतिष्ठाप्यसर्व्वयत्नैर्व्विधानतः यत्पुण्यफलमाप्नोतितदेकाग्रमनाःशृणु इत्यादिनाब्रह्मप्रतिमास्थापनस्याप्यग्रेविधानेनच अद्यप्रभृतियःपूजाम्मन्त्रयुक्ताङ्करिष्यति तवमर्त्योधरापृष्ठेयथान्येषान्दिवौकसाम् भविष्यतिचतद्वंशोदारिद्रोदुःखसम्युतः इतिस्कन्दपुराणीयसावित्रीकृतशापवचनेमन्त्रपूर्व्वामित्यभिधानेनच ब्रह्मवैवर्त्तेकृष्णखण्डेचतुस्त्रिंशत्तमेध्यायेकृष्णकृताप्सरःशापोद्धारे तवमन्त्रन्नगृण्हन्तिकेपिवेश्याभिशापतः यदन्यदेवपूजायान्तवपूजाभविष्यतीतिवचने तन्मन्त्रग्रहण



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्यैवनिषेधेनचशापस्यसमन्त्रनित्यपूजामात्रनिवृत्तिपरत्वात् अमन्त्रकनित्यपूजा
यानिर्बाधत्वात् सर्व्वदेवपूजान्तेतत्करणेमानंतुकृष्णकृतशापोद्धारवचनोत्तरार्द्धमेव
तत्रान्यदेवपूजायामित्यस्यअन्यदेवपूजायाङ्कृतायांसत्यामित्यर्थात् साचावाहन
विसर्ज्जनवर्जितैवोचिता गंधपुष्पादिभिर्म्मलितैरेकदैवभूमौतत्पूजाकरणस्याचारसि
द्धत्वेनभूमौ चावाहनविसर्ज्जनयोरभावस्य प्रतिमास्थानेष्वप्स्वग्नावावाहनविसर्ज्ज
नवर्ज्जमितिबौधायनेनविधानात् अतएवशूलपाणौ ब्रह्मपूजानित्यासाचयद्यपिदेव
तान्तरपूजावत्कर्त्तुमुचितातथापि सर्व्वदेवपूजान्तेपूजोपकरणशेषद्रव्यैः ओंब्रह्मणेन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



मइतिमन्त्रेणाचरन्तिशिष्टाइत्यभिहितमितिबोध्यम् ॥ ॥ इतिपूजापङ्कजभास्करे
ब्रह्मपूजाकथनन्नामैकोनविंशःप्रकाशः ॥ १९ ॥ ॥ छ ॥ अथ विंशःप्रकाशः ॥ ततो
देवेशङ्क्षणन्ध्यात्वा ओं हँसःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजाऋतजाअद्रिजाऋतम्बृहत् ॥ इतिऋचम्पठेदि
तिगौडाः ॥ ननुत्रैविद्यामांसोमपाःपूतपापाइत्यादिगतागतङ्कामकामालभन्तेइत्य
न्तभगवद्गीतानवमाध्यायस्थभगवद्वाक्येन काम्यकर्म्मानुष्ठानस्यमोक्षप्रतिबन्धक
त्वावगमात्काम्यपूजादीनामत्रकथनमयुक्तमितिचेन्न काम्यस्यापीश्वराराधनकर्म्म



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णःकालेन वैराग्यपूर्व्वकनिष्कामपरमेश्वराराधनपरत्वजननद्वारा ब्रह्मजिज्ञासुत्वस
म्पादकत्वेनजिज्ञासायाश्चज्ञानजनकत्वेनपरम्परयामोक्षसाधकत्वादितिबोध्यम् अ
तएवभगवद्गीतासप्तमाध्यायस्थचतुर्व्विधाभजन्तेमाञ्जनाः सुकृतिनोऽर्ज्जुन आर्त्तो
जिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभ तेषाञ्ज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्व्विशिष्यते इतिश्लो
कटीकायाम्मधुसूदनस्वामिना येत्वासुरभावरहिताःपुण्यकर्म्माणोविवेकिनस्तेपुण्य
कर्म्मतारतम्येन चतुर्व्विधाःसन्तो माम्भजन्ते क्रमेण कामनाराहित्येन मत्प्रसादा
न्मायान्तरन्तीत्याह चतुर्व्विधाभजन्त्तेमामित्यादिइत्यवतार्य्य येसुकृतिनःपूर्व्वज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 

न्मकृतपुण्यसञ्चयाजनाः सफलजन्मानस्तेएवनान्येमाम्भजन्तेसेवन्तेहेअर्ज्जुनतत्र
त्रयःसकामाःएकोऽकामइत्येवञ्चतुर्व्विधाःतत्रआर्त्तः आर्त्याशत्रुव्याध्याद्यापदाग्रस्त
स्तन्निवृत्तिमिच्छन्यथामखभङ्गेनकुपितेइन्द्रेव्रजवासीजनः इत्याद्युक्ताजिज्ञासुर्मुमु
क्षुरात्मज्ञानार्थीयथामुचुकुन्दजनकश्रुतदेवोद्धवादयः अर्थार्थीइहवापरत्रवायद्भोगो
पकरणन्तल्लिप्सुः तत्रइहयथासुग्रीवोविभीषणश्चपरत्रयथाध्रुवः एतेत्रयोपिभगव
द्भजनेनमायान्तरन्तितत्रजिज्ञासुर्ज्ज्ञानोत्पत्त्यासाक्षादेवमायान्तरति आर्त्तोऽर्थार्थी
चजिज्ञासुत्वम्प्राप्येतिविशेषःइत्यभिहितं नचसूर्य्यादीनामीश्वरत्वाभावात्तदीयका



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्यपूजनादीनांबन्धकत्वंस्यादेवेतिवाच्यम् येप्यन्यदेवताभक्तायजन्तेश्रद्धयान्विताः
तेपिमामेवकौन्तेययजन्त्यविधिपूर्व्वकम् अहंहिसर्व्वयज्ञानाम्भोक्ताचप्रभुरेवच न
तुमामभिजानन्तितत्वेनातश्च्यवंतिते इतिभगवदुक्तेः परमेश्वराभेदबुद्ध्यातदीयकाम्य
पूजनस्यापिपरम्परयामोक्षसाधकत्वावगमात् अत्राविधिपूर्वकामित्यस्याविधिः परमे
श्वराभित्वत्वबुद्धिस्तद्रहितत्वपूर्व्वकमित्यर्थः तेनेश्वरबुध्यातेषाङ्काम्यपूजनस्यापिमो
क्षजनकत्वंबुद्धिसत्वशुद्धिद्वाराभवतीत्यायाति वस्तुतोनानोपनिषत्पुराणेतिहासेभ्यो
ब्रह्मविष्णुशिवदुर्ग्गागणेशाग्नीनाम् मायावच्छिन्नचैतन्यरूपत्वावगमात्तेषामीश्वरत्वं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri



निर्बाधमेवेतिनकाप्यनुपपत्तिः तेचोपनिषदादयोग्रंथविस्तरभियानलिखिताइतिबो
ध्यं किञ्चफलदर्शनंरोचनार्थमेवनतुतत्फलकाममात्रस्यप्रवृत्त्यर्थम् अतएववेदोक्तमे
वकुर्व्वाणोनिःसङ्गोऽर्पितमीश्वरे नैःष्कर्म्म्यांल्लभतेसिद्धिंरोचनार्थाफलश्रुतिरित्ये
कादशस्कन्धभागवततृतीयाध्यायेभिधानात् अत्रश्रीधरः रोचनार्था कर्म्मणिरुच्यु
त्पादनार्थाअगदपानेखण्डलड्डुकादिवत् यथापिताबालम्प्रतिब्रवीति पिबपुत्रौषधं
खण्डलड्डुकादींस्तेदास्यामीति तत्रनखण्डलड्डुकादिलाभोगदपानस्यफलम् अपितु
रोगनाशस्तद्वत् ततश्चकर्म्माभिरुच्यावेदार्थंविचारयति तथाच योवाएतदक्षरमवि



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दित्वागार्ग्यस्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः इत्यनात्मज्ञस्यकृपणतातमेतम्वेँदानुवचनेनब्रा ह्मणाविविदिषन्तिब्रह्मचर्य्येण तपसा श्रद्धयायज्ञेनानाशकेनचेति यज्ञादीनांज्ञानशे षताऽञ्चावधार्य्यनिष्कामेषुकर्म्मसुप्रवर्त्तते ततश्चस्वर्ग्गकामोऽश्वमेधेनयजेतेत्यादिभिः कामितस्यैव स्वर्ग्गादेःफलत्वेनावगमादकामितोऽसौनभवतीतिनैष्कर्म्यसिद्धिर्भव तीति अतएवभगवद्गीताष्टादशाध्याये एतान्यपितुकर्माणिसङ्गन्त्यक्त्वाफलानिच क र्त्तव्यानीतिमेपार्थनिश्चितम्मतमुत्तममिति अत्रसङ्गन्त्यक्त्वेत्यादेःसङ्गमहङ्करोमीति कर्तृत्वाभिनिवेशं फलानिचाऽभिसन्धीयमानानित्यक्त्वान्तःकरणशुद्धये कर्म्माणि क

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





र्त्तव्यानीतिमेमतम् अतएवहेपार्थकर्म्माधिकृतैः कर्म्माणित्याज्यानिनत्याज्यानिचेति
द्वयोर्म्मतयोर्न्नत्याज्यानीतिममनिश्चितम्मतमुत्तमंश्रेष्ठमित्यर्थः इतिमधुसूदनस्वामी
द्वादशेध्यायेपिअथैतदप्यशक्तोसिकर्त्तुम्मद्योगमाश्रितः सर्व्वकर्म्मफलत्यागंततःकु
रुयतात्मवान्इति अत्रश्रीधरः नशक्तोसितर्हिमद्योगंमदेकशरणन्त्वमाश्रितःसन्स
र्व्वेषान्दृष्टादृष्टानामावश्यकानाञ्चाग्निहोत्रादिकर्म्मणाम्फलेनियतचित्तोभूत्वापरित्य
जएतदुक्तंभवतिमयातावदीश्वराज्ञयायथाशक्तिकर्म्माणि कर्त्तव्यानिफलन्तावद्दृष्ट
मदृष्टंव्वा परमेश्वराधीनमित्येवम्मयिभावमारोप्यफलासक्तिंपरित्यज्यवर्त्तमानोम



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्त्प्रसादेनकृतार्थोभविष्यसीतितितात्पर्य्यमिति पञ्चमेऽध्यायेऽपि ब्रह्मण्याधायकर्म्माणि सङ्गन्त्यक्त्वाकरोतियः लिप्यतेनसपापेनपद्मपत्रमिवाम्भसेति अत्रानन्दगिरिःभृ त्यवदीश्वरार्थकर्मकरणाद्वानतत्फलभागित्वं यथाभृत्यःस्वाम्यर्थङ्कर्म्माणिकरोतिन फलमपेक्षते तथैवयोविद्वान्मोक्षेपिफलन्त्यक्त्वाभगवदर्थमेवसर्व्वाणिकर्म्माणिकरो तिनसकर्म्मणावद्ध्यते यथानाहिपद्मपत्रमम्भसासम्बध्यतेतद्वादित्यर्थइति फलस्य ब्रह्मणिसमर्प्पणाद्वानकर्म्मणांबन्धकत्वम् यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासि यत् यत्तपस्यसिकौन्तेयतत्कुरुष्वमदर्प्पणमिति नवमाध्यायोक्तेःअत्रशङ्करानन्दःशु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri





भाशुभफलैरिति एवमीश्वरार्प्पणबुद्ध्या वैदिकमवैदिकञ्च युक्तङ्कर्म्म कुर्व्वाण
स्त्वं शुभाशुभफलैःसुखदुःखप्रदैःस्वर्ग्गनरकहेतुभिर्व्वा कर्म्मबन्धनैः कर्म्माण्येवब
न्धनानितैर्म्मोक्ष्यसेमुक्तोभविष्यसि ननुकर्म्मण्येवाधिकारस्तइति नियतङ्कुरुक
र्म्मत्वमिति स्वधर्म्ममितिच विहितानामेवकर्मणाङ्कर्त्तव्यत्वविधानात् कथव्विंहिता
नामशुभफलत्वमितिचेन्न विहितानामनुष्ठानवैकल्येऽशुभफलहेतुत्वोपपत्तेः यस्या
ग्निहोत्रदर्शपौर्णमासचातुर्म्मास्यमनाग्रयणमतिथिवर्ज्जितञ्च अहुतमवैश्वदेवमवि
धिनाहुतमासप्तमाँस्तस्यलोकान्हिनस्तीति सवाग्वज्रोयजमानंहिनस्तीत्यादिश्रु



Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेः स्मृतेश्च मन्त्रतन्त्रस्वरवर्णद्रव्यकालादिनियमवैपरीत्येस्कन्नेभिन्नेचविहिताना
मप्यशुभफलकारित्वमुपपद्यतइतीतिदिक् ॥ श्रीगुणेश्वरसिंहेनमिथिलाधिपसूनुना
निर्म्मापितोऽभवत्पूर्णः पूजापङ्कजभास्करः॥१॥सूर्यैभास्यहुताशनस्यशिवयोःश्रीश
स्यचब्रह्मणः॥ पूजापङ्कजभास्करोयममलःप्रीत्यैचिरन्तिष्ठतुलोकानांशिशिरेहिमेच
मिहिरोभूसंस्थितानामिवयात्वेनाऽविँदुषांसदासुखकरंलक्ष्मीपतिःसद्गतिः२शाकेवेद
वियन्नागहिमांशुवलिते १८०४शुभे॥ पौषेसितेपञ्चदश्याङ्ग्रन्थोऽयंपूर्णतामगात् ३

॥ इतिपूजापङ्कजभास्करेविंशः प्रकाशः ॥ २० ॥ समाप्तोऽयंग्रंथः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

## सूचना.

मिथिलादेशान्तर्गतदरभङ्गाराजधानीस्थविविधबिरुदालीविराजमानमानोन्नत महाराजाधिराजश्रीश्रीमद्गुणेश्वरसिंहेन एतानि विद्वद्भिः कारितस्य पूजापङ्कजभास्करनामकस्य ग्रन्थस्य सहस्रसंख्याकानि पुस्तकानि आसन्नविद्वज्जनेभ्यः सकलसुहृद्भ्यश्च उपायनीकर्तुम् श्रीकृष्णदासात्मजगङ्गाविष्णुस्थापितवेंकटेश्वराख्यमुद्रणालये अङ्कयित्वा आविष्कृतानि, अस्य ग्रन्थस्य पुनर्मुद्रणाद्यधिकारश्च श्रीकृष्णदासात्मजाभ्याम् गङ्गाविष्णुखेमराजगुप्ताभ्याम् परोपकाराय अदायीति शम्.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ इति पूजापङ्कजभास्करः समाप्तः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu